

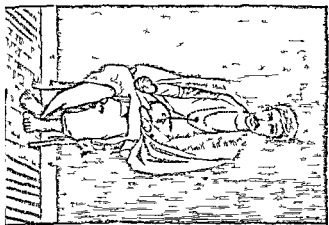


अथ अन्त्येष्टि श्राद्ध प्रकाशः

(भाषाटीका सहितः)

मृचना.

महाशय. यद्यपि विवाह पद्धति भापाटीकासहित अनेक जगह छपीहै परंतु किसीमें पाठ अधिकहै किसीमें न्यून और कोई देशभाषासे विरुद्धहै इस वास्ते हमने हमारे प्रियवर प. कृष्णलालजीके कहनेसं सरल हिंदी भाषामें यह चातुर्थी लाली नाम-दीकावनाईहै आर इसके छापनेका अधिकार प. कृष्णलालजीको दियाहै और यह ग्रथ परमोत्तम विद्यार्थियोंके पढ़नेमें आशा विद्वानोंके विवाह करानेके योग्यहै इसमें कोईभीपाठ निरर्थक नहींहै शास्त्रीय रीतिसं तथा लौकिकरीतिसं सुशोभितहै सो जि-



पंडित चतुर्थीलालजी वैद्य

महाशयोंको लेना होवेवे. प श्रीधरशिवलालजीके पुस्तकालयसे मंगालेवे आर इसी तरह श्राद्धप्रकाश. ग्रथ. श्रीवेकटेश्वर प्रेसमें यत्रस्थहै. यह विस्तारपूर्वक अति उत्तमताके साथ अनेक प्रथमोंसे सार लेके पूर्णकियाहै जिन महाशयोंके पासरहेंगा उनको अति उपयोगी होगा. वहभी मने अति श्रमसे बनाया है विद्वद्वरोंने अवलोकन करके इसकी बहुत प्रसंसा की है सो यह ग्रथ छपरहा है सो ६ मासमें अर्थात् काती शुक्ल १५ स १९५५ तकछपके तैयार हो जायगा.

पं० चतुर्थीलाल वैद्य रतनगढ

विज्ञापनम् । (अवश्यदेखिये)

महाशय यह "अन्त्येष्टिकर्म" इसी यंत्रालयमें प्रथम छपा था. सो सब स्वप गया, फिर द्वितीयावृत्ति छापनेके विचारसे पंडित श्रीधर शिवलालात्मज श्रीकृष्णलालजीने हमको अति शुद्धतापूर्वक भापाटीका बनानेके अर्थ भेजी सो हमने प्रसन्नतासे अंगीकार करके मनोहर देश भाषा युक्त करी है । परंतु प्रथमावृत्तिमें मैथिल रुद्रधर कृत श्राद्धविवेककी पद्धतियां रक्खी गईथी सो गौड संप्रदायके योग्य नहीं होनेसे हमने अब प्राचीन पद्धति रक्खी है और श्राद्धविवेककी पद्धतियोंमें संप्रदाय तथा महानिबंधोंसे विरुद्धता है सो देखिये

१ प्रथमतो (शव) मुर्देको उलटा नीचेको मुख करके जलाना लिखा है सो क्या आपकी संप्रदाय है

२ दूसरें. मरण समयमें मृत्यु स्थान आदिका पंच पिंड देना नाहि लिखा सो क्या योग्यहै .

३ तीसरें. दाहके अनंतर जलांजली मोटक रूप दर्भासे लिखा सो प्रमाण शून्य है (उक्तंच हेमाद्रि विष्णु वायुपुराण कारिका गारुडेयु सर्पिंडीकरण यावदृष्टुर्भः पितृक्रिया सर्पिंडी करणादूर्ध्वं द्विगुणविधिवद्भवेदिति)

४ चौथे. अस्थिसंचयनिमित्तकोद्विष्टसमंत्रक लिखना (उक्तंच हेमाद्रि आदित्यपुराण गारुडेयु । तिलमिश्रेषुदर्भेषु कर्त्तव्येदक्षिणामखः । नामगोत्रप्रमाणेनद्यात्पिंडं त्वमंत्रकं १ तूष्णीं धूपं प्रसेकंच दीपं पुष्पं तथैवच । अशुद्धस्त्रिषु वर्षेषु इदं दद्यान्नसंशयः २)

५ पांचवें. प्रेतश्राद्धोंमें अस्मत्पितः अस्मत्पितुः इत्यादि स्वसंबंध और पुरुषसूक्तादिजप, पृथिवीते इत्यादिपात्रालंभः, अंगुष्ठनिवेशन, उल्लुक्त्रामण, रेखाकरण, अग्निदग्धा इत्यादि बहुतसे कर्म लिखे हैं; परंतु शास्त्र विरुद्ध है (उक्तंच हेमाद्रि विष्णु वायुपुराण निर्णयसिंधु गारुडेयु. आशिषोद्दिगुणाद्भोजपाशीः स्वस्तिवाचनं । पितृशब्दः स्वसंबंधः शर्मशब्दस्तथैवच १ आवाहः पात्रालंभश्च उल्लुको लैखनादिकं । वृषिप्रशश्चविकिरः शेषप्रशस्त्यैवच २ प्रदक्षिणविसर्गश्च सीमांतगमनं तथा । अष्टादश पदार्थास्तु प्रेत श्राद्धेषुवर्जयेत् ३ इति)

६ छठे. वृषोत्सर्गमें वृषांक न कियासो क्या आपकी संप्रदायका है

७ सातवें. सर्पिंडीकरण श्राद्धमें अर्घ्यपात्रमेलन किया सो रीति क्या कोई ग्रंथके प्रमाणसे है

८ आठवें. पिंडमेलनके अनंतर दक्षिणादान आदिमें प्रेत शब्द उच्चारण करना लिखा सो क्या योग्य है

इत्यादि बहुतसीवातें स्मृति, पुराण, सूत्र, हेमाद्रिप्रभृति महा निबंध और संप्रदाय विरुद्ध है अतएव हमने प्राचीन पद्धति “श्राद्धप्रकाश” नाम गौडनिबंधकी रक्खी है सो आपलोग देखके कृतार्थ करेंगे अलम्

आपका कृपाभिलाषी

पंडित वैद्य श्रीचतुर्थीलाल गौड रत्नगढ निवासी

राजश्री बीकानेर

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथ भाषाभाषार्थं लिख्यते ॥ प्रथम पुत्रपौत्र भाई आदि अपने पिता माता भाई दादे आदिका रोगआदिद्वारा मृत्युके बगहवा जाणके (पडब्दादि) अर्थात् छ वर्ष ६ या ३ या १॥वर्ष आदिके १८०।९०।४५। प्राजापत्यव्रतनिमित्त १०००० गायत्रीजप। या १००० गायत्री मंत्र करके तिलहोमः। तीर्थयात्रा। अथवा एक २ व्रत-

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ श्राद्धप्रकाशान्तर्गतं प्रेततृप्तिकरपद्धतिकल्पमुच्यते। तत्रतावत् पुत्रादिरासन्नमृत्युपित्रादिकं ज्ञात्वापडब्दादिप्रायश्चित्तप्रत्याम्नाय गायत्र्यानुतजपं वा गायत्र्या तिलहोमसहस्रं धेनुदानं तीर्थयात्रा वा द्वादशब्राह्मणभोजनं सुवर्णरूप्ययोर्निष्कं तदर्द्धं वा गोवृषमूल्यं यथाशक्त्यनुरूपं प्रायश्चित्तं तद्वारा कारयेत्। तदऽशक्तौ स्वयं वा कुर्वीत्। तद्यथा। गंगादितीर्थं गत्वा तत्र यथाविधि स्नात्वा शुद्धे शुक्रवाससी परिधाय बद्धशिल्बः

निमित्त १२ द्वात्र्यण भोजन ॥ या ४०।२०।१०। मासासुवर्णं। रजत। या गौ वृषमृगामोल अपनी शक्तिके मुजब संकल्प करके पिता आदिके हाथसे प्रायश्चित्त करावे अथवा आपकर देवे-(करणकी विधि लिखते हैं) प्रथम गंगा आदि तीर्थसे जातेस्नान करे और धोया हुवा श्वेत वस्त्र पहरेके चोटीके गांठ देवे और भस्म चंदन दर्भ पवित्र धारण करके पूर्वको मुख

किया हुआ तीन घेर आचमन करे और प्राणायाम करके देश काल आदिक उच्चारण पूर्वक प्रायश्चित्त सकल्प लेके पुरुषमूक्तसे अगन्यास और विष्णु पूजन षोडशोपचारसे करे। फिर सकल्प लेवे और कहे की मैंने जन्मसे लेके आज दिनतक जो जानके या अनजाने किया। कामसे या वेकामसे। एकघेर या भोतवेर। काया (शरीर) जवान मन। स-

कृततिलकः सपवित्रकरः पूर्वाभिमुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य। मम सकलपातकनिवृत्तिकामो विष्णुपूजनपूर्वकं देहशुद्धयर्थं प्रायश्चित्तमहं कारिष्ये। इतिसंकल्प्य। सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिना देहन्यासं कृत्वा पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः श्रीविष्णुं संपूज्य विप्रपूजां कुर्यात्। पुनः देशकालाद्युच्चार्य ओं अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताऽज्ञात कामाऽकाम सकृदऽसकृत् कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टाऽस्पृष्ट श्रुक्ताऽश्रुक्त पीताऽपीत महापातकोपपातकसंकली

गत करके। स्पर्शसे या अस्पर्शसे। खाने योग्यसे या निषेधसे पीने योग्यसे या नहि पीने योग्यसे। और (महापातक) अर्थात् ब्रह्महत्या मदिरापान सुवर्णकी चोरी। गुरुकी स्त्रोसे भोग। इन पाप करनेवालोंकी संगत। यह पाच महा हत्या है।

(उपपातक) गोवध । द्विज होंके यज्ञोपवीत नहि लेना । चोरी करना । करजा नहि देना । अग्निहोत्र वैश्वदेवादि नहि करना इत्यादि उपपातकहे । (सकलीकरण, स्वर, अश्व, ऊंट, हिरण, हाथी, बकरा, भेड, मछि, भैंसा आदिका मारणा, (मलिनीकरण, कृमी, कीडे, पक्षी आदिका मारणा. (अपात्री करण) नीचोंको घन देणा, वणिज, शूद्रसेवा आदि. (जातिभ्रश)

करण मलिनीकरणाऽपात्रीकरण जातिभ्रंशीकरण प्रकीर्णानां सकलपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकप्रायश्चित्तं अमुकप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति यथाकालं करिष्ये इति संकल्प्य । षडब्दादिप्रत्याम्नायं पूर्वोक्तं प्रायश्चित्तं कुर्व्यात् । अस्मिन्नादिने उपवासः । अशक्तस्य हविष्यान्नेन नक्तव्रतं । अथ दशदानानि । गोभूतिलिहिरण्याज्यवासो धान्य गुडानि च । रौष्यं लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ १ ॥ एतानि दशदानानि विप्रेभ्यो दद्यात् ।

द्वगाई पुरुयसे सग मदिराको गध आदि सपूर्ण पापेके दूर होनेके अर्थ पूर्वोक्त अमुक प्रायश्चित्त कंस्ताहु । फिर उपवास व्रत या नक्त व्रत करेके गौ १ पृथिव २ तिल ३ सुवर्ण ४ घृत ५ वस्त्र ६ अन्न ७ गुड ८ चादी ९ लवण १०

यह दश दान करें। यह दश दान ब्राह्मणोंको देवे। यदि दरिद्री होवे तो तीर्थयात्रा, जप, पाठ आदि करे। फिर (वैतरणी धेनु दान करें) सोलह १६ सेर रुईरू पर्वत करके उसमें ताम्रके पात्रमें सुवर्णकी यम प्रतिमा (मूर्ति) रखे, और गधादिकों करके पूजन करे। फिर ईसकी नाव बणाके रसमें बाधे, और एक पानीसे भरे होये गढमें रख देवे। फिर उसमें काली निर्वनश्रेतीर्थयात्रादि कुर्यात्। ततोवैतरणीधेनुदानम्। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मम यमद्वारस्थिताया वैतरणीनद्याः सुखोत्तारणार्थं वैतरणी धेनुदानं करिष्ये इति संकल्प्य। द्रोणप्रमाणकार्पासशिखरोपरि ताम्रपात्रे हैमं यमं स्थाप्य। सम्पूज्य। तत्रेक्षुदण्डमयीं नौकां पटसूत्रेण बन्धा। तत्रस्थां कृष्णां धेनुं सवत्सां संपूज्य। ब्राह्मणं वृत्वा। संपूज्य। प्राङ्मुखो गोपुच्छं सतिलजलयुतं गृहीत्वा। देशकालौसंकीर्त्य। अमुक गोत्रोऽमुकशर्माहं वैतरणीत रणार्थमिमां गां सवत्सां सुवर्णशृंग रौप्यसुर कांस्य दोहन कृष्णवस्त्रयुग सप्तधान्य छत्रो गौ, बछडा खडा करके चदन, पुष्प, धूप आदिसे पूजा करे; और ब्राह्मणको वर्णन करके, गौका पुछ, जल, तिल, दर्भा, दक्षिण हाथमें लेवे और देना काल आदिका उच्चारण पूर्वक सकल्पसे वैतरणी नदीके तिरणेंके अर्थसुवर्णशृंग, चादीके सुर,

चांसिका रुद्ररा, इरणेका पात्र, कालावल्ल, सप्तधान, छाता, जुता इत्यादि सामग्री; और बछडे सहित ब्राह्मणको देवें
 (स्वनि) पूंमें ब्राह्मणसे कुहा लेंवें। पश्चात् (ओं यमदारे० विष्णुरूप०) यह २ मंत्र पढके प्रार्थना करे; और दान प्रतिष्ठाके
 पानहाद्युपस्करयुतां अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । इत्युक्त्वा वि
 प्रहरते जलं क्षिप्त्वा । मंत्रो पठेत् । ॐ यमदारे महावारे कष्टां वैतरणीं नदीं । तत्सुकामो
 ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं च गां ॥ १ ॥ विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ भूदेव पंक्तिपावन । सदक्षिणा
 मया तुभ्यं दत्ता वैतरणी च गौः ॥ इति प्रार्थ्ये । ॐ अद्य कृतैतच्छ्रेनुदानप्रतिष्ठासिद्धर्थमिदं
 हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । इति सुवर्णदक्षिणां
 यमं च सर्वं निवेद्य नमस्कृत्य प्रदक्षिणां कुर्यात् । ततः-ॐ धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमदारे महा
 भये । उत्तितीप्सुरहं देवि वैतरण्यै नमोनमः । इत्यनुगत्वा विसृजेत् । स्वयमशक्तौ पुत्रादि

अर्थ पुराण दक्षिणा देके, यमकी मूर्ति, रुई आदि संपूर्ण ब्राह्मणको अपर्ण कर देंवें। और परिक्रमा देके (ॐ धेनुकेत्वं)
 इस मंत्रमें ब्राह्मणके छेर दश १० या ५ पर मेलके विसर्जन करे। यदि आपसे नहि होवे, तो पुत्र, पौत्र, भाई आदिके

द्वारा यहै वैतरणी धेनुदान करावै. इति वैतरणी धेनु दानम् । (अथ महादानं) तिल १ लोह २ सुवर्ण ३ रुई ४ लूण ५ अन्न ६ पृथ्वी ७ गो ८ यहै आठ महादान है । सो शक्तिके मुजब आपणे अगाडी रखके, उपर लिखे

द्वारा वा कारयेत् । इति वैतरणी धेनुदानम् ॥ अथ महाष्टौ दानाति ॥ तिला लोहं हिरण्यं च कार्पासं लवणं तथा । सप्तधान्यं क्षितिर्गावो महादानानि चाष्टवै ॥ १ ॥ तत्रविधिः । देशकालौ संकीर्त्य । असुकगोत्रोऽसुकशर्माहं इमानि तिलादीन्यष्टौ महादानानि सोमादि देवतानि सदक्षिणाकानि तत्तत्प्रदानं फलाप्तये श्रीविष्णोः प्रीतये नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽहं सप्तददे । इति संकल्प्य दद्यात् । ततः शक्तौ सत्यां तिलपूर्णताम्रपात्रं मोक्षधेनुं ऋणधेनुं पापधेनुं उक्त्वा तधेनुं च दद्यात् । दुर्मरणमृते तन्निमित्तकं प्रायश्चित्तं संकल्प्य सूतका

होये संकल्पसे ब्राह्मणोंको दे-देवै । यदि सामर्थ्य होवे तो-तिलोंसे भर-हुवा तयिका कलश १ मोक्षधेनु २ ऋणधेनु ३ पापधेनु ४ उक्त्वा तधेनु ५ इत्यादि दान-करै । और यदि दुर्मरण- अर्थात् अग्नि, जल, विप,

फासी आदिसे मरा होवे' तो प्रायश्चित्त संकल्प करके सूतकके अंतमें 'कर देवे । (अथ दाहादिकर्म) प्रथम तो मरणके पहिलेही गोमयका लेपा देवै । और तहां तिल, कुशा, ऊनके वस्त्र आदि विछाके उसमें बैठे; अथवा सोवे. और विष्णुका स्मरण. (ईशावास्यं) सहिताके अंत्यकी १ अध्याय (पुरुषसूक्त) सहस्रशीर्षी. उपनिषद्, श्रीम-

न्ते कुर्यात् ॥ ॥ अथ दाहादिकर्म ॥ तावत् आसन्नमरणे गोमयोपलिप्तभूमौ तिलकुश
ऊर्णवस्त्रादियुतायां उपविष्टो दक्षिणाशिरः शायितो वा श्रीविष्णुं स्मरन् । ईशावास्यं ।
पुरुषसूक्त-उपनीषद्भागवतानि । ॐ मिल्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहृन्मामनुस्मरनित्यादि गीता. वि
ष्णुसहस्रनामादीनि पुण्यस्तोत्राणि च पठेत् शृणुयाद्वा । श्रीरामकृष्णसूक्तनामजपं स्म
रणं च कुर्यात् ॥ ततः प्राणोत्क्रमणसमये पुत्राद्यधिकारी गंद्वादितीर्थसर्गापे अथवा स्व

द्रागवत, गीता, विष्णुसहस्रनाम आदि पुण्य स्तोत्रोंका पाठ करे. और श्रीराम, कृष्ण, माधव, गोविंद इत्यादि हरिको
नाम जपे, तथा उच्चारण करे, या सुने । फिर प्राणनिकलनेके वक्त पुत्र, पौत्र आदि गंगा, पुष्कर, काशी आदि तीर्थमें

अथवा अपने घरमेंही तुलसी, शालिग्रामके समीप ले जाके गोमय, जलसे लिपी होई भूमिमें । गंगा जलसे या तर्जनी कूपके जलसे स्नान करावे । और नवीन घोया हुआ सुपेद वस्त्र अगोछा पहारके यज्ञोपवीत, पुष्पमाला, रुद्राक्ष, आवला, तुलसीपत्र आदिसे सुशोभित करे । और चन्दन, गंगा, मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिका लेपन कर देवे । पश्चात्

गृहे तुलसी शालिग्राम समीपे गोमयोपलिप्तायां भूमौ गङ्गोदकादि शुद्धजलेन संस्नाप्य
अहत शुक्ल धौत वाससी परिधाप्य यज्ञोपवीत पुष्पमाला स्त्राक्ष धात्री तुलसीपत्राद्यैरल
ङ्कृत्य चन्दन गंगामृत्तिकादिनाऽशुलेपयेत् । ततः पुत्रादिस्वोत्संगस्थापितशिरसः अपंग
तप्राणस्य मुखे नासिकाद्वये चक्षुद्वये श्रोत्रद्वयेच पंचरत्नानि । तदभावेधृतविन्दून् वाक्षि
प्त्वा । दर्भवत्यां भूमौ तिलान् विकीर्य । तत्र उदक् शिरसं स्वापयेत् ॥ अथ प्राणोत्क्रमणा

पुत्र अपनी गोदीमें शिर स्थापन करके प्राण जानके बाद मुख दोनों नाकोमें तथा २ नेत्र २ कानों में पंचरत्न अथवा
सुगर्ग या धृतके टपके गरे और तिल दर्भा बिछाई हुई भूमिमें उचरकों मस्तक करके सुवादेवे । पश्चात् प्राण जानके

अन्तर उयेप्र पुत्र तथा कनिष्ठ पुत्र, भाई आदि अधिकारी सर्वहि दक्षिणको मुख करके अपने नख, काख, लिंग त्यागके संपूर्ण लोम कटादेवे. अर्थात् मुंडन होजावे । अथवा कर्त्ताकेबिगर कनिष्ठ पुत्र आदि द्वाभे दिन मुंडन होवे परतु देवा कुलव्याहाराको न छोडे । फिर मुंडन होनेकेबाद संपूर्णहि ताजा शुद्धजलसे स्नानकरे. और नयीन घोयाहु

नन्तरं कर्त्ताऽन्येच कनिष्ठपुत्रादयो दक्षिणमुखाः स्वनखकक्षोपस्थ वर्ज्ज लोमानि वापयेयुः
 (कर्त्तुव्यतिरिक्तानां दशमदिने वा वपनम्) । ततो वपनाऽनन्तरं सर्वे स्नात्वा अहते वाससी
 परिधाय गताऽसुं घृतेनाभ्यज्य । मयादीनिच तीर्थानि येच पुण्याः शिलोच्चयाः । कुरुक्षेत्रं च
 गंगाच यमुनांच सरिद्धराम् ॥ कौशिकीं चंद्रभागांच सर्वे पापप्रणाशिनीम् । भद्रावकाशां श
 र्पूं गण्डकीं चमसां तथा ॥ वैष्णवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा । पृथिव्यां यानि ती
 र्थानि चतुरः सागरांस्तथा । एतानि मनसा ध्यायन् । जले सर्वतीर्थान्यावाह्य ॥ तेन जले

यावत्त धारणकरके मृतकको घृतसे चिकणकरे । और (गयादीनिच तीर्थानि) इत्यादि मंत्रों करके तामे आदिपात्रमे जलको अभिमंत्रण करके उसी जलसे मूर्देको अच्छि तरे स्नान करावेवे । फिर शुद्ध वस्त्र पहारके गंगाजलसे मिलेहोये

चंदनका तिलक करे । और संपूर्ण अङ्गमें प्रोक्षण करे । पश्चात् पुष्पादिकों करके सुशोभित शवकों शुद्ध स्थानमें बणाई होई उचमं चितामें कुशाके ऊपर सूया स्थापन कर देवे । और पिंड दानकरे । पुत्र, पौत्रादि मृतकोंके दक्षिण तरफ दक्षिणकों मुख करके बेटे । और अपसव्य होके कुशात्रय, जल, तिल दाहणे हाथमें लेवे । फिर मृतकका गोत्र, नाम उच्चारण न शवं संस्नाप्य अहत वस्त्रपरिधानं गंगोदकमिश्रितचन्दनादिनां सर्वांगप्रोक्षणम् पुष्परत्नं करणंच कृत्वा । शुचिदेशे विहित काष्ठरचितं चितायामास्तीर्णं कुशायामुत्तानं शवं स्थापयेत् ॥ अथ पिंडप्रयोगः । पुत्रादिमृतदक्षिणपार्श्वे दक्षिणाभिमुख उपविश्य । अपसव्येन (देशका ली संकीर्त्ये) अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्या उत्तमलोकप्राप्त्यर्थमौर्ध्वदैहिकं करिष्ये । इत्युक्त्वा । दक्षिणाग्रं कुशात्रयमास्तीर्य्य । अद्यामुकगोत्रामुकप्रेताऽन्नावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठामित्यवनेज्य पिंडमादाय । अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत मृतिस्थाने करके संकल्प छोडे । और दक्षिणकों अग्रभाग करके कुशात्रय रत्ने । फिर उसमें अवनेजन देके प्रेतका गोत्र, नाम लेके दर्भापर मृतिस्थान निमित्तक प्रथम पिंड दे देवे । और प्रत्यवनेजन अर्थात् पिंडमें जल छोडके पिंडको प्रेतके वस्त्रमें रत्ने ।

फिर प्रेतको द्वारपर लियावे और वहांभी पहलेंकी तरह कुशत्रय अबनेजन देके एक पिंड द्वारनिमित्तक दे देंवे । पश्चात्
संपूर्ण पुत्र, भाई आदि अपसव्य होके केशखुला होया बालकोको अगाडी करके मद्यी आदि स्थालीमें कुलपरंपराविहित

शवनिमित्त (ब्रह्मदेवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता इत्येकं पिंडं प्रत्यवने
जनं च दत्त्वा प्रेतवस्त्रे पिंडं बंध्वा गृहद्वारानयेत् । तत्र पूर्ववत्कुशास्तरणमवनेजनं च दत्त्वा ।
अद्यासुकगोत्र असुकप्रेत द्वारदेशे पांथनिमित्त (विष्णुदेवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते
तवोपतिष्ठतामिति पिंडं दद्यात् ॥ अथानंतरं सर्वे पुत्राऽनुजादयश्च कृतापसव्या मुक्तकेशा
बालपुरःसराः मृन्मथ्यादिस्थालीस्थं यथाचारं लौकिकाग्निं यवचूर्णकृतपिंडादिकं च गृहीत्वा
यमगाथां गायंतो यमसूक्तं वा जपंतः शवं प्रच्छादितमुखं प्राक्शिरसमूर्ध्वमुखमरण्ये स्मशा

अग्नि तथा यवचूर्णकृत पिंड आदि लेके यम गाथाको गते होयें, बखसैं ढके हुवे, मृतकको अगाडी शिर करके, ग्राम या
नगरके बाहर जंगलमें श्मशान भूमिके प्रति ले जावे । पश्चात् चत्वार (चोहरावेमें) खेचर निमित्त पिंडदान करके, ग्राम

और श्मशानके बीच निशाम पिंड नीगरा-भूत नाम करके दे दे। फिर संपूर्ण बांधव व वरहित होय हुवे अर्थात् जनके
 रात्रि गारके बुड़े आदि प्रेनके रेश गमन करे। और मरे होये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यको द्विजके सडे हुये शूद्र नहि उवाये।
 नदेशं प्रतिनेयुः। (अथ चत्वरे खेचरनिमित्तपिंडदानं। तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणभवने
 जनं च कृत्वा। अमुकगोत्र अमुकप्रेन चत्वरे खेचरनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोप
 निष्ठाभिति पिंडं प्रत्यवनेजनं च दद्यात्) एवमेव ग्रामश्मशानयोर्मध्ये। विश्रामे। अमुक
 गोत्र अमुकप्रेत चित्रांतो भूतनाम्ना (स्त्रदेवतोवा) एषते पिंडो मया दीयते० इति विश्राम
 पिंडदद्यात्। ततः सर्वे बांधवा अप्रावणा वृद्धादयश्च प्रेतमनुगच्छेयुः ॥ मृतं द्विजं सजा
 तीयेषु निष्ठसु न शूद्रानयेयुः। न मृतं शूद्रं द्विजाश्च। द्विज संस्कारोपयुक्त अशितृणकाष्ठ
 घृतादि शूद्रादिभिर्नयनं निषिद्धम् ॥ द्विजशवं शूद्रो न स्पृशेत् (स्वग्रहे मृते ब्राह्मणो नगरप
 तथा मरे होये शूद्रको द्विज नही उवाये। ब्राह्मणादि कोके अप्रि, नृण, काष्ठ, घृत आदि वस्तुं शूद्रादिक नहि लेवे। और शबको

१ नर गमनयनिशूरोऽग्निपृच्छात्तत्तत्तद्व्यवहारोपि। प्रेनश्चैहिमदानस्यपचा र्भेणहिप्यनइतिग्रामस्मरणान्-

शूद्र कदापि स्पर्श नहि करे । ब्राह्मणको नगरके पश्चिम द्वारसे । क्षत्रियको उत्तरसे । वैश्यको पूर्वसे । शूद्रको दक्षिण द्वार
 करके बाहर ले जावे । पश्चात् इमशान देशमें जाके शुद्ध जगे शनैसे दक्षिणको शिर करके स्थापन कर देवे; ओर चिता
 श्रिमद्वारेण । क्षत्रियः उत्तरेण । वैश्यः पूर्वेण । शूद्रो दक्षिणेन द्वारेण नेयः ॥ अथ इमशानदेशं
 प्राप्य शुचिदेशे शनैर्दक्षिणशिरसं शवं स्थापयेत् । ततश्चितास्थाने वायुनाम्ना पिंडदानम्
 तत्रादौ कुशत्रयं घृत्वा । अवनेज्या पिंडमादाय । अमुकगोत्रं अमुकप्रेतं चितास्थाने वायु
 निभित्त (यमदैवतोवा) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति पिंडं दत्वां प्रत्यवने
 जनं च दद्यात् । ततः खननसंहावनादिभिः शोधनोपायैर्भूमिं संशोध्य । गोमयोदकेन
 प्रोक्ष्य तत्र (अयोध्या मथुरा मांया काशीकांचीअवंतिका । पुरीद्वारावती चिति संस्रता मो
 क्षदायका इति दर्भैर्लिखित्वा वा मनसा ध्यात्वा संपूज्य तदुपरि कुशतिलानास्तीर्थ्य । तत्र
 स्थानमें वायु नाम करके चोर्था पिंडदान करे । पश्चात् भूमिको खोदके जलसे तरकरे । ओर शुद्धि संपर्दान करके गोबर तथा
 जलको लेप देवे । फिर तहां अयोध्या ६ मथुरा २ मांया ३ काशी ४ अवंतिका ५ द्वारका ६ कांची ७ यहै सात पुरी—दर्भा

करके शिमे; और गंध, पुष्प आदिसे पूजनके नर्मा, तेल विरारण करे। पश्चात् उसमें चंदन अगर देखा, शमी आदि गन्ध काष्ठों और नारेल, क्लिन् आदि फलसिं द्वादेके योग्य दक्षिण उचार लंबा संचय करके; जल, करसे प्रौक्षण करे। फिर दक्षिणतो गिर और उत्तरको पर स्तके मूया रत्नरहित मृतरुको चितापे स्थापन कर देवे। और थोडा बल फाडके चंदनादियत्नीयकाष्ठेः श्रीफलादिभिश्च दहनपर्याप्तं दक्षिणोत्तरायतं दारुचयं कारयेत् । तत अत्रिताकाष्ठं जलेन प्रोक्ष्य । तत्र दक्षिणगिरसं सवस्त्रमुत्तानमुखं शवं चित्तो निदध्यात् । किं चिद्रश्त्रं अगानवासिने दद्यात् । ततः शिरःप्रदेशे गुच्छभूमौ स्थंडिलं कृत्वा । पंच भूसंस्कारानुसंध्याद्य । तत्र कव्याद संज्ञकमग्निं प्रज्वाल्य । कव्यादायनम इति गंधमाल्यादिभिः संस्मगानवासि मनुयको दे देते । अथा अलग बोर्ड दरसन आदिपे स्त देते। पश्चात् मृतकके गिराकी तरफ स्थंडिलं शुद्ध पदिकापे रत्नके (पंचभूमस्कार) अर्पित् दर्भसिंभारे गोरामं लेपन करे और बीचमें काष्ठ करके तीन रेखा करे। फिर अग्ने प्रोभज करके कव्यादानप मप्रियो स्थापन कर देते। और (कव्यादायनम) इस मंत्रसे गंध, पुष्पादिकोसे पूजन

। नक्षत्रेण चित्तं चिदिनिर्दिष्टेति प्रनेन्याप्युक्तान् । शरान्निदेशेभ्यश्चानवास्वपेदेयपरित्यजेद्विष्मयम् ।

करके प्रदक्षिणा करे। और (त्वंभूतभृत्) इस मंत्रसे प्रार्थना करे। (मंत्रार्थ) हे अग्ने (त्वं) आप (भूतभृत्) जीव प्रा-
 षियोंको धारण करते हो (त्वंजगद्योनिः)—आपहि जगतका योनि (उत्पत्ति) स्थान हो (त्वंभूतपरिपालकः) आपहि
 पूज्य। प्रदक्षिणां कृत्वा। त्वं भूतभृजगद्योनिस्त्वं भूतपरिपालकः। मृतः संसारिकस्तस्मादेनं
 त्वं स्वर्गतिं नय इति प्रार्थ्ये। लोमभ्य इत्याद्यनुवाक्येन आज्यहोमं कुर्यात्। लोमभ्यः
 स्वाहा १ त्वचेस्वाहा २ लोहिताय ३ मेदोभ्य ४ मांसिभ्य ५ स्नायुभ्य ६ अस्थिभ्य ७
 मज्जाभ्य ८ रेतसे ९ पायवे १० आयासाय ११ प्रायासाय १२ संयासाय १३ वियासाय १४
 उद्यासाय १५ शुचे १६ शोचते १७ शोचमानाय १८ शोकाय १९ तपसे २०
 तप्यते २१ तप्यमानाय २२ तप्ताय २३ घर्माय २४ निष्कृत्यै २५ प्रायश्चित्त्यै २६
 भेषजाय २७ यमाय २८ अंतकाय २९ मृत्यवे ३० ब्रह्मणे ३१ ब्रह्महत्यायै ३२
 जीवोंकी पालना करते हो. सो (तस्मात्) इसवास्ते (मृतःसंसारिकः) मरा होया यो संसारी जीव (एनं) इसको
 (त्वं) आप (स्वर्गी) स्वर्ग लोकको (नय) प्राप्त करो। पश्चात् धृतसे (लोमभ्य) इत्यादि मंत्रों करके ३४ आहुति

देके शानके हाथमें साधक नाम पिंड देवे । और (हे प्रेत. तुमारे हाथमें साधक निमित्त यह पिंड देताहूँ सो आर्पको प्राप्त होवो) यह उच्चारण करके संकल्पका जल छोड देवे । फिर पुत्र, पौत्र आदि कुलपरंपराके अनुसार बहोतसा तृण, दर्भा विश्वेभ्योदेवेभ्यः ० ३३ द्यावापृथिवीभ्यां ० ३४ इत्याज्याहुतीहुत्वा) शवहस्ते साधकनाम्ना पिंड दद्यात् ॥ तद्यथा । अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत शवहस्ते साधकनिमित्त (प्रेतदेवतोवां) एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठामिति दद्यात् । ततोऽपसव्येन एव पुत्राः प्रौत्राश्च यथा चारं बहूलतृणान् गृहीत्वा अग्नौ प्रज्वाल्य । प्रदक्षिणं परिक्रम्यं । मंत्रद्वयेन शिरःस्थाने अग्नि दद्यात् । तत्र मंत्रौ । कृत्वातुदुष्कृतं कर्म जानतावाप्यजानता । मृत्युकालवशं प्राप्यनरं पंचत्वे भागतं १ धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतं । दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् संगच्छतु २ (ततोगाढरोदनं करोति) ततः पूर्णे दग्धे वाऽर्धे दग्धे सति शवमस्तकं कंठेन भित्वा । आदि अग्निमें जलके परित्रमा देता हुवा (कृत्वातुदुष्कृतं कर्म. १ धर्माधर्मसमायुक्त. २) इर्ण दो २ मंत्रोकरके मस्तकके पास अग्नि लगा देवे (इस समयमें पुत्रकी रुदन करणा चाहिये) फिर संपूर्ण. —या आया दग्ध हुवां प्रेतकी जोणके उत्स-

का मस्तक काष्ठसे भेदन करके (अस्मात्वमधि.) इस मंत्रसे फूटे होये मस्तकमें तिल सहित घृतकी आहुति दिये । फिर जलसे भरा हुवा कुंभ लेके परोंसे चारों तरफ तीन्वैर भ्रमाकर कुलपरंपरासे पत्थर करके फोडे । और, इमशान की तरफ नहि देखता होया बालकोंको अगाडी करके स्नानके वास्ते नदी, तलाव, कूपआदिपे जावे । और जलके

अस्मात्वमधिजातोसि त्वदयंजायतांपुनः । असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहाज्वलतु पावकः॥१॥

इति तिलमिश्रितामाज्याहुतिदद्यात् ॥ (ततः सजलं कुंभमादाय पादतोऽप्रदक्षिणं त्रिः प
रिक्रम्य यथाचारं अश्मना कुंभं भित्वा) अनवेक्षमाणाः कनिष्ठपूर्वाः स्नानार्थं नद्यादिके
गच्छेयुः । तत्रोदकसमीपं गत्वा परिहितवस्त्रं प्रक्षाल्य तदेव परिधाय समीपस्थं श्यालकं अन्यं
वा उदकं करिष्यामहे । इत्युदकं याचेत् । कुरुच्वमिति प्रयुक्ते पुत्रादयः सपिंडाः समानो
दकाश्च यथावृद्धमुदकं प्रविश्य । एकवस्त्राः प्रकीर्णकेशाः प्राचीनावीतिनः वामनामिकया

समीप जाके धारन किये होये वस्त्रको प्रक्षालन करे । फिर उसीको पहरेके समीप सडा हुवा शाला या अन्य कोई संबधिको पुछेकी जलदान करताहु (करो) यह कहणे के बाद पुत्र, पौत्र, भाई, सपिंड, कुलवाले

संपूर्ण हि जलमें प्रवेश होके; एक दमकी धारण किया हुआ, केश खोलके, अपसव्य आदिसे वाम हाथकी प्रनामिकासे (अथनः शोशुचदध) इससे जलको आलोडन करे और दक्षिणको मुख करके एक घेर जलमें धार कीगाने परंतु अंग नहि मसले पश्चात् घोती, साफा, धारण करके आचमन करे. और जलमें या पत्यरपै शुद्ध

अपनः शोशुचदधमिति जलमालोढय दक्षिणमुखाः सहन्निमज्जेयुः अंगं च नविधर्षेयुः ।
ततोद्विवासस आचम्य । जले पापाणपृष्ठे वा शुचितीरदेशे वा दक्षिणाग्रकुशत्रयोपरि ऋच्छु
दर्भपूर्णाञ्जलिना पितृतीर्थेन । प्रेतमुद्दिश्य । अधामुकगोत्र असुकप्रेत एष तिलतोयांज
लिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति सर्वे एकेकमंजलिं तिस्रो दश वा निषिंचेयुः । गोत्र
स्त्रियोपि दद्युः (इयं जलदानक्रिया दशमपुरुषपर्यंतं कर्तव्या । समानग्रामवासे यावद्दास

जगे दक्षिणको अग्र भाग करके त्रिकुश स्ते, और तिल, जलसे अंजली भरके सीपी दर्मा करके पितृतीर्थ अर्थात् दाहणे मंगुडेके नीचेमें प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके एक या तीन या दश अंजली दान करे। और स्त्रियांभी अजली देवे। यदि अजली दान दशभिर्दत्तक करणा चाये। और एक ग्राम एक वासके संबंधवालेभी अंजली देवे। स्वशुर,

मातामह (नाना) मातुल (मामा) यज्ञोपवीत देनेवाला, गुरु, चेला, साहाय्यायि (संगतपट्टणीवाला) मित्र, पुत्री, मेण, माणजा, राजा, पुरोहित इत्यादि अपने सबधियोंको मरणसेभी अंजली देणा चाहिये। परंतु नपुंसक भंरसारको मारनेवाली रक्षा गर्भ निकलानेवाली पतित हृदयारा, चौर, द्रात्य, नास्तिक, मदिरापानेवाला इत्यादिकोंको अंजली दान नहि करे।

संबंधमनुस्मृत्युस्तावत्तर्प्ययेयुः । श्वशुर मातामह मातुलाचार्य शिष्य सहाय्यायि मित्र इहितु ।
 भगिनी भागनेय राजत्विजां तद्धितैषिभिः काम्यमुदकदानं कर्तव्यम् । क्लीबमर्तुगर्भदुहं ।
 स्त्रीपतितैरुदकं न कार्यं) ततः सव्यं कृत्वा । शिखां बध्वा । उदकादुत्तीर्य स्ना ।
 नवस्रं निष्पीडय । शुचौ देशे शाद्वलवत्सुपविष्टान् सपिंडान् अन्ये सुहृद इतिहासपुराणा-
 दिविधिविकथाभिः संसाराऽनित्यतादर्शयन्तोऽवदेयुः ॥ मानुष्ये कदलीस्तंभानिःसारे सारमा-

अंजली देनेके अनंतर सपूर्ण सव्य होंके आचमन करे, और शिखा (चोटी) के गांठदे, नदी, तलाव, कूप आदिसे नीचे उतरकर पीति नियोवे । फिर अछि साफजगे हरे घाँस या दुर्वीपे सपूर्ण बांधव और साथ जानेवाला भाई परसंगी अनेक इतिहास पुराण आदिकी कथावोंसे, संसार अर्थात् जन्मना मरणा झूठा दिखावे. और वैराग्य उत्पन्न करे । अथ

इतिहासः । यह मनुष्य शरीर (कंदली) केलेके स्तम्भेड जैसा है, और इसमें कोई सारचाज नहि है क्युकी (निःसार) केले की तरे काठ रहितहै, और (जलबुबुद सन्निभे) पानीके बुदबुदे जैसा है सो जो कोई इसके अंदर (सारसागण) सदाके रहणका सार देखता है सो (मूढः) मूर्ख है १ पांचमहाभूत पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इनसे यह शरीर बना होया है और अपने पहलेंका किया हुवा कर्म भोगणके बाद (पंचत्व) मरगया अर्थात् पृथिवी आदि पंचमहाभूत । यः करोति ससंभूढो जलबुबुदसन्निभे १ पंचधासंभूतः कायो यदि पंचत्वमंगतः १ क

र्मभिः स्वशरीरोत्थैस्तत्र का परिदेवना २ गत्री वसुमतीनाशमुदधिदेवतानि च १ फेन प्रल्यः कथं नाशं मर्त्यलोको नयास्यति ३ मा शोकं कुंस्तानित्ये सर्वस्मिन् प्राणधारिणि धर्मं कुरुत यत्नेन यो वः सद्गतिमेष्यति ४ इति ततः पश्चादनवलोकयंतोऽधोमुखाः कनिष्ठा भूत अपने २ रस्ते लगे तो फिर किसका फिकर करना २ देखिये या पृथिवीभी जानेवालि है और समुद्र तथा देवता सूर्य आदिमी नाश होवेंगे तो फिर पानीके बुदबुदेकी माफिक-यहै मनुष्य नाश होना कौन बडी बात है ३ इसी छिये इस नाश होने वाले और सदैव नहि रहणेवाले प्राणमात्र संगी शरीरका फिकर मत करो, और यत्नसे धर्म संव्य

बरी, सो तुमारे सेग धेले ४ इति-इत्यादि वाक्यसे मृतकके पुत्रादिकोका शोक दूर करके लरको नहि देखते होय नीचे
 को मुख करके बालकोको अगाडी रखके यमगाथा और यम सूक्तको गति होये सामलके सामल ग्राम या नगरके
 तरफ आवे, और अपने घरके द्वारपे खडाहोके नीमके पत्ते दातोसे चावे, फिर आचमन करके गोमय, सरसों, घृषभ, जल

नम्रतः कृत्वा अहरहर्नयमानो गाम्भ्रं पुरुषं वृषं वैवस्वतो नंतृप्यति सुराप इव दुर्मतिरिति
 यमगाथां गायतो यमसूक्तं च जपतः पक्तिभूतां ग्रामं प्रत्यायाति । ततो गृहद्वार समीपे स्थि
 त्यां निचपत्राणि दत्तेर्विदश्य आचम्य । गोमयसर्षपवृषाबुद्रवाम्नान्यथालाम् स्पृष्ट्वापादने ।
 पापाणमाक्रम्यगृहं प्रविशेयुः । वृद्धाः शोकापनोदनं कुयुः ॥ अथ ज्ञातिनां यमानियमाः ।
 ब्रह्मचारिणः । अधःशायिनः अधलपवेशिनः । परस्परं असंस्पृष्टाः । दानाध्ययनवर्जिताः ।

दूरी, अग्नि इत्यादिक जो वस्तु तयार होवे, तिसको स्पृशी करके, पत्थरपे पंग रखके धरके अंदर प्रवेश होजावे, और तहा
 बुटे २ मंत्रुय्य शोक दूर करावे । अब जातबाले माइयाका तीन राजतक नेम लिखते हे-संपूर्ण ब्रह्मचारी रहे अथात्स्त्री संग

नहिं करे। मिला वस्त्र पहरे। उदास रहे। नीचेको मुँस रहे। संपूर्ण भोग आनंद त्याग देवे। भ्रंग बाल आदि साफ नहिं करे। प्रेतक्रिया शिवाय अन्य कोई जरूरत बिना कान नहिं करे। शक्ति होवे तो तीन दिन या एकदिन उपवास करे। अथवा एक मक भोजन करे परंतु चावल, मूंग, यम आदि खावे। और उड़द, पुडे, पायस आदि भक्षण नहिं करे। पाक एक मलिनाः। दीनाः। अधोमुखाः। सर्वभोगविवर्जिताः। अंगसंवाहनं केशसंमार्जनं चाकुर्वतः।

प्रेतक्रियार्जमनावश्यकं न किंचित्कर्म कुर्युः। शक्त्यात्रिरात्रमेकरात्रं वा उपवसेयुः। अशक्तौ। एकान्नप्रीहियवादि अक्षारलवणं माषान्नापूपपायसवर्जितं एकवारं कृत्वा लब्ध्वा वा दिनान्त्ये दिवैवाल्पमश्नीयुः। न रात्रौ भोजनकाले भोज्यौदनात् शुक्तमुच्छिष्टमादाय प्रेतस्यनाम गोत्रमुच्चार्य प्रेतोद्देशेन भूसौ क्षिपेत्। एते नियमाः त्रिरात्रपर्यंतं सर्पिडानां

देर करे। या किसी माई परसंगीको आया हुआ अन्न सार्यकाल दिन २ संधि स्वा लेवे परंतु रात्रौमें भोजन नहिं करे। भोजन करनेके बाद छुटा अन्न लेके प्रेतका नाम गोत्र उच्चारण करके, पृथिवीमें थोडा छोड देवे। यह नेम सर्पिडोंको तीन

रात्रिक रक्षणा चाहिये। और पुत्र, पौत्र, भाई आदिको माता, पिता, गुरु मरणसे दशरात्रिक, यहि नेम रक्षणा पढताहै।
 इछा होवे तो दशदिनतक संपूर्ण कुटुंब सहित भोजन करना। और चोहरावे श्मशान घरमें दीपक, चासणा चाहिये-
 फिर सूर्यअस्तहोनेके बाद रात्रिमें तीन लकड़ियें दुग्ध और जलका दो कषापात्र रखके चोहरावे या श्मशानमें दक्षिण
 भवति। पुत्रादीनां तु माता पिता ऽऽचार्यनिपातने दशरात्रमेते नियमा भवति। इच्छ्या
 प्रथमादि दशाहपर्यंतं कुटुंबैःसह भोजनं चतुष्पद श्मशानग्रहेषु दीपदानम्। अथ सूर्यास्त-
 मयाहूर्ध्वं रात्रावन्तरिक्षे श्मशाने वा चतुष्पथे क्षीरोदकदानम्। तत्र। त्रिकाष्टिकायां एक-
 स्मिन्नपक्षे मृन्मये पात्रे उदकं द्वितीये क्षीरं च कृत्वा। अपसव्येन दक्षिणामुख उपविश्य।
 देशकालौ संकीर्त्ये। अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य आप्यायनार्थं तृषोपशमनार्थं चाकाशे मृन्म
 यपात्रद्वये क्षीरोदकयोर्निधानं करिष्ये इति संकल्प्य। श्मशानानलदग्धोसे परित्यक्तोसि
 को मुख किया होया अपसव्यसे संकल्प उच्चारण करके प्रेतके निमित्त देवे और यह उच्चारण करे की। हे प्रेत! तुम
 श्मशानकी अग्निसे दग्ध हुवा हो और बांधवों करके त्यागा होया होसा यह जल और यह दुग्ध आपके निमित्त देता हूँ

लो र्ण पानीसे स्नान राते और इंग कुंभको पात्रो एंगे कहके, निवेदन करे फिर अपने परको चला आये। यह जल
 कुंभका दान एक रोग या तीन रोग या दश रोगको नित्य प्रति परेपरके अनुसार रात्रिमें करणा चाहिये। इति दाह
 प्रारणम्। जब प्रागमदिनसे लेके दश रोगका रुग् लिखतेहे। प्रथम आस्थिसंचय कहतेहे। अस्थिसंचय प्रथम या
 बांधवेः। इदं नीरभिदं क्षीरसत्र स्नाहि इदं पिव इतिपाठित्वा ॥ अमुकगोत्र अमुकभ्रत अनन
 जलेन स्नाहि। अमुकगोत्र अमुकभ्रत इदं क्षीरं पिव इति निवेदयेत्। एतव क्षीरोदकनिधा-
 नभेकाहं वा दिनत्रयं वा दशाहं यथाचारं प्रत्यहं रात्रौ कर्तव्यम्। ततो गृहांगमनं। इति दाह-
 प्रकरणम् ॥ अथ प्रथमदिनमारम्यं दशाहपर्यंतं कर्मच्यते ॥ तावदस्थिसंचयनेम् ॥ तच्च प्रथम
 तृतीय चतुर्थं सप्तम नवमेषु। सोमार्के। मंदतिथियुग्मेकपादं द्विपादं त्रिपादं कर्तुंनक्षत्र धनि-
 ष्टादि पंचक वंजं दिनेषु कार्यम् (तत्र विप्राणां विशेषतश्चतुर्थ्यगृहिं राज्ञां पंचमे विशां नवमे-
 शीघरे चोत्रे पांचवे क्षान्ते नोत्रे दिन कृष्ण चाहिये परंतु मंगल आदित्य अनेअर वार और बधि होइ तिथि एकपाद,
 द्विपाद, त्रिपादरोग कर्त्तिका जन्म नक्षत्र धनिष्ठा शतभिया पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद रेवती यह पाच नक्षत्र नाहि हो तद

करणा। और आग्रणकों घोबे रोज क्षत्रिकों पांचवे वैश्यकों नौवें शूद्रोंको दशवें देने करणेका लेखहै (परंष्टु देश कुलपरंपरा विवहार देखके करणा अथवा संपूर्णहि पहलें कयेहोये प्रथम तीसरे आदि दिनोंमें करलेवै और तीनरोजका पातक होवै तो दूसरे दिन और एक रोजका होवे तो उसी दिन दाह करणेके वाद अस्थि संचय करे ॥ अस्थिसंचयनिमित्त श्राद्ध लिखतहै ॥

शुद्धाणां दशम दिने कार्थ्यं । असंभवे प्रथमादि दिवसेष्वस्थिसंचयः कर्त्तव्यः । अहाशौचे द्वितीयेऽपि । सर्वेषां सत्यशौचे दाहानंतरमेव कर्त्तव्यः ॥ अथास्थिसंचयनिमित्तकं श्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र श्राद्धदिने सामग्रीं संपाद्य श्मशानदेशे गत्वा शुचिं भूमौ संस्थाप्य नद्यादिके स्नात्वा श्राद्धभूमिं प्रकल्प्य गोमयोदकेनोपलिप्य गौरमृत्तिकयाच्छाद्य तिलैरवकिरणं कुर्यात् । ततश्चरुशृपणं कृत्वा सिद्धेऽन्ने दीपं प्रज्वाल्य पवित्रे धत्वा । आचम्य । तृष्णीं प्राणानायम्य

प्रथमतो श्राद्धके दिन सामग्रीतैयार करे । फिर श्मशानमें जाके शुद्ध साफजगें सामग्री स्थापन करै पश्चात् नदी तलाव आदिमें स्नान करके श्राद्धभूमिकी शुद्धी करे । और गोबरका लेपा देवै सुपेद या बालुरेता बिछावै और तिल विकिरण करके (चरु) चावलधोके अछा एकावै और तेलका दीपक जलाके पवित्र धारण करै और आचमन तथा अमंत्रक प्राणायाम

करे पश्चात् पुरा धारण करके (अपवित्रः पवित्रो वा) इस मंत्रके (पुंडरीकाक्षः पुनात्) इस्से सामग्री और अपने शरीर
 को जलसे प्रोक्षण करे फिर अपसव्य होके दक्षिणको मुख और नीचेको वामा गोडा करके दाहणे हाथमें कुशत्रय
 कुशोपग्रहः । अपवित्रः पवित्रो वा० १ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति श्राद्धसामग्रीं स्वात्मानं च
 प्रोक्षयेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानुः कुशत्रय तिल जलान्यादा
 य देश कालौ संकीर्त्य० । अमुकगोत्रस्य अमुकभ्रेतस्य भ्रेतत्वविमुक्तये अस्थिसंचयनिमित्त
 कं श्राद्धं करिष्ये-। इत्युक्त्वा । कुशबटुं निधाय । इह लोकं परित्यज्य गतोसि परमां गतिं ।
 मनसा वायुरूपेण चटे त्वाहं नियोजये १ इति पठित्वा तिलान् विकिरेत् । ततः कुशत्रय तिल
 जलान्यादाय० । अमुकगोत्र अमुकभ्रेत अस्थिसंचयनिमित्तकश्राद्धे इदमासनं ते मया दी
 यते तवोपतिष्ठतामित्यासनं ऋष्टु कुशत्रयरूपमुत्सृजेत् (नमोटकरूपं) । ततस्तूष्णीं तिलान्
 तिल जल लेवे फिर भ्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके संकल्प लेवे । पश्चात् कुशाका एक चट रस्के लसये (इहलोकं)
 इस श्लोकसे भ्रेतका आवाहन करे और तिलविकिरण करे फिर सीधी त्रिकुशका आसन देके तिल भरे (यहां भोटक नहि

देणा चाहिये) इसके अनंतर एक डोनेमें कुशाका पत्ता रखके जल तिल गंध पुष्प घाले फिर डोना वामें हाथमें रखे ।
 कुशाका पत्ता अगाडी एक पतलपें धरके दाहणे हाथसे उस दर्भाके पते (पवित्रे पर अर्घ जल उपरका संकल्प उच्चारण
 विकीर्य्ये । अर्घपात्रे पवित्रमेकं धृत्वा । तत्र जल तिल गंधपुष्याणि प्राक्षिप्य । पात्रं गृहीत्वा
 वामहस्ते कृत्वा । पवित्रे परिवेषणपात्रे दत्त्वा । अर्घपात्रं दक्षिणकरे कृत्वा । अद्यामुकगोत्र
 अमुकप्रेत एष ते हस्तार्थो मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यर्घं पवित्रोपरि दद्यात् । अर्घपात्रं
 चासनवामपार्श्वे तूष्णीं स्थापयेत् । ततो गंधादिकं धृत्वा । अमुकगोत्र अमुकप्रेत अस्थिसंच
 यनिमित्तक श्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल वासांसि ते मया दीयंते तवोपतिष्ठं
 तामित्युत्सृजेत् । ततो घृताक्तमन्नमुद्धृत्य । पात्रे परिवेश्य । जलेनाभिषिच्य (न पात्रालंभागा
 ह्ये । नात्र पात्रालंभो नाशियः प्रार्थयेदिति प्रचेतसःस्मरणात्) तूष्णीं तिलान् विकीर्य्ये । वाम
 कर करगरे । अर्घपात्रको आसनके निर्भक्तकोणमें सीधाहि स्थापित कर देवे (प्रेतश्राद्धमें नुब्ज नहि करणा चाहिये)
 पश्चात् आसनपें गय पुष्प धूप दीप तांबूल सुपारी बर्र धरके संकल्प लेवे । और प्रेतके अर्पण करे । फिर एक पत्तमें

प्रासनके अगाडीं अन्न घृत ध्यंजन सहत दही जल आदि न्यारे २ परोसकें वामें हाथसे अन्नपात्रको 'स्पर्शकरता' हवा प्रेतका नाम गोत्र लेके सकल्प रीतिसे अन्नका त्याग करे। (यहां पात्रका आलभन अगुष्ठनिवेशनपितृजप आदि कर्म करेण पात्रं स्पृशन्। दक्षिणकरे कुशादीन्यादाय। अद्यामुक०; प्रेत अस्थिसंचयनिमित्तक

श्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत्। नात्र पितृको जपः (न पितृको जपः कार्यं इति प्रचेतसः स्मरणात्) ततोऽन्नपात्रसमीपे पिंडदानार्थं सिक के जल तिल गंध पुष्पाणि कृत्वा। पुटकं गृहीत्वा। अमुक० प्रेताऽस्थिसंचयनिमित्तक श्रा ङ्पिंडस्थानेऽत्रावनेनिश्च्यते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपरि अवनेजनजलं किं

नहि कारना चाहिये) फिर अन्नपात्रसे उत्तर तरफ पिंडदानके लिये (रेत) महीसे एक वेदी बनावे और उसको गोम- यसे छेपे। फिर दक्षिणको अग्रभाग करके तीन पत्तेवाली कुशा एक धरे और उसपर जल तिल चंदन संभरे होये डोनेसे

अघनेजन अर्थात् जल गेर देवै अघनेजन देनेके अनंतर घृत सहत् तिल आदि मिले होये अत्रसे एक पिंड बनावे फिर
 पिंडकी बायें हायमें और कुशत्रय तिल जल दक्षिणहायमें लेके प्रेतका गोत्र नाम उच्चार करे और दोनो हायोंसे कुशाके
 चिह्नधात् । ततो घृत मधु तिल युक्तेनानेन पिण्डं निर्माय । वामहस्ते कृत्वा । दक्षिणहस्ते
 कुशत्रय तिल जलान्यादाय । अमुकगोत्रामुक्प्रेतास्थिसंचयनिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते
 पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरि वामाऽन्वारब्ध दक्षिणहस्तेन पिण्डं द
 धात् । ततः हस्तौ प्रक्षाल्य । अघनेजनपात्रं गृहीत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । अमुक गोत्रामु
 कप्रेत अत्र प्रत्यवनेनिध्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामितिप्रत्यवनेजनं दधात् । ततः पि
 ण्डोपरिकर्णसूत्रं दत्वा । अमुक गोत्राऽमुकप्रेत अत्र पिण्डे एतद्वासो मया दीयते तवोपति
 ष्टतामित्युत्सृजेत् । ततः पिण्डं गन्ध पुष्प धूप दीप पूगीफल दक्षिणादिभिः सम्पूज्य । अमुक
 उरर पिंड देवै । फिर हात धोके अघनेजन पात्रसे प्रत्यवनेजन पिंडपे देवै । और पिंडकी ऊनके तार गंध पुष्प धूप दीप
 तांबूल पूगीफल दक्षिणा करके पूजा करे । और गोत्र नाम उच्चार करके गंध पुष्प आदिनिवेदन करदेवै । पिंडपूजनके

अन्तर संकल्प लेकें प्रेतकों अन्न जल आदि अक्षय्य करे । और पिंडपें दक्षिणको अगाडीका हिस्सा करके त्रिकुशा धरे । फिर दुग्ध जल करके दक्षिणाग्रधारा पिंडके उपर देवे । और (अनादिनियन० १ अतसीपुष्प० २ कृष्णकृष्ण० ३ गोत्रामुक्तमेतात्र पिण्डे गन्ध पुष्प धूप दीप पूगीफल दक्षिणादीनि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्तामित्युत्सृजेत् । ततः अमुक० प्रेतस्यास्थिसंचयनिमित्तकश्चाद्धे यद्दत्तमन्नपानादिकंतं दुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दत्त्वा । पिंडोपरि कुशत्रयं निधाय । सतिल दुग्ध जलेन दक्षिणाग्रां धारां दद्यात् । अनादिनियनो देवः शंखचक्रगदाधारः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव १ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतं । ये नमस्यंति गोविंदं न तेषां विद्यते भयम् २ कृष्ण कृष्ण कृपालोस्त्वमगतीनां गतिर्भव । संसारार्णवमज्ञानां प्रसीद पुरुषोत्तम ३ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वसुद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ४ इति पठित्वा । अमुक० प्रेत अत्र पिण्डे जलधारास्ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामिति जलधारात्रयं दद्यात् ।

नारायण० ४ यो ४ श्लोक पठके । गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेतके अर्पण करे

पश्चात् चादी दक्षिणा लेकें संकल्पद्वारा श्राद्धप्रतिष्ठाके अर्थ कोई ब्राह्मणको देदेवै । फिर पिंड उठाकें चट वि-
सर्जन करे । और हाथ पैर प्रक्षालन करके आचमन विष्णुस्मरण करे श्राद्धसामग्री ब्राह्मणके अर्पणकरे या अगाध नदी

ततो दक्षिणाद्रव्यं कुशादीनि चादाय अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य कृतैतदस्थिसंचयनिमित्तकं
श्राद्धप्रतिष्ठासिद्धयर्थमिदं रजतादि द्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृ
जे इति दद्यात् । ततः पिंडमुत्थाप्य चटं विसृज्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य विष्णुं
स्मरेत् । श्राद्धवस्तूनि विप्राय प्रतिपादयेत् जले वा क्षिपेत् । इत्यस्थिसंचयनिमित्तकं श्रा
द्धप्रयोगः ॥ एवमस्थिसंचयनिमित्तकं श्राद्धं विधाय । गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य भक्ष्य भो
ज्यपूर्णानि अष्टौ पात्राणि गृहीत्वा । श्मशान समीपमागत्य चिताया उत्तरत उपविश्य । ऋ

आदिके जलमें गेरुदेवै ॥ इत्यस्थिसंचयनिमित्तश्राद्धप्रयोगः ॥ श्राद्धकरणेके अनंतर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य जल (भक्ष्य)
लहइ आदि (भोज्य) पायस चावल आदिसें आठ पात्र पूरणकरके श्मशानके समीप जावै और उत्तरकी तरफ बैठके

(कव्यादमुत्तम्यो देवेभ्य नमः) इस मंत्रसे । श्मशानवासिदेवोंकी श्मशानमें गध पुष्प धूप दीप आदिसँ पूजा करै पश्चात् पूरे कये होथे आठ पात्रोंमेंसे एक पात्र लेके उत्तरकी तरफ बलिदान देवै । और (येऽस्मिन् श्मशाने०) इण दो श्लोकोंको पढ़े । इसी तरेश्मशानके पूर्व दक्षिण पश्चिम तरफ तीन बली तीर्थों दिशावर्गे देवै । और दोनों श्लोक पढता

व्यादमुत्तम्यो देवेभ्यो नमः । इति मंत्रेण श्मशानवासिदेवान् गंध माल्य धूप दीपादिभिः
श्मशाने पूजयेत् । ततो बलिदानम् । तत्र मंत्रः ॥ येऽस्मिन् श्मशाने देवाः स्युर्भगवंतः स
नातनाः । तेऽस्मत्संकाशागृह्णंतु बलिमष्टांगमक्षयं १ प्रेतस्यास्य शुभान् लोकान् प्रयच्छंतु च
शाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च ददताच्चिरम् २ इति पठित्वा । एषोऽष्टाङ्गबलिः ।
शंकरादिश्मशानवासिदेवताभ्यो नमः इत्येकबलिदत्त्वा । एवंप्रदक्षिणक्रमेणापरबलित्रयं

जावे (श्लोकोका अर्थ) जो देवता सदा रहने वाले इस श्मशानमें है वे मेरे सकासेति यह अक्षय १ अष्टागबलि ग्रह-
शकरो । और इस प्रेतको शुभ स्वर्गादि लोक और हमारेको आयु आरोग्य सुख चिरकालतक प्राप्त करो २ फिर द्विष्टो

बलियोंको मीन धारकर हुगये बिसे और शंकरादि इमशानवासि देवोंको विसर्जन कर देवै । पश्चात् अपसव्य होके
 हुए जल करके चिताको प्रोक्षण करे और पलाशकी लकड़ी करके भस्मीको बुर कर कर अंगुष्ठ अनामिकासे । शिर
 छाती हाथ पसवाडा पग इत्यादिस्थानोंकी अस्थि (हड्डी) चुगके एक पात्रमें घाले फिर पंचगव्य गंगाजल गुलाब
 पूर्वादित्रिषु द्वारेषु दद्यात् । ततस्तान् बलीन् वाग्यतः क्षीरेणाभ्युक्ष्य । शंकरादि देवताः
 स्वीयं स्वीयं स्थानं गच्छन्तु इति देवताः । विसृजेत् ततोऽपसव्यं कृत्वा क्षीरोदकेन चितिं प्रोक्ष्य ।
 पलाशशाखया चित्तैर्मस्मापौह्याहुष्ठकनिष्ठाभ्यां शिरसं उरसः पाण्योः पार्श्वयोः पादयोरस्थिन्या
 दाय पंचगव्येन गंगोदकेन सुगंधवारिणा च प्रक्षाल्य । गंधादिभिरभ्यर्च्य पलाशशुटे निक्षिप्य ।
 क्षौमवस्त्रेणावेष्ट्य । मृन्मये नूतनकुंभे निधाय शरावेण पिधाय तद्भांडं वने वृक्षमूलेपंकशैवाल
 जलसे धीवे और चंदन केशर आदिसे चिरचके पलाशके पत्तेमें घाले और रेसमानीकपटसे बांधके मट्टिके छोटे कलशमें
 रख देवै । पश्चात् ढकणेसे बंदकरके उमकलशको जंगलमें कोई दरस्तकी जडके पास अथवा कीचड शिवाल्युक्त
 (गढे) साडेमें स्थापन करे ।

फिर चिताकी संपूर्ण भस्म नदिके जलमें डालके चितास्थानमें गोमयका लेपा लगावे और पहलेंकी तरह पूजा बलिदान चारों तरफ करके दुग्धसे सोंच दें। पश्चात् तहां तीन कोणकी वेदी करके तीन श्राद्ध करे वेदियें तीन रेखा

युतगर्तेवानिधापयेत्-ततः चिताभस्मादिसर्वमेव नद्यादितोये निक्षिप्य । चिताभूमिं गोमयेन विलिप्य । तत्र पूर्वाक्तगंधादिपूजां कृत्वा बलिमंत्रेण बलीन् दत्त्वा । पूर्ववत् क्षीरेणाभ्युक्षयेत् । ततश्चितास्थाने त्रिकोणं स्थंडिलं कृत्वा । दक्षिणामुखः श्राद्धत्रयं कुर्यात् । तत्र देशकालौ संकीर्त्य । अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं चितास्थाने श्राद्धमहं करिष्ये इत्युक्त्वा । स्थंडिले रेखत्रयं कृत्वा । तत्र उत्तरे एकं उदकुम्भं तत्पश्चिमे द्वितीयं दक्षिणे तृतीयं च कुम्भं स्थापयेत्-ततः प्रतिकुम्भसमीपे कुशत्रयं धृत्वा-पिंडत्रयं कृत्वा । एकं पिंडं कुशादीनि चा

करके उत्तर पश्चिम दक्षिण की तरफ जलसहित तीन करी (कुम्भ) स्थापन करे, कलश कलशके समीप तीन तीन कुशा धरे । पश्चात् तीन पिंड बणावें और एक पिंडलेके

उत्तर कुंभके समीप श्मशानवासि देवतोंके अर्थ दर्भके उपर देदेवे १ इसीतरे दूसरा पिंड पश्चिम कुंभके समीप
प्रेतके अर्थ गोत्र नाम उच्चारण करके दर्भके देवे २ तीसरा पिंड दक्षिण कुंभके समीप प्रेतके सखावोंको देदेवे ३ ।
दाय । अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थ उत्तरे श्मशानवासिभ्यो देवताभ्यः भोजनार्थ
मयं पिंडः पानार्थं चोदकुंभ उपतिष्ठतामिति कुंभसमीपे दद्यात् १ ततः पश्चिमकुंभ
समीपे अमुकगोत्र० प्रेत० एष ते पिंडो जलकुंभश्च मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति दद्यात् २
दक्षिणे० अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थं प्रेतसखिभ्यो भोजनार्थमयंपिंडः पानार्थं चोद
कुंभ उपतिष्ठतामिति दद्यात् । ततः पिंडान् गंध पुष्प धूप दीप पूगीफलादिभिः संपूज्याश्मशा
नवासिनो देवाः शवानांपरिकीर्तिताः तेभ्योन्नमुदकं कुंभमक्षथ्यमुपतिष्ठतां प्रेतस्यास्यशुभान्
लोकान् प्रयच्छंतु च शाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यं सुखंचददतामिति २ इति प्रार्थयेत् ।
किर पिंडोंकी गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य पूर्णाफलादिकों करके पूजा करे और (श्मशानवासिनो० प्रेतस्यास्य०) इण दो
श्लोकोंसे प्रार्थना करे

पश्चात् कागलोंको तथा कूत्तोंको बलिकें देवता विसर्जन कर देवे और चिताभूमिके आछादनके अर्थ काठकी तिराटी (और जलका भराहुवा मट्टिका कुम्भ धर देवे । पश्चात् मुसाफिरोंके अर्थ कोई पोपल आदिका दरखत अथवा पाषाण मही काठकामकान करा देवे अनंतर नदी आदिमें स्नान करके घरको जावे और वस्त्रों सहित भाई बाघवोंके साथ

ततः कर्केभ्यः श्वभ्यां च बलिं दत्त्वा । देवतां विसृज्य । चिताभूमिराच्छादनार्थं लोकाचारा देव त्रिगंटी जलकुम्भं च दृत्वा । विश्रामार्थं वृक्षं पाषाणकाष्ठादिभिर्वा स्थानं कारयेत् । ततो नद्यादिके स्नात्वा । गृहमागत्य । सचैलो बंधुभिः स्नायात् ॥ इत्यस्थिसंचयः ॥ अथगंगाया मस्थिक्षेपणप्रकारः । तत्र कदाचित्ताहिने वा पुत्र पौत्र सहोदरादिरस्थिकुम्भं उत्पाट्य आदायपूर्व वत् अस्थिक्षेपनिमित्तं श्राद्धं कृत्वा । तीर्थं गत्वा । स्नात्वा । तान्यस्थीनि पंचगव्येन प्रक्षाल्य । हिरण्य सचैल स्नान करे ॥ इत्यस्थिसंचयः ॥ (अथ गंगाया अस्थिक्षेपणप्रकारः) अस्थिसंचयके दिन अथवा फेर कोई अवकारामिलनेसे पुत्र पौत्र भाई आदि अस्थिकुम्भ्यावे और पहलेकी तरह श्राद्ध करे फिर गंगामे जाके तिन अस्थियोंको पंचगव्यमें धोवे और सुवर्ण मोती चादी मृगछाल मुगा सहत घृत तिलआदि मिलाने मट्टिके

पात्रमें रखे फिर दीक्षणाको देसता होया (नमोस्तु धर्मराजाय) इस मंत्रको उच्चारण करके गंगाजिये परवा देवे और स्नान करके सूर्यको नमस्कार करे फिर ब्राह्मणको सुवर्णदीक्षणा कर्ममूर्तिके अर्थ दान करे पश्चात् अपने घरको आकर मुक्ता रूप्य (मृगचरम) प्रवाल सध्वाज्यतिलैः संयोज्यामृत्संपुटे निधाय । दक्षिणां दिशं पश्य न्नाओं नमोस्तु धर्म राजाय पितुः प्रेतत्वमुक्तये। समे प्रीतः शुभं दद्यादस्मिन् लोके परत्र च इति वदन् जलं प्रविश्य । गंगायां क्षिप्त्वा तत्र ल्लात्वा जलान्निष्कम्य। सूर्थ्याय नम इति सूर्थ्यं पश्येत्। तत आचम्य । विप्रमुख्याय यथाशक्ति हिरण्यदीक्षणां दद्यात् । तद्यथा औ अद्य कृतैतदस्थि प्रक्षेपकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतममुक्तगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमह सुत्सृजे इति। ततो गृहमागत्य। यथाचारं श्राद्धतर्पण ब्राह्मणभोजनादि कर्म कुर्थ्यात्। एवं कृते प्रेतक्रियाकर्त्रोः स्वर्गः स्यात् । एवं च मातृकुलः पितृकुलः वर्ज्यान्यकुलोत्थस्यास्थिनयने धर्म कुलपरंपराकी रीतसैः एकोदिद्विभाद्द्याः तर्पण ब्राह्मणभोजन आदि कर्म करे । इस प्रकार श्राद्ध और गंगाजिये अस्थि डालने आदि कर्म करनेसे क्रिया करवेवाला पुत्र और प्रेत स्वर्ग जाता है और माता पिताके कुलरहित अन्य किसीका भी

अस्य धर्मबुद्धिसं लेजावे तो दोष नहिहे । परंतु ब्रव्यके लोभसं लेजानेमें चाद्रायणव्रतसं शुद्धि होतिहे ॥ इत्यस्थि-
 संयनविधिः ॥ अथ दश गात्र विधिः । पुत्रादिक ग्रामके बाहर देवस्थान नदीतीर अन्य कोई तीर्थे या तलाव कुवे
 जगलमें या घरके बाहर शुद्धजगे जलके नजदीक जहां परपरासं करातेहे तहा प्रेतके मस्तक आदि दश अग

बुद्ध्या दोषाऽभावः । द्रव्यादिलोभेन नयतः चांद्रायणाच्छुद्धिः । इत्यस्थिसंचयनविधिः स-
 माप्तः ॥ ॥ अथ दश गात्रश्राद्ध प्रयोगः ॥ पुत्रादिर्ग्रामाद्बहिर्देवतायतने नदीतीरे अन्यतीर्थेवा
 तडागादि तीरे अरण्ये गृहद्वारि वा शुचिदेशे यथाचारं यत्रेच्छा भवति तत्र प्रेतस्य मूर्द्धा
 दिनिष्पत्त्यर्थं पिंडदानं कुर्यात्तत्रादौ नूतनमृन्मयभांडेन नद्यादिकं जलमानीय स्नात्वा । शु-
 धवस्त्रे परिधाय । कुशोपग्रहः शुचि भूमौ पिंडदानं स्थानादेशान्यांदिशिमिप्रज्वाल्य । तत्रतंडु-
 बत्पत्र होनेके अर्थ पिंडदान करे । प्रथमतो नवीन घटसं जल लाके स्नान करे । फिर शुद्धवस्त्र, स्वाफा, दर्भा, पवित्री
 आदियारणकरके शुद्ध साफ जगे ईरानकोणमें पाकके अर्थ अग्नि जलावे और घोयादुवा साफ सोलह १६ तोला वा-

बल अछितरं पकावे. कागले. कुत्ते. आदिका जाबत रसै-पश्चात्, आचमन प्राणायाम मंत्ररहित करके, कुशत्रय, तिल, जल दाहणे हाथमें लेवे. संकल्प उच्चारण करे अपसव्य होके दक्षिणको मुख किया हुवा प्रथम श्राद्धके अर्थ स्वैत मही. बालु रेत. की वेदी १ दक्षिणको नीची बनाके गोमयका लेपा देवे; उस पर दक्षिणाग्र त्रिकुश स्थापन करे । लप्रसृतिद्वयं प्रक्षाल्य सुश्रुतं पचेत्॥ तत आचम्य । तूष्णीं प्राणानायम्या कुशत्रय तिल जला न्यादाय। देश कालौ संकीर्त्या दक्षिणमुखोपविश्या। अपसव्येन अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रथमे हनि शिरो निष्पत्यर्थं अवयवश्राद्धं करिष्य इति. संकल्प्य । गौरसृत्तिकया पिंडार्थं दक्षिणपुवं स्थानं निर्माया। गोमयोदकेनोपलिप्यात्तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणं कुर्ष्यात्। ततः पुटके ज ल तिल गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्या तत्पुटकं गृहीत्वा । अमुक० प्रेत शिरः पूरक प्रथम पिंडस्था नेऽत्रावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपर्यवनेजनं दद्यात् । ततस्ति ल फिर एक (डोने) पात्रमें जल, तिल, गंध, पुष्प घालके पात्रको दाहणे हाथमें लेवे । प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके घोडासा पानी वेदीपे डाल देवे । अनंतर तिल, घृत, सहत, दुग्ध, शर्करा आदि मिलके चावलके एक पिंड बण-

वावे और पिंड, कुशात्रयादि लेके श्रेतके अर्थ (शिरपूर्वक) अर्थात् मस्तक उत्पन्न करनेवाला पिंड संकल्प उच्चारण करके पितृतीर्थसे दर्भाके उपर स्थापनकर देवें और हाथ धोके पहलें रसे होये (अवंनेजन) जलपात्रसे पिंडपर प्र-
 घृत मधु दुग्धसिक्तं तप्तमेव पिंडमादाय । कुशात्रयादीनि चादाय । अमुकगोत्रं श्रेतशिरः
 पूरक एवप्रथमः पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरिपिंडं दद्यात् । ततः प्रत्यवने
 जनदानम् । अमुकं श्रेत शिरः पूरक प्रथमपिंडे अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते मया दीयते तवोप
 तिष्ठतामिति पिंडोपरि पूर्ववद्दद्यात् । ततः श्रेतमुद्दिश्य तूष्णीमेव ऊर्णासूत्रं गंध पुष्प धूप
 दीप नैवेद्य तांबूल पूर्णाफलादिभिः पिंडं संपूज्या कुशादीन्यादाय । अमुकं श्रेत शिरःपूरक
 पिंडे एतानि ऊर्णासूत्रं गंधपुष्प धूप दीप तांबूलादीनि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामित्युत्सु
 जेत् । ततः पिंडेष्वर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु इति पठित्वा । ताम्नादिपात्रे जल दुग्ध तिल
 त्यवनेजन, अर्थात् पानी डाल देवें । और पिंडकी पूजा करे; फिर श्रेतका निमित्तलेके मंत्ररहित ऊनकेतागे, चंदन,
 भृंगरानजआदिके पुष्प, धूप, दीप, सुपारि, नैवेद्य, दक्षिणा आदिसे पिंडकी पूजन करे और संकल्प छोडके, एकपात्रमे

जल, दुग्ध, तिल, गंध, पुष्पडालकें कुशालकें प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करता हुआ एक १ या ३ या १० पिंडपै
 अंजली दानकरै । और तिल जलका एक पात्र भरकें पिंडके पास रखै । प्रेतका नाम उच्चारण करकें तिलतोयपात्र
 गंध पुष्पाणि कृत्वा । कुशत्रयमादाय । अमुक० प्रेत दाहजनित तृपोपशमनार्थ एष तिल
 तोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्येकं त्रयं वा दशकं पिंडोपरि दद्यात् । ततस्तिष्ठ
 तोयपात्रं पिंडसपीपे धृत्वा । अमुकगोत्र० प्रेत एतत्ते तिलतोयपूर्णपात्रं मया दीयते तवोपतिष्ठता
 भित्येकं तिलतोयपात्रं दद्यात् । ततः शेषजलेन पिंडोपरि जलधारां दद्यात् । अनादिनिधनोदेवः
 शंखचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव । अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युत
 मूये नमस्यंति गोविंदं न तेषां विद्यते भयम् । इति प्रार्थ्याकाकोसि यमदूतोसि गृहाणं बलिमुत्त
 मायमद्गरे गते प्रेते तमाप्यायतुमर्हसि । इति काकेभ्यो बलिं दत्त्वा पिंडमुदके प्रक्षिप्यागवादिभ्यो
 अर्पण करै फिर वंचेहोये अवशेष जल करकें पिंडके ऊपर (अनादिनिधन० अंतसीपुष्प०) इत्यादि श्लोक पठता
 दूता अंजली प्रदानकरै, पश्चात् (काकोसि यमदूतोसि) यह मंत्र पढकें कागलोंको बलिदान देवै और पिंड उठाके

जलमें डाल दें, अथवा गो, बैल, बकरी, कागले आदि जानवरोंको खुला दें। पश्चात् नदी आदिमें स्नान करके परको आये और गोघ्रास देंके एक ब्राह्मणको भोजन करावे, इति प्रथमदिन कर्म ॥ इसीतरे दूसरे, तीसरे, आदि दश दिनतक पिंडदान करें; परंतु सकल्प छुदे२ नामोंसे उच्चारण करें. (जैसे) दूसरे दिन—(कर्णाक्षिनासिकापूरको द्वि-

वा दत्त्वा। पुनः स्नात्वा। गृहमागत्य। गोघ्रासं दत्त्वा। ब्राह्मणमेकं भोजयेत्। इति प्रथमदिन कृत्यम् ॥ एवमेव द्वितीयादि दिवसेषु द्वितीयादि पिंडदानं। तत्रायं विशेषः। द्वितीयदिने। अमुक लतोयांजलीं तेमया दीयते०। अमुक० प्रेत द्वितीयदिने द्वे त्रिदिने। गलांसभुजवक्षः पूरकस्तृतीयः पिंडस्ते मया०। अमुक० प्रेत त्रयस्त्रिलतोयांजलयस्ते तीर) अर्थात् कान, नेत्र, नाक उत्पन्न करणेवाला. यह पिंड में देताहों सो हे प्रेत तुमको प्राप्त होवो ऐसे उच्चारण करें, और दो २ या २० तिलतोय अजली. दो २ तिलतोयपात्र (डोना) प्रदान करें २ ॥ तीसरेदिन (गलांसभुज-वक्षः पूरकस्तृतीयः) अर्थात् गला, खोवा, भुजा, छाति इनके उत्पन्न करणेवाला तीसरा पिंड और तीन या ३०

जलांजली, तथा तीन ३ तिलतोयपात्र (डोना) अर्पण करना चाहिये. ३ H) चौथदिन (नाभि लिंग गुद पूरकश्रुत्यः) नाभि, लिंग, गुदाके होनेके अर्थ चोथापिंड देवै, और चार या ४० अंजली, चार ४ जलतिलसे भरा हुआ पात्र (डोना) देवै ४ ॥ पांचवेंदिन, (जानु जंघा पादपूरकः पंचमः) ऐसा उच्चारण करै, अर्थात्

मयादीयते० । अमुक० प्रेत त्रीणितिलतोयपात्राणि तेमयादीयते तवोपतिष्ठतामिति० ३ ॥ चतुर्थ दिने० । अमुक० प्रेत नाभि लिंग गुद पूरकश्रुत्यः पिंडस्ते मया० । अमुक० प्रेत चत्वारस्तिलतोयांजलस्ते मया दीयते० । अमुक० प्रेत चत्वारि तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तव० ४ ॥ पंचमदिने० । अमुक० प्रेत जानु जंघा पादपूरकः पंचमपिंडस्ते० । अमुक० प्रेत पंचतिलतोयांजलयस्ते मया दीयते० । अमुक० प्रेत पंच तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतां० ५ ॥ षष्ठदिने । अमुक० प्रेत सर्व मर्मपूरकः षष्ठः पिंडस्ते मया दीयते० ।

गोडें, जांघ, पैर उत्पन्न करनेवाला पांचवां पिंड, पांच या ५० अंजली और पांच तिलतोयपात्र (डोना) दे देवै ५ ॥ उठे दिन (सर्व मर्मपूरकः षष्ठः) ऐसा वाक्य उच्चारण करै अर्थात् संपूर्ण मर्मस्थानके उत्पन्न करनेवाला यह छठा-

पिंडं, छे ६ या ६० अंजली और ६ तिलतोयपात्र (डोना) देवे ६ ॥ सातवें दिन (सर्व नाडीपूरकः) अर्थात् संपूर्ण नाडियोंको पूरणेवाला सातवा पिंड, और सात ७ या ७० अंजली, सात ७ पात्र दान करे ७ ॥ आठवें दिन असु० प्रेत पद्मतिलतोयांजलयस्ते० । असु० प्रेत षट्तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते० ६ ॥ सप्तम दिने । असुक० प्रेत सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिंडस्ते० । असुक० प्रेत सप्त तिलतोयांजलयस्ते मया दीयन्ते० । असुक० प्रेत सप्त तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते० ७ ॥ अष्टमदिने । असुक० प्रेत दंतलोमादिपूरकोऽष्टमः पिंडस्ते० । असु० प्रेत अष्टौ तिलतोयांजलयस्ते० असु० । प्रेत अष्टौ तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते० ८ ॥ नवम दिने । असुक० प्रेत वीर्यपूरको नवमः पिंडस्ते मया दीयते० । असुक० प्रेत नव तिलतोयांजलयस्ते मया दीयन्ते० । असुक० प्रेत० नव तिलतोयपात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतां० ९ ॥ (दंत लोमादि पूरक) दंत, लोम (बाल) छत्पत्र करनेवाला आठवा पिंड, और ८ या ८० अंजली, आठ तिलतोयपात्र दान देवे ८ ॥ नौवेंदिन (वीर्य पूरको नवमः) वीरज पूरणेवाला नौवा पिंड, जो ९ या ९०

अंग्रली, और नो ९ तिलतोयपात्र देवे ९ ॥ दशवें दिन (शुत पिपासा पूरको दशमः) ऐसा वाक्य उच्चारण करके, मर्यात् भूख, प्यास पूरनेवाला दशवों पिंड, दश १०या १०० अंजली, और दश तिलतोयपात्र (डोना) दानकरे। और संपूर्ण विधि एकतरा जेहि जाणनी चाहिये १० ॥ पाक नहि होवे तो. फल, कंद या शाग, गुड, कुग्ध, चावल या दशमदिने। अमुक० प्रेतशुत् पिपासा पूरको दशमः पिंडस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति०। अमुक० प्रेत दशतिलतोयांजलयस्ते मयादीयते०। अमुक० प्रेत दशतिलतोयांजलयस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठतामिति दद्यात् १० ॥ अन्यत्सर्वसमानम् ॥ पाकभावे फलमूल शाक गुड कुग्ध शालि सक्तुयव पिष्टानामन्यतमेन पिंडा देयाः। येनद्रव्येण प्रथमं पिंडो दत्तस्तत्सजातीयेनैव पिंडान्तरमपि दद्यात् ॥ येनपुत्रादिना प्रथमः पिंडो दत्तः स एव पिंडांतरं दद्यात् ॥ अत्र केचित् नवश्राद्धं शत, गोर्गाकोनून इत्यादि जिन्नसका पिंड देवै. परंतु जिस जिनस द्रव्यसे पहला पिंड दियाहै उससे दशरोजक देना चाहिये। और जो पुत्र या पौत्र. पहला पिंड दिया बोही दशपिंड दान करे। अर्थात् दूसरो नहि करे। केचित्

नवश्राद्ध विपमदिने, अर्थात् १३/५/७९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं सो इछावे तो करणा चाहिये करणसे जादा फल
 है नररणसे दोपभी नहिरे इति दशगानविधिः । अब सूतफके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहैं । अर्थात्
 दशवें दिन दशवा पिंड देकें प्रेतके स्पर्श होया हुवा वल्ल आदि चाडालोंको, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मणोंको दे
 विपमदिनेपु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चेत्क
 र्तव्यम् । विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः ॥ अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम् ॥
 आशौचांत्यदिने दशमं पिंडं समाप्य प्रेतस्पृष्टवासांसि अंत्यानामाश्रितानां च दत्त्वाऽमृन्मयपा
 कभांडानिच त्यक्त्वाऽगृहशुद्धिं विधायऽस्नात्वाऽकेशलोमनखान् यथाचारं वापयित्वा । तिल
 गौरसर्पपक्केन शिरश्चोन्मृज्य । शुद्धस्नानंच कृत्वाऽवासोयुगं परिधायऽआचम्याऽवाग्यतो वृ
 दें । और मढीके घडे आदिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलश, हाडी आदि पात्र घालै । और घरका शुद्धि करे । फिर
 केश, बाल नख, आदि परपराके अनुसार लिवाके तिल, पीलीसरसोंका लेप शिरसें करके मल निकालके अछितर
 स्नान करे । और धौती, अंगोछा, शुद्ध वल्ल घारके आचमन करे । मीन रत्नके वृषभ, गौ, सुवर्ण, गोलोचन, बहीं, बूबी

आदिकों स्पर्श करे। और ब्राह्मण-अग्निकों, क्षत्रि-वाहन, शस्त्रको; वैश्य चानूक, रस्सीआदि; शूद्र लाठी, छंडीको स्पर्श करके शुद्ध होजावे. (अथ एकादशाह दिनकर्म,) प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नान करे। सुपेद धोया हुवा बल्ब पहेरे। आचमन प्राणायाम करे (यत्वगस्थि०) यहें मंत्र पढके. पंचगव्य प्राप्तन करे। और नवीन यज्ञोपवीत, चंदन, भस्म,

पभं गां सुवर्णं गोरोचनं दधिदूर्वांच स्पृष्ट्वा । ब्राह्मणोऽग्निं । क्षत्रियो वाहनायुधं । वैश्यः प्रतोदं
रश्मीन् वा । शूद्रो यष्टिंच संस्पृश्य । शुद्धो भवेत् ॥ अथैकादशाहदिनकर्म ॥ तत्र प्रातः नद्या
दौ स्नात्वा । शुक्लधौतवाससी परिधाय । आचमनं प्राणायामं च कृत्वा । ओं यत्वगस्थिगतं
पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निर्वेधनंमिति मंत्रेण पंचगव्यप्राश
नं नूतनयज्ञोपवीतधारणं । भस्मधारणंच कृत्वा । कुशोपग्रहः विधिवत्संध्यावंदनं यथाशक्ति गा
यत्रीजपं विष्णुपूजनं च कुर्यात् ॥ अथ वृषोत्सर्गः । तत्र तावत्-प्रागुदक् प्रवणे विविक्तेनिर्जने
दुर्भाधारण करके विधिपूर्वक संध्या, ब्रह्मयज्ञ, गायत्रीजप, श्रीविष्णु शालिग्रामजीका पूजन करना चाहिये । इति शु-
द्धिप्रकारः ॥ अथ वृषोत्सर्गविधि लिख्यते ॥ प्रथम तो वृषम (सांड) को निराले मनुष्य रहित जंगलमें चार ४ या २

नवश्राद्ध विषमदिने. अर्थात् १।३।५।७।९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं सो इछावे तो करणा चाहिये करणसे जादा फल
 हे नरुणसे दोषभी नहिंहे इति दशगात्रविधिः। अत्र मृतकके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहैं। अर्थात्
 दशवें दिन दशवां पिंड देकें प्रेतके स्पर्श होया हुवा बल आदि चांडालोंको, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मिणोंको दे
 विषमदिनेषु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चैतक
 र्त्तव्यम्। विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः॥॥अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम्॥
 कभांडानिच त्यक्त्वा।गृहशुद्धिं विधाया।स्नात्वा।केशलोमनखान् च दत्त्वा।मृन्मयपा
 गौरसर्पकल्केन शिरश्चोन्मृज्य। शुद्धस्नानं च कृत्वा।वासोयुगं परिधाया।आचम्या।वाग्यतो वृ
 द्वे। और महीके घडे श्रादिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलत्रा, हांडी आदि पात्र घाले। और घरका शुद्धि करे। फिर
 केश, बाल नख, आदि परंपराके अनुसार लिवाके तिल, पीलीसरसोंका लेप चिरपे करके मल निकालके अछितर
 स्नान करे। और धौती, अंगोछा, रुद्र बल धारके आचमन करे। मौन रखके चूपन, गौ, सुवर्ण, गोलोचन, दही, दूबो

आदिकों स्पृश करे। और ब्राह्मण-अग्निकों, क्षत्रि-वाहन, शस्त्रको; वैश्य चाबूक, रस्सीआदि; शूद्र लाठी, छंडीकों स्पृश करके शुद्ध हो जावे. (अथ एकादशाह दिनकर्म,) प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नान करे। सुपेद धोया हुवा वस्त्र पहरे। आचमन प्राणायाम करे (यत्वगस्थि०) यहै मंत्र पढके. पंचगव्य प्राप्तन करे। और नवीन यज्ञोपवीत, चंदन, भस्म,

पभं गां सुवर्णं गोरोचनं दधिदूर्वांच स्पृष्ट्वा । ब्राह्मणोऽग्निं । क्षत्रियो वाहनायुधं । वैश्यः प्रतोदं
रश्मीन् वा । शूद्रो यष्टिच संस्पृश्य । शुद्धो भवेत् ॥ अथैकादशाहदिनकर्म ॥ तत्र प्रातः नद्या
दौ स्नात्वा । शुक्लधौतवाससी परिधाय । आचमनं प्राणायामं च कृत्वा । ओं यत्वगस्थिगतं
पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरेवैनंमिति मंत्रेण पंचगव्यप्राश
नं नूतनयज्ञोपवीतधारणं । भस्मधारणं च कृत्वा । कुशोपग्रहः विधिवत्संध्यावंदनं यथाशक्ति गा
यत्रीजपं विष्णुपूजनं च कुर्यात् ॥ अथ दृषोत्सर्गः । तत्र तावत्-प्रागुदक् प्रवणे विविक्तेनिर्जने
दर्माधारण करके विधिपूर्वक संध्या, ब्रह्मयज्ञ, गायत्रीजप, श्रीविष्णु शालिग्रामजीका पूजन करना चाहिये । इति शु-
द्धिप्रकारः ॥ अथ दृषोत्सर्गविधि लिख्यते ॥ प्रथम तो वृषम (सांड) को निराले मनुष्य रहित जंगलमें चार ४ या २

नवश्राद्ध विषमदिने. अर्थात् १।३।५।७।९ इणदिनोंमें विशेष करतेहैं तो इच्छावे तो करणा चाहिये करणसे जादा फल है न करणसे दोषभी नहिहै इति दशगात्रविधिः । अथ सूतकके अतिम दिनकार्कर्म लिखतहै । अर्थात् दशवें दिन दशवां पिंड देकें प्रेतके स्पर्श होया हुआ बह आदि चांडालोंको, अथवा नाई, चाकर आदि कर्मियोंको दे विषमदिनेषु दशाहमध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति अकरणे प्रत्यवायो नास्ति इच्छा चेत्क तेव्यम् । विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इति दश गात्रपूरक श्राद्धप्रयोगः ॥॥ अथाशौचान्त्यदिनकृत्यम् ॥ आशौचांत्यदिने दशमं पिंडं समाप्य प्रेतस्पृष्टवासांसि अंत्यानामाश्रितानां च दत्त्वा मृन्मयपा कभांडानि च त्यक्त्वा गृहशुद्धिं विधायां स्नात्वा केशलोमनखान् यथाचारं वापयित्वा । तिल गौरसर्पकल्केन शिरश्चोन्मृज्य । शुद्धस्नानं च कृत्वा वासोयुगं परिधाय आचम्य वाग्यतो वृ देवै । और महीके घडे आदिपात्र त्यागके नवीन घडा, कलश, हांडी आदि पात्र घालें । और घरका शुद्धि करें । फिर केश, बाल नख, आदि परपराके अनुसार लिबाके तिल, पीलीसरसोंका लेप शिरसें करके मल निकालके अछितर स्नान करें । और धौती, अगोछा, शुद्ध बह धारके आचमन करें । मौन रखके आचमन करें । मोन रखके दूध, दही, दूबो

(ओं सुमुखैकदंतम्) इत्यादि गणपति स्मरण करके श्रीगणेशकी पूजन करे . और एक वेदियें वल्ल विछाके चाव-
 डोंकी कुठी (पुत्र) करके उनके ऊपर वृषमातृकाका आवाहन करे (आवाहन करनेका प्रकार) अक्षत पुष्प
 कलशस्थापनं पूजनंच करिष्ये इति चोक्त्वा । ओं सुमुखश्रेकदंतश्रेत्यादि स्मरण पूर्वक गणेशं
 संपूज्य । तत्रैव स्थंडिले तंडुलपुंजेषु वृषमातरावाहयेत् । तद्यथा । अक्षतानादाय ओं नंदा
 चसुमनाचैव सुशीलाच पयस्विनी । सुरमी पंचमी प्रोक्त्वा पंचैताः वृषमातरः १ नंदामावाह
 याभिः प्रतिष्ठापयामि १ । ओं सुमनामावा० प्रतिष्ठा० २ । ओं सुशीलामावा० प्रतिष्ठा० ३ ।
 ओं पयस्विनीमावा० प्रतिष्ठा० ४ । ओं सुरमीमावाहयामि प्रतिष्ठापयामि ५ इत्यावाह्य । ओं
 मनोज्ञतिष्ठेत्तामिति प्रतिष्ठाप्य । ओं नंदार्येनमः १ ओं सुमनार्ये नमः २ ओं सुशीलार्ये
 ३ ओं पयस्विन्यै ० ४ ओं सुरम्येनमः ५ एवं नाम मंत्रेण प्रत्येकं गंधादिभिः संपूज्य ।
 शयें शयमें डेके । नंदा १ सुमना २ सुरमीला ३ पयस्विनी ४ सुरमी ५ यह पंच वृषमातृकाहे इनको छदी
 २ । ओं नंदार्येनमः नंदामावाहयामि प्रतिष्ठापयामि १, ओं सुमनामावाहयामि २, ओं सुशीलामावाहयामि ३, ओं

या १ बछ्ठी करके सहित लेजावे । पांत वृषभ तीन वर्षका होवे । और मनोहर, देखनी योग्य गुणों करके परिपूर्ण होवे । तब बस्त्र, पुष्प माला, झालरी, घंटा, सुवर्णपट्टिका पैजणी आदि आभूषणों करके शोभायमान करे । फिर विधिपूर्वक उत्सर्जन करणा चाहिये (विधि लिखते हैं) कर्ता आसनपै बैठके पूर्वको मुख किया हुवा दर्भा धारण करके, आचमन

वने । गोमध्ये वत्सतरी चतुष्टयेन द्वाभ्यामेकेन वा सहितं त्रिहायनं मनोज्ञं दर्शनीयं उत्कृष्टगुण विशिष्टं वृषं वस्त्र माल्य किंकणी घंटा हेमपट्टिकादिभिर्वृषोचितभूषणैर्भूषयित्वा तत्रानयेत् । ततः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य । कुशोपग्रहः । आचम्य । प्राणानायम्य । कुशत्रय तिलजला न्यादाय । देश कालो संकीर्त्य । ओं अद्यैकादशेऽह्नि । अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वका क्षय्यस्वर्भकामो वृषोत्सर्गकरिष्ये । इति संकल्प्य । तदंगत्वेन गणेशपूजा वृष मातृपूजा रुद्र

प्राणायाम करे । फिर कुशत्रय, तिल, जल लेकर, संकल्प उच्चारण करके कहैकी आज मैं अमुकगोत्र अमुकनामके प्रेत-का प्रेतत्व दूर होने, और अभय्य स्वर्ग प्राप्तिके अर्थ वृषोत्सर्ग करता हूँ । ऐसे कहके संकल्पका जल त्याग देवै । पश्चात्

वचको करेकी शास्त्रके लेख मुजब काम करना । फिर ब्राह्मण कहेकी करोगा । ऐसा करणके अनंतर । एक ब्राह्म-
 णको (होता) होम करने वाला वरणन करे, और उसके पासमे पहलेकीतर कुहवै [अथ । अग्निस्थापन प्रकार
 हस्ते पुण्य चंदन तांबूल वासांस्यादाय । देश कालौ संकीर्त्य । ओ अद्य कर्तव्यः वृषोत्स
 गाङ्गभूत होमकर्मणि कृताकृतविक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण
 मेभिः पुण्याक्षतचंदनतांबूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इति ब्रह्माणं वृणुयात् । ओ वृ
 तोस्मीति प्रतिवचनम् । ओ यथा विहितं कर्म कुरु इति यजमानो वदेत् । ओ करवाणी
 ति तत्प्रतिवचनम् । पुनः पुष्यादीन्यादाय । ओ अधकर्तव्य वृषोत्सर्गाङ्गभूत होम कर्तुममुक
 गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्य चंदन तांबूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे । इति हो
 तारं वृणुयात् । ओ वृतोस्मीति प्रतिवचनं । ओ यथा विहितं कर्म कुरु इति वदेत् । ओ क
 रवाणीति तत्प्रतिवचनमाततो होता वेदिकायां तुष केश शर्करादि रहितायां हस्तमात्रपरिमि
 त्स्वितेह] होमकरनेवाला तुष, केश, ककर आदि निषिद्ध वस्तु रहित एक हस्तपरिमाण (हस्तचौविश २४ अंगुल

पयस्विनीं आवाहयामि० ४१ ॥ ओं सुरर्षिः आवाहयामि० ४२ ॥ इतः मंत्रासु आवाहनं कर्त्तव्यं स्यात् । कर्त्तव्यं स्यात् । कर्त्तव्यं स्यात् । कर्त्तव्यं स्यात् ।
 २ नाम मंत्राकारकं गंधं । पुष्पं, घृणं, दीप आदिषु पूजां करे । पश्चात् वेदिके ईशातकोणमे कलशास्थापन विधिसे
 कलशास्थापनकरके चसके । कपर तामेकी रुद्रमृत्तमा घृणं, पुष्प आदि, पौडशोपचारसु पूजे । फिर
 तत्रैव ईशान्यां कलशास्थापनविधिना कलशां संस्थाप्याः तदुपरि ताम्रं रुद्रं निधाय । षो
 ढशोपचारैः संपूज्य । स्थंडिले पंचभूसंस्कारान् संपाद्य । रुद्रनामानमग्निं स्थापयेत् । तद्यथा
 राष्ट्रोत्तका स्थंडिल (वेदी) । वनाके अप्रिस्थापन । कर्त्तव्यं । तो बह्ला । एकं ब्राह्मणको वनाके, और

(कलशास्थापनमंत्रा) ओं मूरतिः मूर्तिरसीति मूर्त्तपुष्पेणम् । ओं घ्राण्यमसि पितृदि इति घ्राण्यपुष्पेणम् । ओं आजिष्ठा कर्त्तव्येति कलशा
 स्थापन । ओं स्वरुणस्योत्तं इति जलपूरण । ओं जसो पवित्रमसीति वस्त्रवेष्टनं । ओं या फलिनीरिति पूगीफल । ओं परिवाजप
 तिरिति पचरत्नानि । ओं हिरण्यगोमंति हिरण्यं । ओं गंधद्वारोमिति गंध । ओं याऽभ्योपधीरिति सर्वोपधि । ओं स्योना पृथिवीनो
 इति सप्तमृदु । ओं काडान्काडादिति दूर्वा । ओं अस्वत्येवोनिपदुमिति पचपल्लवान् । ओं पवित्रेस्यो इति दर्भपवित्रं । ओं पूर्णो
 दर्भोति पूर्णपात्र । ओं श्रीश्र ते रस्मीरिति श्रीफल च स्थापयेत् । ओं मनोवृत्तिरिति प्रविष्टा । ओं तत्त्वायामीति वरुणमावाह्य संपूज्य
 सर्वे सुश्रा । ओं कलशास्य मुखे, इत्याद्यभिमन्त्रण ।

अभ्युक्षण करके (तूष्णीं) मंत्र विगार अपने अगंगी कांसीके पात्रमें रखके दूसरे पात्रसे बंदकर तृण, काष्ठ आदिके ऊपर अभि स्थापन कर दें। अथ कुशकंडिका लिख्यते। अभिके दक्षिण भागमें एक १ हाथ भर भूमि छोडके शुद्ध दर्भा आदिका आसन दें। उसपर पूर्वको अगंगीका हिस्सा किया होई धर्मा विछाके पहलें बरखन क्रिये होये ब्राह्मणको अथवा (पंचाशत् ५०) कुशतृणके ब्रह्माको अभिके परिक्रमा कराके आसनपे बैठादेवे और कहेकी यथां तुम ब्रह्मा होके स्थित होवो। फिर एक प्रणीतापात्र अपने अगंगी रखके जलसे भरें उसको ऊपरसे त्रिकुशसे

पर्यन्तं पस्तिरणं कृत्वा। ततोऽग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकर
णार्थं साग्रमनन्तकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यं स्थाली चस्थाली संमार्जनार्थं
आछादित करके ब्रह्माकी तरफ देखता हुआ अभिके उत्तर तरफ दर्भाके ऊपर प्रणीतापात्र करदेवे (परिस्तरण) बर्हि-
नाम ६४ कुशाके पत्रोंकोही सो इसका चोय हिस्सा १६ लेके अभिकोणसे ईशानपर्यंत ब्रह्मासे अभिदेवंतक नैऋति-
कोणसे वायुकोणतक अभिदेवसे प्रणीतापर्यंत चार ४ चार पत्रोंको अभिके बाहरकर विछादेवे। फिर अग्निसे उत्तरकी
तरफ पश्चिमसे लेके पवित्र छेदनके अर्थ तीन ३ कुशा पवित्र करणके अर्थ बीचकापचा निकाला हुआ अग्रभागसहित
दो २ पत्र स्थापनकरें और प्रोक्षणीपात्र १ (आह्वय) घृतके लिये १ थाली (चरु) सीर पकानेकी १ थाली हाथमें रख-

अन्त्ये०

॥ २६ ॥

वा जानना) चतुरस्र (चार कोणयुक्त) वेदिकों कुशावों करके संमार्जनकरे (वहरै) इन कुशावोंओ ईशानकीणमे त्यागके शुद्ध गोमय और जलसे छीपके उसके बीचमें सुवेसें (प्रागग्र) अर्थात् पूर्वकी तरफ अग्रभाग जिनके ऐसी तायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिससुह्यातान् कुशानैशान्यां परित्यज्य । गोमयोदकेनोपलिव्यां तन्मध्ये सुवमूलेन प्रागग्रभादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुच्छिल्य । उल्लेखन क्रमेणाऽनामिका द्वादशम्यां मृदसुदृढस्य ऐशान्यां तत् क्षिप्त्वा तं देशं जलेनास्युक्ष्यात् तत्र वृष्णीं कांस्यपात्रस्थमग्निं स्थापयेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः परिस्तरणभूमिं त्यक्त्वा । तत्रासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्थीब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिण क्रमेणानीयात् त्वं मे ब्रह्मा भव इत्यभिधाय । ब्रह्माणं कल्पितासने उपवेशयेत् । ततः प्रणीतापात्रं पुरत इत्वा जलेनापूर्य्य । कुशैराच्छाद्य । ब्रह्मणो सुखं भवलोक्ष्याऽग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदद्यात् । ततः परिस्तरणम् । बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । प्रागग्रैः ॥ श्वतुर्भिर्दक्षैः आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निं पर्य्यन्तं नैऋत्याद्वायव्यान्तं अग्निः प्रणीता (प्रादेशमात्र) दश १० भंगुल रुंदी तीन ३ रैसाक्रमसे दक्षिणसेछेकें उत्तर उत्तर छित्तै । पश्चात् उनके ऊपर जलसे

गेरे । फिर पवित्रा प्रोक्षणीपात्रमें रस्वदेवै और प्रणीताका जल प्रोक्षणीमें घाले, प्रोक्षणीके जल करके, स्थापन करी
 होई। आज्यस्थाली आदि वस्तुवोंको सिंचे और अग्नि, प्रणीताके बीच प्रोक्षणीपात्रको स्थापन करदेवै। फिर घृतकी थालीमें
 घृत घाले, चरुयालीमें साफ कियाहुवा चावल गेरुके प्रणीताके जलसे घोत्रे। फिर प्रणीताका जल, दुग्ध डालके (पायस) सीर
 निधाय। प्रोक्षण्युदकं भूमौ त्रिः क्षिप्वा। पवित्रे प्रोक्षण्यां निधाय। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्ष
 णं। प्रोक्षणीजलेनासादितवरतुसेचनं। अग्निः प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय। आज्य
 स्थाल्यामाज्यं निरूप्य। चरुस्थाल्यां तंडुलान् निक्षिप्य। प्रणीतोदकेन तांस्त्रिः प्रक्षाल्य। तत्र
 प्रणीतोदकं दुग्धं च प्रक्षिप्य। आज्यं, पायसचरुं च गृहीत्वा। श्रपणार्थं युगपदग्नौ निधाय। तृणं
 प्रज्वाल्य। प्रदक्षिणमाज्यचर्व्वोः समंतान् भ्रामयित्वा। बन्धौ तत्प्रक्षिप्य दक्षिणहस्तेन सुवमा
 दायाधोमुखमग्नौ तापयित्वा। सव्ये पाणौ कृत्वा। दक्षिणहस्तेन संमार्जनकुशानामग्नैरग्रं मध्यैर्म
 पकनेके अर्थं चरुयाली और घृतयाली दोनों साथहि अग्निपर रस्वदेवै। फिर एक तृणजलके घृत, चरुके वाहरकर
 भ्रमाके अग्निमें डालदेवै दाहणे हायसे वाय लेवें। नीचेको मुखकर अग्निमें तपाके संमार्जन कुशाकरके अग्रभागसे

धुवेका मुस बीच जइसें लेकरा भाग पुंछे । फिर प्रणीताके जलसें प्रोक्षण करके आपणें दक्षिणभागमें स्थाप-
न करे और आज्य, सीर उगकें अपने अगाडो रक्खे आज्यसें उत्तर पीसाहोया पूषाका चरु रक्खे आज्यको तीनवेर
ऊपरको पवित्रसे उछाले और अछितर देसे. नृण, बाल, जानवर आदि होवे तो निकाल देवे । फिर प्रोक्षणीके ज-

ध्यं मूलेर्मूलं भुवं संमृज्याप्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्यापुनः प्रतप्य । दक्षिणतो निदध्यात् । ततः स्व
यमाज्यं चरुं च उद्रास्यास्वपुस्त आज्यं तदुत्तरतश्चरुं चरोरुत्तरतः सिद्धं पिष्टकचरुं च निधा
या आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पूय । अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनीपुनः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायाउ
पयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिश्रः
प्रक्षिपेत् । तत उपविश्यासपवित्र प्रोक्षण्युदकेनाग्निं पर्युक्ष्याप्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय । सज

लको तीन बेर उछाले और सडाहोकें उपयमनकुशा वामे हाथमें लेवे । प्रजापतिका ध्यान करताहुवा पलाशकी
तीन ३ समिध घृतसें तर करकर मंत्ररहित अग्निमें डाल देवे । फिर बैठके पवित्रसहित प्रोक्षणीके जलसें अग्निका
पर्युक्षण करे. और प्रणीताके पात्रमें पवित्रा रक्खे दाहणा गोडा जांचसहित बीचको करके कुशासे ब्रह्माके अन्वा-

रूपकरे । फिर जलतीहोई अग्निके भीतर सुवेसें (आज्य) घृतका होम करे, और अवशेष सुवेसें रहाहुवा प्रोक्षणमे प्रक्षेप करता जावे । (स्वाहा) यहै होमके (इदं०) यहै त्याग जानो (इहरति० १ इहरमध्वं० २ इहृति० ३ इहस्वधृति० ४

घनं दक्षिणजानुं निपात्य । कुशाग्नेण ब्रह्मणान्वारब्धः सुसमिद्धेऽग्नी आज्येनष्टुहुयात् ॥ तद्यथा
 ओं इह धृतिः स्वाहा इदनमये० १ ओं इह रमध्वठं० स्वाहा इदममये० २ ओं इह धृतिः स्वाहा
 इदममये० ३ ओं इह स्वधृतिः स्वाहा इदममये० ४ उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्
 त्स्वाहा इदममये० ५ ओं रायस्योपमस्मासुदीधरत्स्वाहा इदममये० ६ ततअन्वारब्धः ओं प्रजा
 पतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम १ ओं इंद्राय स्वाहा इदं० २ ओं अग्नये स्वाहा इदं० ३
 ओं सोमाय स्वाहा इदं० ४ इत्याधारावाज्यभागौ हुत्वा, पायसचरुमभिवार्ये, आदय, संस्रवांवि-

उपमृज० ५ रायस्योप० ६ यह छआहुती अग्निदेवके अर्थ होमे । (प्रजापतये०) यहै प्रजापतिके अर्थ । (इंद्राय०) यह
 इंद्रको (अग्नये०) यह अग्नि० (सोमाय०) यहै सोमके अर्थ होमकरे, इनको आधार आज्यभाग होमकतेहैं । फिर

पायस (सीर) लेकें त्यागकेविना । (अग्नये०१ रुद्राय०२ शर्वाय०३ पशुपतये०४ उग्राय०५ अशनये०६ भवाय०७ महादेवाय०८ ईशानाय०९ यहै नो जाहुतो अग्निमें देवै। पश्चात् पिष्टकचरु लेकें घृतसें तर करे और (पूषागान्वेतन०) ना एव छुहुयात् । ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये०१ ओं रुद्राय स्वाहा इदं० २ ओं शर्वाय स्वाहा इदं० ३ ओं पशुपतये स्वाहा इदं० ४ ओं उग्राय स्वाहा इदं० ५ ओं अशनये स्वाहा इदमशनये०६ ओं भवाय स्वाहा इदं० ७ ओं महादेवाय स्वाहा इदं०८ ओं ईशानाय स्वाहा इदमीशानाय ९ इति हुत्वा। पिष्टचरुमभिवार्यं छुहुयात् । ओं पूषा गान्वेतु नः पूषा रक्षतु सर्वतः । पूषा वाजसनेतु नः स्वाहा इदं पूष्णे न मम १ ॥ ततः पायसपिष्टकाभ्यां अग्नेरुत्तरतः, पूर्वोद्धे, ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते इति छुहुयात् । तत आर्ज्येन ओं भूः स्वाहा इदमग्नये०१ ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे०२ ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०३ इति मन्त्रसें होमके (इदपूष्णे०) यहै त्याग करदेवै । फिर पायस, पिष्टक, दोनोंमिलके अग्निके उत्तर पूर्व भागमें (अग्नयेस्विष्टकृते०) यह स्विष्टहोम करे और घृतकरके (ओभूः ओभूवः ओस्वः) यह मरुव्याहृतिहोम अग्नि वायु

मूर्यं इन्द्रदेवोके अर्थ होमके (त्वश्रोऽअग्ने० औंसत्वन्नो० औं अयाश्चाग्ने अयितेशतं० औं उदुत्तमं०) यैहं वारुण होम-
औं त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्टो वान्हितमः शोशु
चानो व्विश्वा द्वेषाठसि प्रमुसुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाम्यां०४ औं सत्वन्नोऽअग्ने व्वमो
भवोतीनिदिष्टोऽअस्य ऊपसो व्व्युष्टौ अव यक्वणो व्वरुणठे. रराणोवीहि मृडोकठे० सुहवोनऽ
एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाम्यां०५ औं अयाश्चाग्नेस्यनमीशास्ति याश्च सत्वमित्वमयाऽअसि ।
अयानो यज्ञं वहास्ययानोधिहि भेषजठे० स्वाहा इदमग्ने०६ औं ये ते शतं. वरुणं ये सहस्रं य
ज्ञियाः पाशा विततामहान्तः । तेभिर्नोऽअद्यऽसवितोतविष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ७ औं उदुत्तमं
व्वरुणपाशमस्मदवाधमं । व्विमद्रथम ठे० श्रथाय अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये
स्याम स्वाहाइदं वरुणाय०८ औं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०९ इति नवाहुतयो हुत्वा।
करे. । फिर० (औं प्रजापतये०) यैहं प्रजापतिके अर्थ होमके संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणिके पात्रका घृतप्राशन करे.

और आचमन करके पवित्रसे लिये होये प्रणीताके जलसे (सुमित्रियान०) इस मंत्रकरके यजमानके अभिषेक करे और (दुर्मित्रिया) यह मंत्र पठके प्रणीताका पात्र न्युञ्जकरके पवित्री अग्रिमै ढालदेवै. (यहा पूर्णाहुतिहोम और बर्हिहोम सूत्रकारने नहिलिखारहे; परतु के चित् मेयिलग्रथोमें लिखा हुवाहै. इसवास्ते विकल्प दिखताहै सो संश्रवमाशनमाचमनंच कृत्वा॥पवित्रभ्यांजलमानीय । तेन ओं सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्त्विति मंत्रेण शिरः संमृज्य । ओं दुर्मित्रियास्तस्मै संतुयोस्मान्द्वेष्टि यं च यं द्विष्म । इति प्रणीतोदकमैशान्यां दिशि निनयेत् प्रणीता विमोकः पवित्रप्रतिपत्तिः अत्रपूर्णाहुतिहोमो बर्हिहोमश्च कृताऽकृतः) (ततस्तरणक्रमेण बर्हि स्थाप्य हस्तेन ऐशान्यां क्षिपेत् । वा वन्हौ क्षिपेत्) ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ तद्यथा । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, ओं अद्य कृते तत्पृषोत्सर्गाङ्गभूत होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिं शिष्टाचार हो जैसा करलेणा चाहिये) फिर निछाई हेई बर्हि दर्मा उठाके ईशानदिशामें रखदेके अथवा अग्रिमै ढालदेवै और ब्रह्माके अर्थ पूर्ण पात्र दक्षिणासहित प्रदानकरे । पूर्णपात्रदानकरणेके अनंतर होताके अर्थ सुवर्ण. वस्त्र कास्य

पात्राणि दक्षिणा देके (ओं नमस्ते रुद्र०) इत्यादि रुद्राध्यायका १६ मंत्र पठे । पश्चात् आचार्यं वृषभके कुंकुम
 केशर (रोली) आदिसं त्रिशूल, और चक्र लिखे । फिर, लोहारकेद्वारा दक्षिण पार्श्वमें त्रिशूलका और वामपार्श्वमें
 चक्रका चिन्ह करादेवे, अथवा दक्षिणपार्श्वमें चक्र और वाम पार्श्वमें त्रिशूल करे परंतु त्रिष्टम्भपरा व्यवहारसे चिन्ह-
 देवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेनतुभ्यमहं संप्रददे इति ब्रह्मणे दक्षिणां
 दद्यात् । ओं स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो होत्रे सुवर्णं वस्त्रयुग्मं कांस्यानि दक्षिणात्वेन दत्त्वा
 प्रतिवचनानंतरं । ओं नमस्ते रुद्रेति षोडशर्ची रुद्राध्यायं जपेत् (रुद्रजपाऽकरणे प्रत्यवायोभव
 ति) तत आचार्यः कुंकुमेनवृषस्य त्रिशूलं चक्रं च कृत्वा (त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे चक्रं तु विन्य
 सेदिति वचनात्) लोहकारमाहूय । दक्षिणपार्श्वे त्रिशूलेन परस्मिन् चक्रेण व्यत्ययेन वा यथा
 चारं अंकयेत् । ततो वत्सतरीसहितं वृषभं ओं हिरण्यवर्णाः शुचय पावका यासु जातः कश्य
 करणा चाहिये और यै अंकन मेथिलीयोंने औरहातरसे लिखाहै सो उनहीकी सांप्रदा समजणी चाहिये । फिर अंक
 न करणेकेबाद नुडीसहित वृषभको (हिरण्यवर्णाः०) इत्यादि च्यार मंत्रोंकरके और (शन्नो देवी०) इस मंत्रसे

अन्त्ये०

॥ ३१ ॥

स्नानकराके लोहकी घंटा, पेंजगी, सुवर्णपट्टिका आदि ब्राह्मूषण पहरावे और सुशोभित करके, (गायत्री-अधम-
पो यार्भिन्द्रः । याऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानः आपः शं स्यो नाभवंतु ? ओं यासां राजा
वरुणो याति मध्ये सत्यानृते ऽअवपश्यन् जनानाम् । या ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽआ
पः शं स्यो नाभवंतु २ ओं यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्ष्यं याऽअन्तारिक्षे बहुधा भवंति । या
ऽअग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽआपः शं स्यो नाभवंतु ३ ओं शिवेन माचक्षुषा पश्यतापः
शिवया तत्वोपस्पृशत त्वचं मे । वृतरुच्युतः शुचयो याः पावकास्तानऽआपः शं स्यो नाभ
वंतु ४ इति चतसृभिः । ओं शन्नो देवी रभिष्टयऽ आपो भवंतु पीतये । शंघ्योरभिस्त्रवंतु नः ?
इत्यनेन च स्नापयित्वा । लोहवंदानूपुर कनकपट्टिकादिभिः सर्वानलंकृत्य । सावित्रीमधमर्षणं
स्त्राध्यायं पुरुषसूक्तं । ओं यद्देवा देवहेडनमिति ऋक् त्रयं च जपेत् । ततो वृषभस्य
दक्षिणकर्णे । ओं पिता वत्सानां पतिरध्वानामथो पितामहतां गर्गराणां वत्सो जरायुः प्रति
पण, रुद्राध्याय, सहस्रशीर्षांयद्देवा देवहेडन०) इत्यादि कुण्मांड मूक्त इण मंत्रांको पाठ करे । पश्चात् वृषभके दक्षि-

मा० टी०

॥ ३१ ॥

णकान्तं (ओं पिता वत्सानां० वृषो हि भगवान्०) यहै २ मंत्रजपके, उत्तरको मुख कियाहुवा सव्यसे वृषभका
 पुच्छ पकटकें संकल्प उच्चारण करे और प्रेतके निमित्त ईश्वरके अर्पण करदेवे और संकल्पका जल पृथिवीपे
 धुक् पीपृषऽआमिक्षा घृतं तद्भस्परेतः १ वृषोहि भगवान्धर्मश्रुण्पादप्रकीर्तितः । वृणोमि त्वा
 महं भक्त्या स मां रक्षतु सर्वतः २ इतिमंत्रद्वयं जपित्वा - । उदङ्मुखः सव्येन वृषपुच्छं
 मृहीत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादाया ओं अधैकादशेन्हि, असुकगोत्रस्याऽसुकप्रेतस्य प्रेत
 त्वविमुक्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गलोकप्राप्तिकाम एनं वृषं रुद्रदेवतं यथाशक्त्यलंकृतं गंधपुष्पाद्याद्यचितं
 त्रिशूलचक्रांकितं वत्सतरीयुतं अहमुत्सुजामि । ओं एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडन्ती
 श्र रथप्रियेणमानः । साप्यजनुषासुभगारायस्पोषेण समिषा मदेम इत्युक्त्वा । सतिलमुदकं
 भूमौ क्षिपेत् । (नीलवृषे नीलपद प्रक्षेपः) इत्युत्सृज्य । ऐशान्यां दिशि पंचपदानि चालयेत् ।
 ततो त्वसतरीसहिताय वृषभाय नमः० इति मंत्रेण पाद्यार्थानुलेपन पुष्प धूप दीप नैवेद्या
 त्यागदेवे । इस तरे वृषोत्सर्ग करके ईशानकी तरफ पांच पैर धरे और (वत्सतरीसहिताय वृषभाय०) इस मंत्रसे

बछडीसहित वृषभकी. अर्घ. चदन पुष्प घूप. दीप. नैवेद्य आदि षोडशोपचार पूजन करके। बछडीयोंके बीच खड़े होये वृषभको (ओं मयोभूरभि० १ यास्ते अग्ने० २ यायोदेवाः० ३ रुचन्नो० ४ तत्वायामि० ५ स्वर्णधर्म० ६) इत्यादि छ दिभिः सांगं वृषभ संपूज्य । ततो वत्सतरीमध्यगतं वृषभमभिमंत्रयेत् । तत्र मंत्राः। ओं मयो भूरभिमाद्याहि स्वाहा, मास्तोसि मस्तां गणः शंभूर्मयोभूरनिमाद्याहि स्वाहा, वस्यूरसि हुव स्वाच्छंभूर्मयोभूरभिमाव्वाहि स्वाहा १ ओं यास्ते अग्ने सूर्ये रुचोदिवमातन्वंतिरश्मिभिः ता भिन्नो अद्य सर्वाभीरुचेयनायनस्कृधि २ यात्रीदेवाः सूर्येरुचोगोष्वश्वेषुजारुचः इंद्राग्नीताभिः सर्वाभीरुचनोधत्त बृहस्पते ३ रुचन्नोधेहि ब्राह्मणेषु रुच ठं० राजसुनस्कृधि रुचंविश्येषु शूद्रेषु मायिधेहिरुवा रुचम् ४ तत्वायामि ब्रह्मणा० ५ स्वर्णधर्मः स्वाहा, स्वर्णार्कः स्वाहा, स्वर्ण शुक्रः स्वाहा, स्वर्णज्योतिः स्वाहा, स्वर्णसूर्यः स्वाहा, ६ इति। ततोऽपसव्यं कृत्वा। दक्षिणासुखः पातितवामजानुः यव तिल जल वृषपुच्छ मोटकान्यादाय । ओं स्वधापितृभ्यो मातृभ्यो मंत्रोत्तं प्रार्थना करानि चाहिये। पश्चात् अपसव्यहोके दक्षिणको सुख. पातित वामजातुकरे और यव तिल जल वृषभ पुच्छ

दर्मा ग्रहण करके (ओ स्वधापितृम्य०) इत्यादि मंत्रोंके द्वारा पितृत्तर्पणकरै; और अजली देवै । फिर. यजमान
 ब्राह्मणोंको बुलाके उच्चारणकरै और कहैकी इण वछडीयोका घृत. दूध. किसीको नहि पीणा चाहिये; और वृषभ
 (साड) को हल. बोजे आदिकेलिये नहि जोडे इणकातो केवल गोमूत्र. गोमयही लेणा योग्यहै. यहै सर्वको
 बहुभ्यश्चापि तृप्तये, मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चान्ये पितृपक्षजाः। गुरुधशुरबंधूनां ये । कुलेषु स
 मुद्भवाः । ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः। वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभंतां प्रीतिमुत्तमामि
 ति मंत्रेणांजलित्रयं दद्यात् । ततो दाता ब्राह्मणानाहूय वक्रोक्तिभिः पदैः (न चाज्यं नच
 ततक्षीरं पातव्यं केनचित्कचित् । नवाह्योसौ वृष श्रेषामृते गोमूत्र गोमये ?) इति श्रावयेत् ।
 ततः पायसं श्रपयित्वा । त्रिप्रभृतीन् यथाशक्ति यथासंभवं ब्राह्मणान् भोजयेत् । ततो बहुतोय
 यतृणेरण्ये अथवा बहु गोधन संकुले गोकुले वत्सतरियुतो गोपतिः क्षेपणीयः । निर्गती गो
 सुणादेवै । पश्चात् पायस (खीर) पकाके तान या ५ शक्तिमाफिक ब्राह्मण भोजन कराके बहोत घास, दुर्वा
 आदियुक्त जगलमें अथवा भोतसी गौके समुहमें बछडी सहित वृषभको रसदेवै । वृषभ विसर्जन करणके अनंतर

ब्राह्मणोंको दक्षिणा रुद्रकुम्भ देके विसर्जन करे और विष्णुस्मरण करे । इति वृषोत्सर्गः ॥ धेनुदानकी विधि लिखते हैं मृतकके दूसरे दिन । शुद्ध भूमिमें शास्त्रके लिखे होये गुणोंवाली गौ. पूर्वका मुख करके स्थापन करे और उत्तम ब्रा-

पती विप्रेभ्यो दक्षिणां रुद्रकुम्भं च दत्त्वा । विष्णुं स्मरेत् । तत अनेन वृषोत्सर्गेण प्रेतस्य प्रेतत्व-
विमुक्तिरस्तु इति पठेत् । एवं वृषोत्सर्गविधिं नरो यः करोति भक्त्या निज पूर्वजानां । उद्धृत्य
तांडुर्गतिपंकमग्नान् स्वयं सलोकं समुपैति शंभोः ? इति वृषोत्सर्गपद्धतिः समाप्ता- ॥

॥ अथ धेनुदानविधिः ॥ तत्र आशौचान्तद्वितीयेन्हि पुण्यदेशे यथोक्तक्षणवतीं गां ग्राह्यसु
स्त्रीभवस्थाप्य यथोक्तक्षणं सत्पात्रं तदभावे अनिषिद्धब्राह्मणं उपवेश्य । स्वयं गोपुच्छदेशे प्रा
इमुख उपवेश्य । सव्येन आचम्याप्राणानायम्याकुशत्रय तिल जलान्यादायादेशकालौ संकी

क्षणको बैठाके सुद यजमान गौके पुच्छके पास पूर्वको मुख करके बैठे । सव्यसे आचमन, प्राणायाम, करे, और
कुरानय तिल जल लेक सकल्प उच्चारण करे । गौ ब्राह्मणकी पूजा करके परिक्रमा देवे. प्रणाम करे । फिर गौका पुछ,

कुशत्रय तिल जलसहिब लेकें, सवत, मास, पक्ष, तिथि, वार आदिका उधारण करै (अमुकगोन नाम वाले प्रेतका प्रेतभाव निवृत्त होनेके अर्थ और स्वर्गप्राप्तिके अर्थ यहै गो बछडेसहित, दूध देनेवाली, सुवर्णशृंग, रौप्य (चादी) त्र्यं (अपसव्येन) ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकस्वर्गकामो गोदानम हं करिष्ये (सव्यं) तदंगतया गो ब्राह्मणस्य च पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य । ब्राह्मणं पाद्यादिभिः संपूज्य । हस्ते पुष्प चंदन तांबूल वासांस्यादाय । ओं अद्य करिष्यमाणगोदानार्थं ममुकगोत्रममुकशर्माणं त्वामहं वृणे इति वृणुयात् । ओं वृतोस्मीति प्रतिवचनम् । ततो गां गंधादिभिः संपूज्य । प्रदक्षिणां कृत्वा प्रणम्य उदङ्मुखो गोपुच्छं गृहीत्वा । कुशत्रय तिलजला न्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य, ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक स्वर्गकाम इमां गां सवत्सां पयस्विनीं सुवर्णशृंगीं रौप्यशृंगं ताम्रपृष्ठीं वल्लयुगच्छन्नां कांस्यपानीयपात्रां पैत्तिल दोहां रुद्रदेवतां अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुम्यमहं संप्रददे । इति संक के मूर तामेकी पीठ, वल्ल, कासीका पीनेका पात्र, पित्तलका दोहणेका पात्र, इत्यादि सामग्रियुक्त, रुद्र देवता, अमुक

गोन नाम वाले आपके अर्थ देताहों) ऐसे पठके संकल्पका जल पुच्छसहित ब्राह्मणके हाथमें दे देवै । फिर (ओं-स्वस्ति) ऐसे कहणेके अनंतर (ओं यज्ञ साधन०) इस मंत्रसे प्रार्थना करके दान प्रतिष्ठाके अर्थ सुवर्ण दक्षिणा देवै ल्य । गोपुच्छं सतिल कुशोदकं विप्रहस्ते दद्यात् । ओं स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः ओं यज्ञ साधनभूता त्व विश्वस्यावप्रणाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा ? इति पार्थ्य । दक्षिणा द्रव्यादिकमादाय । ओं अद्य कृतैतत् गोदानप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतमसुकगो त्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं संप्रददे । इति दक्षिणां दद्यात् । ततः प्रति गृहीता ओं स्वस्तीत्युक्त्वा । यथाशाखं ओं कोदात्कस्माअदात्कामोदात्कामायादात्कामो दा ता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्तै । इतिकामस्तुतिजपेत् । ततो दाता अनेन गोदानाख्य यज्ञकर्मणाश्री नारायणः प्रीयतामिति पठित्वा । विप्रं विसृज्य । कर्मपूर्तिकामो विष्णुस्मरेत् । और लेनेवाला ब्राह्मण (ओं स्वस्ति) कहके (ओं कोदात्कस्मा०) यहै काम स्तुतिपठे । फिर विष्णुके अर्पण करके ब्राह्मणको विसर्जन करे । कर्म पूतिके अर्थ विष्णु स्मरण करे ।

इति गोदान विधिः ॥ अथ एकादशाह श्राद्ध लिख्यते । प्रातः काल नदी, तलाव आदिमें स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करे । संध्या, ब्रह्मयज्ञ, जप आदि नित्यक्रिया समाप्त करके नदीके तीर या देवस्थानमें जाकर श्राद्धभूमि शुद्ध करे; गोमयका लेप देवे; जलता हुआ अंगार फेरे. सुपेद मट्टी या बालु रेत विछावे; तिल पीलिसरसों विकीरण करे । फिर इतिगोदानविधिः समाप्तः ॥ ॥ अथेकादशाह श्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र प्रातः नद्यादौ स्नात्वा । शुद्धवाससी परिधाय । संध्यादि नित्यक्रियां कृत्वा । नद्यादि तीरे देवालये वा गत्वा । तत्र श्राद्धभूमिं परिकल्प्य, गोमयोदकाम्यामुपलिप्य, ज्वलदंगारैः संशोध्य, गौरमृत्तिकयाच्छाद्य, तिलैर्गौरसर्षपैश्च विकीरेत् । ततो मध्याह्ने, पुनः स्नात्वा, शुचिदेशे गोमयोपलिप्तभूमौ तिलान् विकीर्ये । तत्र सर्पिंडादिद्वारा स्वयं वा नूतनमृन्मयभांडेन सकृत् षोडशश्राद्धार्थं पाकं कुर्यात् अथवा आमन्त्रेण संपादयेत् । ततः पाके सिद्धे मध्याह्ने पुनः स्नान करके शुद्ध स्थानमें गोमयका लेप दीर्घहृद् जगें तिल गैरे, और तहां भाई, बांधव आदि द्वारा नवीन मट्टीके या घातुके पात्रमें षोडश श्राद्धके अर्थ पाक तैयार करे ।

पाक होनेके बाद आमनके समीप तिलोंके तेल करके दीपक जलावै । काग, मुर्गा, श्वान, सूर आदि निगिह जानवरोंको हठादेवै; और श्राद्ध मकानके बाहरफर वग्न लपेट देवै । फिर श्राद्धकर्ता आसनपै प्राङ्मुख होके बैठे पगोंके तले त्रिकुश स्थापन करे । कर्म पात्रमें जल, तिल, गंध, पुष्प घालके सब्यसे आचमन, प्राणायाम करे । पश्चात्

आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य, संस्थाप्य । काककुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतृनप सारयेत् । श्राद्धदेशावरणंच कुर्यात् । ततः कर्ता स्वासने प्राङ्मुख । उपविश्य । पादयो रथः कुशत्रयं धत्वा । कर्मपात्रं जल तिल गंध पुष्पादिभिः प्रपूर्य, सब्येन आचम्य, प्राणानाय म्य, कुशोपग्रहः । ओं अपवित्रः पवित्रो वा० ओं पुंडरीकाक्षः पुनात्विति कुशत्रयानीतजले न श्राद्धद्रव्याण्यात्मानं च प्रोक्षयेत् । तत ओं भूम्यै नमः । ओं भगवत्यै गयायै नमः । ओं भगवते गदाधराय नमः । इति नत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य- कुशा धारण करके (अपवित्र० पुंडरीकाक्षः पुनात्) इस मंत्रसे श्राद्धसामग्री और अपने शरीरको जलसे प्रोक्षण करे । फिर भूमि, गया, गदाधरको नमस्कार करके कुशत्रय तिल जल लेवे सकल्प पठके अपसव्य होवे और कहेकी अमु-

कप्रेतका प्रेतत्वनिवृत्ति और पितृत्वप्राप्तिके अर्थ अथ, मासिक, त्रिपाक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीयमासिक, चतुर्थ, पंचम, ऊनपाणमासिक, पाणमासिक, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, ऊनाब्दिक, द्वादशमासिक, यह सोलहें श्राद्ध अपने २ समयपर करने योग्यथा परंतु द्वादशकेदिन सपिंडन श्राद्ध करनेके अधिकारके अर्थ आज ग्यारहवें

(अपसव्येन) अद्यामुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्ति पूर्वकं पितृसमत्व प्राप्त्यर्थं आद्य, मासिक, त्रैपाक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीयमासिक, चतुर्थ, पंचम ऊनपाणमासिक, पाणमासिक, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादशमासिक, ऊनाब्दिक, द्वादशमासिकानि स्वका लकर्तव्यानि षोडशश्राद्धानि सपिंडीकरणाधिकारसिद्धयर्थमेकादशेहन्यपकृष्य एकोद्दिन विधिना करिष्ये । इतिसंकल्पयेत् (एकादशमासाभ्यंतरे ऽधिमासपाते षोडशपदस्थाने सप्त

दिन संपूर्णके खांचकर एकोद्दिष्टविधि करके एकसाथहि करताहूँ । यह उचारण करके संकल्पका जल भूमिपें त्याग देवे यहि ग्यारह मासके भितर अधिक मास होवे तो सतर १७ श्राद्ध करे. अर्थात् अधिकमासको १ अधिक करे । फिर गाय-

त्रीका तीनवेर जप करके (देवताम्यः०) यहे मंत्र तीनवेर पठे, और तिल, पीलिसरसो लेके (नमो नमस्ते०) इस मंत्रसे सर्वत्र विकीरण करे, और तिल कुशाकी निवी कडी मागमें धारण करे । फिर एक पात्रमें जल भरके दमासे

दशपदंप्रयोज्यं) ततो गायत्री त्रिर्जापित्वा । ओं देवताम्यः पितृभ्यश्च इति त्रिर्जापेत् । ततः तिल गौरसर्पपान् गृहीत्वा । ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः १ इति मंत्रेण सर्वत्र विकीर्य निवीबंधं कुर्यात् ॥ ततः कस्मिंचित्पात्रे जलं गृहीत्वा दमैरालोड्य । ओं यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा व्ययम् । अग्निर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ढ० हसः १ यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि च कृमा व्ययम् । वायुर्मा तस्मादेन नसो विश्वान्मुञ्च त्वर्ढ हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि षडृमा वयम् । सूर्यो मा तस्मादेन सो विश्वान् सुञ्च त्वर्ढ० हसः ३ इति कूर्मांडसूक्तेनाऽभिमंत्र्य । ओं श्वादि दृष्टदृष्टिपातात् । शिल्बे (यद्देवा देव हेडन०) इत्यादि कूर्मांडसूक्त पदके अभिमंत्रण करे, और श्वान, गुर निपिद्ध जानवरोंकी कृष्ण

तथा शूद्र आदिके संपर्कदोषसे इण पाल्तामादि सामग्रीकी पवित्रता होवो, ऐसे कहके जलकरके पाक प्रोक्षण करें। फिर
 अपसव्य, दक्षिणमुख, पातितवामजानु करके अपने अगाडी सोलह १६ चट स्थापन करें। तिलोंको लेके चटोंको स्पृश
 शूद्रादि संपर्कदोषाच्च । पाकादिनां पवित्रतास्तु इत्युक्त्वा, तेन पाकं प्रोक्षयेत् । ततोऽपसव्यं
 कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानुः (स्वात्रे दक्षिणाग्रान्षोडश कुशचदान् संस्थाप्य । कुश
 तिलान् गृहीत्वा चदान् स्पृष्ट्वा । ओं इह लोकं परित्यज्य गतोसि परमां गतिं। मनसा वायुरु
 पेण चटे त्वाहं निमंत्रये ३ इति मंत्रेण सर्वत्र तिलान् विकीर्ये। अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्या
 दि षोडश श्राद्धनिमित्तोयं ते क्षण उपतिष्ठतामिति क्षणं दत्त्वा पाद्यादि देयं) । अथासना
 दि दानम् । तत्र कुशत्रय, तिल जलान्यादाय । ओं अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत आद्य श्राद्ध
 इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा ऋष्टु कुशत्रयरूपमासनं प्रथमं सर्वतः पश्चि
 कर्ताहुवा (इहलोकं०) इस श्लोकसे निमंत्रण करें । फिर तिल गेरके क्षण, पाद्य, अर्घ्य आदि दान करें (अथास-
 नादि दानं) कुशत्रय तिल जल लेवे, प्रेतका गोत्र, नाम उच्चारण करें । हे प्रेत, आद्य श्राद्धके निमित्त यह कुशाका

त्रीका तीनवेर जप करके (देवताम्यः०) यहै मंत्र तीनवेर पठे, और तिल, पीलिसरसों लेके (नमो नमस्ते०) इस मंत्रसे सर्वत्र विकीरण करे, और तिल कुशाकी निवी कटी मागमें धारण करे । फिर एक पात्रमें जल भरके दमासे दशपदंम्रयोज्यं) ततो गायत्री त्रिर्जपित्वा । ओं देवताम्यः पितृभ्यश्च इति त्रिर्जपेत् । ततः तिल गौरसर्पपान् गृहीत्वा । ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः १ इति मंत्रेण सर्वत्र विकीर्य निवीबंधं कुर्यात् ॥ ततः कस्मिंचित्पात्रे जलं गृहीत्वा दमैरालोड्या ओं यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा व्यग्रअग्निर्मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ह० हसः १ यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि च कृमा व्यग्र। वायुर्मा तस्मादेन नसो विश्वान्मुञ्च त्वर्ह हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चकृमा वयग्रसूर्यो मा तस्मादेन सो विश्वान्मुञ्च त्वर्ह हसः ३ इति कृष्णामंडसूक्तेनाऽभिमंत्र्य । ओं श्वादि इष्टदृष्टिपातात् । शिखरे (यद्देवा देव हेडन०) इत्यादि कृष्णामंडसूक्त पठके अभिपत्रण करे, और स्नान, गूर निषिद्ध जानवरोंकी दृष्टिसे

चतुर्थमासके अर्थ ६ पाचवें मासके अर्थ ७ ऊन पाणमासके अर्थ ८ पाणमासके ९ सप्तम मासके १० अष्टम मासके
 निमित्त इदमासनं ५ पुनः ओं अद्यामुक० प्रेत चतुर्थ मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते०
 ६ ओं अद्यामुक० प्रेत पंचम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ७ पुनः ओं अद्या
 मुक० प्रेत ऊन पाणमासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ८ ओं अद्यामुक० प्रेत पाणमासिक
 श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ९ ओं अद्यामुकगोत्र० प्रेत सप्तम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमास
 नं ते० १० ओं अद्यामुक० प्रेत अष्टम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ११ ओं अद्यामु
 क० प्रेत नवम मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० १२ ओं अद्यामुक० प्रेत दशम मासिक
 श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० १३ ओं अद्यामुक० प्रेत एकादश मासिक श्राद्धनिमित्त इदमा
 सनं ते० १४ ओं अद्यामुक० प्रेत ऊनाब्दिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते मया दीयते तवोपति
 ष्टामित्युत्सृजेत् १५ ओं अद्यामुकगोत्र० प्रेत द्वादश मासिक श्राद्धनिमित्तक इदमासनं ते
 १६ नवम मासके १७ दशम मासके १८ एकादश मासके १९ ऊन वार्षिकके अर्थ २० द्वादश मासके अर्थ सोहल-

आसन तुमहों देताहों सो मेरा दियाहुया आपकों प्राप्त होवो ऐसैं कहकैं सीधी त्रिकुशाका १ आसन पश्चिम तरफ दक्षिणको फण करकैं स्थापन करदवै १ परंत. (द्विगुण भुज) दूणी करी होई और वंटो होई दर्माका (मोटक) न देवै; कारण (विष्णुपुराण, हेमाद्रि, निर्णयसिंधु, बृहद्द्रुडपुराण, वायुपुराण, कारिका, अंत्येष्ट्यर्क, विश्वनाथी, धर्मसिंधु भगंतं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ? (नात्र द्विगुणभुज (मोटक) रूपं सपिंडीकरणं यावद्वज्रुदभैः पितृक्रिया इति विष्णुपुराणीयात्) पुनः कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्यामुक० प्रेत मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते मया दीयते० २ पुनः कुशत्रयादी० ओं अद्यामुक० प्रेत त्रिपाक्षि क श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ३ पुनः कुशत्रयादी० ओं अद्यामुक० प्रेत द्वितीय मासिक श्राद्धनिमित्त इदमासनं ते० ४ पुनः ओं अद्यामुक० प्रेत तृतीय मासिक श्राद्ध आदि) मंूर्ण मशानिवधोंमें निषेध कियाहै. अर्थात् सपिंडीकरण श्राद्धके पहले सीधी त्रिकुशासं क्रिया करणी। सपिंडी के अनंतर मोटकरूप दर्मा धारण करणी चाहिये १ इसीतरै । फिर कुशत्रय तिल, जल लेकें मासिक श्राद्धके निमित्त च दूमरा आसन देवै २ और त्रैराक्षिक श्राद्धके अर्थ तीसरा ३ द्वितीयमासिकके अर्थ चौथा ४ तृतीयमासके अर्थ ५

पत्र, घालदेवै । फिर प्रेतके अर्धपात्रोंकी संपत्ति पूर्ण होई ऐसे पढके-पहला १ पात्र बायें हाथमें लेके पवित्री, याने
 कुशा ना एक पत्ता, पत्तलके ऊपर अगाडी रखे, और पात्रके ऊपर दाहणाहाय रखके (या दिव्या आपः०) इस मंत्र
 प्रेतपात्राणामर्धाचिनविधेःपरि पूर्णताऽस्तु इति पठित्वा । प्रथम पात्रस्थं पवित्रं पलाशपत्रे
 हृत्वा । अर्धपात्रमादाया । ओं या दिव्या आपः पयसा संबभूदुथ्याऽअन्तरिक्षा उतैपार्थिवीयाः
 हिरण्यवर्णाः यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शठे० स्यो नाः सुहवा भवंतु । इति मंत्रेणाभिमंत्र्य
 दक्षिण हस्तेन । ओं अधासुकगोत्र० असुकप्रेत आद्य श्राद्धे एषते हस्तार्वो मया दी
 यते तवोपतिष्ठतामिति पितृतीर्थेन प्रथम पवित्रोपरि अर्धजलमुत्सृजेत् । अर्धपात्रं च पुरतः
 स्थापयेत् ? । ततो द्वितीयपात्रस्थं पवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा । अर्धपात्रं गृहीत्वा । ओं या दि
 व्या इत्यभिमंत्र्य । ओं अधासुकगोत्र० प्रेत मासिक श्राद्धे एष ते हस्तार्वो मया दीयते तवो
 करके अभिमंत्रण करे । फिर दाहणे हाथमें लेके । प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करताहुवा आद्य श्राद्धके निमित्त पंचे
 पर स्थापन करिदेई पवित्रीपे अर्धका जल देदेवै और अर्धपात्र अगाडी स्थापन करदेवै, १ । इसीतरे दूसरे पात्रको लेके

र्वा आगन सर्के पूरे तरफ देवे १६. अधिकमास होवे तो सतरवां १ अधिक देना चाहिये । फिर (अपहता०) यह मंत्र पढ़के तिल आसनोपर रिकीरण करे, और सोलह १६ पात्र (डोनों) में एक, एक, दर्माका पत्ता दक्षिणको अग्र-भाग करके रखे (इसीका नाम एक, एक परित्राहै) अथवा एकहि पत्ता सबके अर्थ स्थापनकरे । क्युंकी बोहि पत्र

मया दीयते तवोपतिष्ठामिति षोडशं सर्वतः पूर्वगतामुत्सृजेत् १६ । तत ओ अपहताऽअसुरा रक्षाई०सि वेदिपद इति वामावर्त्तेन सर्वत्र तिलान् विकीर्य । षोडशाऽर्घपात्रोपरि प्रत्येकं दक्षिणाग्रं पवित्रैकैकं घृत्वा । तेषु ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवतु पीतये । शं व्योरभि श्रवन्तुन इति प्रत्येकं जलं क्षिप्त्वा । ओं तिलोसि सोम देवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वयं वा यित्बृह्लोकान्प्रीणाहि नः । इति प्रत्येकं तिलान् प्रक्षिप्य । तूष्णीं गंध पुष्पाणि प्राक्षिपेत् । ततः

सर्वजगं अर्गं देविदुक्ते उवा २ कर रखता जाये, । पचा रखनेके अनंतर, संपूर्ण पात्रोंमें (शन्नो देवी०) यह मंत्र पढ़ता हुआ जल डाले, (तिलोसि सोमदेवत्यो०) इस मंत्रके द्वारा सर्व पात्रोंमें तिल गेरे; और मंत्रसहित, गंध, पुष्प, बृहसी-

आदि मंत्र जगहें स्थापन करके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करता हुआ प्रेतके अर्पण करदेवै और संकल्प छोडके इण षोडश श्राद्धोंकी पूजा परिपूर्ण होवो ऐसे प्रार्थना करे और जलकी कार आसनोके बारह करदेके चोकोण या

ल जलान्यादाय । ओं अद्यामुक्कगोत्रं अमुकप्रेत आद्यादि द्वादश मासिकान्त षोडश श्राद्ध
निमित्तकानि एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल वासांसि एक तंत्रेण ते मया दीयन्ते तवोप
तिष्ठतामित्युत्सृजेत् । तत अभीषां षोडश मासिक श्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णताऽस्तु
इति पठित्वा । जलेन आसनानि वेष्टयित्वा चतुष्कोणादि मंडलं कुर्यात् (अत्र परकीयभूमौ
श्राद्धकरणे ओं इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्यो नम इति घृतादियुक्तमन्नं दर्भेषूत्सृजेत्) तत उ
ष्णमन्नं ताम्रादिपत्रेण प्रत्येकं षोडश पात्रेषु परिविश्य, घृत जल व्यंजनानि चोपनीय, अन्ने

त्रिकोण मंडल करदेवै । यहां दूसरे कामका न होने तो उसके मरेहोये मालरुको (इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्यः) इस
मंत्रसे चलिदान करे । पश्चात्त्रिगण २ अन्न तामे आदिके पात्र करके छुदा २ या (एकही पत्रमें) घृत, जल, (व्यंजन) शाग

पत्नी पत्न्यं रसे (या दिव्या०) इमं अभिमंत्रण करके प्रथम मासके निमित्त अर्घ देवै, ३ और तीसरे पात्रको लेके, पितृशक्त श्राद्धनिमित्तक०३। चोथेसे दिनीयमास निमित्त०४। पांचवेंमें तृतीय मास०५। इसीतरे, छठे०६। सातवें०७। आठवें०८। नौवें०९। दशवें०१०। ग्यारहवें०११। बारहवें०१२। तेहरवें०१३। चौदहवें०१४। पंद्रहवें०१५। सोलहवें०१६। पात्र

पतिष्ठनामिति पवित्रोपरि पूर्ववद्दद्यात् । पात्रं च पुरतः स्थापयेत् एवं त्रिपाक्षिक०३ द्वितीय मासिक०४ तृतीय मासिक०५ चतुर्थ०६ पंचम०७ ऊन पाण्मासिक०८ षण्मासिक०९ सप्तम०१० अष्टम०११ नवम०१२ दशम०१३ एकादश०१४ ऊनाब्धिक०१५ द्वादश मासिक आ छनिमित्तं चार्वं पूर्ववद्दद्यात् (अत्र पात्राणां उत्तानत्वं एव नन्दुञ्जवत्त्वम्) ततो गंधादि दानम् । तत्र नायत्सर्वेषु चेटेषु । गंध पुष्प धूप दीप तांबूल वस्त्रादीन्यासाद्य । हस्तैः कुशत्रय ति करैः पदलेकी ताह पवित्रोक्ते पत्रे रूपर अर्घ जल देता जाते, और अर्घपात्र अगाडी रखे । यहां अर्घपात्रको सुवाहि रम्पणा चाहिये (नुञ्ज) मुद नहि करणा चाहिये । पश्चात् गंध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, पूर्णफल, यज्ञोपवीत, बख

करके बायें हाथसों अन्नपात्र स्पर्श करत। हुवा दाहणे हाथमें कुशत्रय तिल जल लेके संकल्प उच्चार करै। हे प्रेत,
आप श्राद्धनिमित्तक यहै घृतादि सामग्री सहित उचम अन्न आपके अर्थ देताहूं सो तुमको प्राप्त होवो। ऐसा कहके,

करण पात्रं स्पृशन्। दक्षिणहस्ते कुशत्रयादान्यादाय। औं अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेत आद्य श्राद्धे
इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यासन वामभागे जलमुत्सृजेत्
१ तत अनेनैव क्रमेण द्वितीयपात्रं वामकरेण स्पृशन् दक्षिणकरे कुशत्रयादीन्यादाय औं
अद्यामुकगोत्रं प्रेत मासिकश्राद्ध इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं ते मया दीयते० २ एवं
तृतीयपात्रं वामकरेण स्पृश्या। औं अद्यामुकगो० प्रेत त्रिपाक्षिकश्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्क
रसहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ३ एवमेव द्वितीयमासिक० ४ तृतीय० ५
चतुर्थ्य० ६ पंचम० ७ ऊनपाण० ८ पाण० ९ सप्तम० १० अष्टम० ११ नवम० १२ दशम० १३ एका

आसनके वामभागमें जल त्यागदेंवै १ इसीतरे। मासिक० २ त्रिपाक्षिक० ३ द्वितीय० ४ तृतीय० ५ चतुर्थ्य० ६ पंचम० ७ ऊन-

दर्शन, आदि परिवेषण करें और अत्रके सहित लगाकें (मधुवाता०) इण तीन मंत्रों करकें अभिमन्त्रण करें और (मधु मधु मधु) तीनबेर जपे । यहा पात्रालम्भ, अर्थात् (पृथिवी ते पात्र०) इत्यादि मन्त्र पाठ, अगुष्ठ निवेशन आदि कर्म नहि करणा चाहिये । ऊपरके प्रमाणसे निषेध है, और विशेष प्रमाण लिखतेहैं । (विष्णु वायुपुराण हेमाद्रि गारुडेपु, आशिषो द्विगुणा दर्भा जपाशीः स्वस्तिवाचन । पितृशब्दः स्वसवधः शर्मशब्दस्तथैवच ॥ आवाहः पात्रालम्भश्च उल्मुकोद्धेस

मधु दत्त्वा । ओं मधुवाताऽऽकृतायते इति मन्त्र त्रयेणाभिमन्त्र्याओं मधु मधु मधु मध्विति च जपेत्
नाऽत्र पात्रालंभागाहौ (नात्र पात्रालंभोनाशिषः प्रार्थयेदिति प्रचेतसोक्तत्वात्) ततः
सर्वत्र पात्र परित ओं अपहताऽअसुरा रक्षार्थसि० वेदिषद् इति तिलान् विकीर्यान्त्युञ्ज वाम

नादिक । वृत्तिप्रश्नश्च विकिरः शोषप्रश्नस्तथैव च ॥ प्रदक्षिणविसर्गश्च सीमात गमन तथा । अष्टादश पदार्थास्तु प्रेतश्राद्धेषु-
जपेत्) आशीर्वाद, मोटक, जप, स्वतिवाचन, पितृशब्द, अस्मात् पित० अमुक शर्मन्, अवाहन, पात्रालम्भन, उल्मुक
भ्रामण, रेखाकरण, वृत्ति प्रश्न. विकीरण, शोषप्रश्न, प्रदक्षिणा, विसर्जन, लेखना इत्यादि अठारह १८ वात, प्रेत श्रा-
द्धोंमें नहि करणा चाहिये । करणसे दोष होता है इसवास्ते पात्रोंके बाहर कर (अपहता०) इस मन्त्रसे तिल विकीरण

एक पात्र दाहर्णे हाथमें लेवे । प्रेतके गोत्र नाम लेकें प्रथम वेदिकी कुशाऊपर थोडा (अवनेजन) जल डालदेवे । इसीतरे
 दूसरी २ तीसरी ३ आदि वेदियोंमें अबोजन देवे । फिर घृत, सहत, तिल, दर्ही, राकर जादि मिलेहोये अन्नका सोलह १६
 तिल गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्या एक पुटकं दक्षिणहस्तेन गृहीत्वा । ओं अद्याशुक्रगोत्र अमुकमे
 त आद्य श्राद्धपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मयादीयते तवोपतिष्ठनामिति प्रथम वेदिकायां स
 मूलकुशात्रयोपरि अवनेजनं किंचिदद्यात् ३ एवं द्वितीय पुटक गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्रं
 प्रेत मासिक श्राद्धापिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मयादीयते ० २ पुनस्तृतीयं पुटकमादाय । ओं
 अमुकं ० प्रेत त्रिपाक्षिक श्राद्धपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति तृ
 तीयवेदिकायां कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ३ अनेभव क्रमेण द्वितीय मासिकादि पिंडस्था
 नेषु प्रत्येकमवनेजनं यथाक्रमेण दद्यात् ॥ ततो घृत मधु तिलयुक्तेनाग्नेन षोडश पिंडान् वि
 ल्वोपमान् निर्माय । घृत मधुभ्यामभिवार्य्य । प्रथमं पिंडं कुशात्रय तिल जलानि
 पिंड बीलके फल जैसा गोल करके धीरत, सहतको मसलके एरु पिंड और कुशात्रय तिल जल सहित धारण करके

राण०८ पत्र०९ समम०१० अष्टम०११ नम०१२ दशम०१३ एकादश०१४ उनाब्दिक०१५ द्वादश मासिक १६
 ब्राह्मनिमित्त प्रोक्ते अर्थ अन्नका त्याग करे, और यदा (सहस्र शीर्षा०) इत्यादि जप, पाठ नहि करणा चाहिये। क्युकी
 करारते भ्रम,णसेति निरोधहे। प्यात् अन्नपात्रके समीप आद हाथ जगें छोडके पिंड देनेके अर्थ मही या बालु रती-
 दश० १४ उनाब्दिक०१५ द्वादश मासिक ब्राह्मनिमित्तममृतसृजेत् १६। नात्र पैतृको
 जपः (नपैतृको जागः कार्थ्य इति हेमाद्रौ प्रचेतसःस्मरणात्) विकिरमपि न कुर्यात् (प्रेत
 श्राद्धे न विकिर इति स्मृतिरत्नावल्यां, विकिरं न स्वधाकारमिति वायुपुराणाच्च) ततः
 सव्येन गायत्रीं निर्जपित्वा। अपसव्यादिना अन्नपात्रसमीपे पिंडदानार्थं सिकताभिः षोडश
 वेदिकाः वृत्वा।गोमयोदेकेनोपलिप्या।प्रत्येकं तत्र दक्षिणाग्रं समूल कुशत्रयास्तरणं कुर्यात्।
 नात्र रेखाक्षरण (नोल्मुकोह्लिखनादिकमिति हेमाद्रौ वायवीयात्) ततः षोडश पुटकेषु जल
 की सोल्ह १६ बेदी बणाकें गोययका लेपा देने और सबके ऊपर त्रिकुश एक एक रस्यंदे। यहा (अपहता०) इसें रेखा
 (ये रूपाणि०)इस्से उल्मुक भ्रामण नहि करणा। अनतर, सोल्ह १६ पात्र (जेनों) में जल, तिल, चदन, पुष्प, घालक

कके निमित्त० १ द्वितीय मासिक० ४ तृतीय मासिक० ५ चतुर्थ्य० ६ पंचम० ७ ऋणपाण० ८ पाण्मासिक० ९ सप्तम० १० अष्टम०
 पुन० ओं अमुक० प्रेत पंचम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता
 मिति० ७ ओं अद्यामुक० प्रेत ऊन षण्मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया० ८ ओं अ
 द्यामुक० प्रेत षण्मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० ९ ओं अद्यामुक० प्रेत स
 प्तम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० १० ओं अद्यामुकगोत्र० प्रेत अष्टम
 मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो० ११ ओं अद्यामुक० प्रेत नवम मासिक श्राद्धनिमित्त
 एष ते पिंडो० मया० १२ ओं अद्यामुक० प्रेत दशम मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो
 मया० १३ ओं अद्यामुक प्रेत एकादश मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया० १४ ओं
 अद्यामुक प्रेत ऊनाब्दिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते० १५ ओं अद्यामुकगोत्र
 अमुकप्रेत द्वादश मासिक श्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति षोड
 ११ नवम० १२ दशम० १३ एकादश० १४ ऊनवार्षिक० १५ द्वादशमासिकके अर्थे छुदी २ वेदीयोंपर क्रमसेति पिंडदान

सकल्प उच्चारण करता हुवा । हे प्रेत, आद्य श्राद्धके निमित्त घौ प्रथम पिंड तुमारे अर्थ देताहों सो तुमकों प्राप्त होवो चादाय । ओं अध्यासुकगोत्र असुकप्रेत आद्य श्राद्धे एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठता मित्युक्त्वा । प्रथमवेदिकायां कुशोपरि अर्चनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणकरणे पिंडं दद्यात् १ पुनः पिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अध्यासुकगोत्रं प्रेत मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति द्वितीय वेदिकायां कुशोपरि दद्यात् २ पुनः पिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अध्यासुकगोत्रं प्रेत त्रिपाक्षिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति तृतीयवेदिकायां कुशोपरि दद्यात् ३ पुनः पिंडं कुशादीनि चादाय । ओं अध्यासुकं प्रेत द्वितीय मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ४ पुनः पिंडादिकमादाय । ओं अध्यासुकं प्रेत तृतीय मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ५ पुनः ओं असुकं प्रेत चतुर्थ मासिकश्राद्धनिमित्त एष ते पिंडो मया दीयते ६

१ ऐसे कहेके प्रथम वेदिका की कुशाके ऊपर दोनो हाथोंसे पिंड देदेंवे १ इसतिरे । मासिक श्राद्धके निमित्त ०२ त्रिपाक्षि

सव्य आदि करके तीन २ सूतके तागे दाहणे हाथसें, प्रेतका नाम उच्चारण करता होया संपूर्ण पिंडोपर चोडे और गंध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, पूगीफल, दक्षिणा आदि करके सोलह पिंडोंकी अछितरे पूजा कर संकल्प लेके प्रेतके निमित्त

हस्तेन धृत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्यादि द्वादश मासिकांत श्राद्धनिमित्त षोडश पिंडेषु एतानि वासांसि ते मया दीयंते तवोपतिष्ठतामित्येकतंत्रेणोत्सृजेत् । तत षोडश पिंडेषु गंध पुष्प तुलसीपत्र धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि धृत्वा कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्यामुकप्रेत अद्यादि द्वादश मासिकांत षोडश पिंडेषु एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि महत्तानि तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् । ततो हस्ते जलयादाय । एभिः षोडश पिंडदानैरमुकप्रेतस्य असद्गतिविनाशः (सव्यं) सद्गत्युत्तमलोकप्राप्तिः इत्युक्त्वा उत्सृजेत् । तत एकस्मिन् पत्रपुटे सुप्रोक्षतादिकरणं सुप्रोक्षितोय

त्त कर देवै । अनंतर हाथमें जल लेके, इष्ट षोडश पिंडदान करणे करके अमुक प्रेतकी असद्गति नाश होवो और सद्गति

करे १६। पश्चात् हस्त प्रक्षालन करके सव्य होवे और आचमन, हरि स्मरण करे। अपमव्य, दक्षिणमुख, पातितवाम
जातु, करके प्रत्यवनेजन देवे। अर्थात् पहलें रखाहोय अवनेजन पात्र लेके प्रेतका गोत्र, नाम उच्चारण करके आद्य० १
श वेदिकायां कुशोपरि पिंडं दद्यात्। ततो हस्तौ प्रक्षाल्या सव्येनाचम्या हरिं स्मृत्वा अपस
व्यादि कुर्यात्। ततः प्रथम अवनेजनपात्रं गृहीत्वा। औ अद्यामुक० प्रेत आद्य श्राद्धापिंडेऽत्र
प्रत्यवने निक्षते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथम पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात्। अनेनैव
क्रमेण। मासिक० २ त्रिपाक्षिक० ३ द्वितीय० ४ तृतीय० ५ चतुर्थ० ६ पंचम० ७ ऊनषाण० ८
पाण० ९ सप्तम० १० अष्टम० ११ नवम० १२ दशम० १३ एकादश० १४ ऊनाब्दिक० १५ द्वादश मा
सिक श्राद्धपिंडेषु प्रत्येकं प्रत्यवनेजनं दद्यात् १६ (अथवा एकत्रेण सर्वेषु दद्यात्) ततः पिंड
समीपे नीवीं विसृज्य। सव्येन आचम्या हरिं स्मृत्वा। अपसव्यादिना प्रतिपिंडं सूत्रत्रयं दक्षिण
मासिक २ आदि सोऽह पिंडों पर क्रमसे प्रत्यवनेजन जलदान करे। अथवा एकही पात्रसे सर्व पिंडोंपर एकहि संकल्पसे
प्रत्यवनेजन देदेवे। फिर पिंडके समीप (नीवी) कटिभागमें टंगा हुवा तिल दर्मी डालके, सव्य होवे। आचमन करे। अप-

कृष्णकृष्ण०३ नारायण०४ हिरण्यगर्भ०५) इण पांचश्लोकोंको पढ़ता हुंवा देवै और प्रेतका गोत्र नाम लेके तीनवेर
 जलंजली पिंडोपै देवै । फिर दक्षिणा दान करै । रजत (चांदी) की दक्षिणा कुशत्रय तिल जल लेके षोडश श्राद्ध-
 वरप्रद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ४ हिरण्यगर्भं पुरुष व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे । अस्य
 प्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा ५ इति पठित्वा । ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत अत्र जल
 धाराः पयधारास्ते मया दीयंते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा । पिंडोपरि दद्यात् । ततो दक्षिणादा
 नं । तत्र रजतद्रव्यं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये
 कृतैतत् आद्यादि द्वादश मासिकान्त षोडशश्राद्धप्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इदं रजतं चंद्रदेवतमसु
 कगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य दद्यात् । ततः पिं
 ङोद्धारणं चटविसर्जनं च कृत्वा । देवताभ्य इति त्रिजर्जपित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्यासव्येन हस्तौ
 की प्रतिष्ठाके अर्थ ब्राह्मणको संकल्पद्वारा देदेवै, और पिंड उगवे, चट विसर्जन करै । (देवताम्यः०) यहै मंत्र तीनवेर

प्राप्त होवो ऐसे कहेके जल त्यागन करदेवै । फिर एक डोनेमें सुप्रोक्षित करै (शिवा आपः संतु०) यह पदके जल डाले और (सौमनस्यमस्तु०) इस्में पुष्प (अक्षतं चारिष्टं चास्तु०) यह कहेके तिल, यव, प्रक्षेपण करै और कुशत्रय प्रदेशोस्तु। शिवा दर्भा आपः संतु, सौमनस्यमस्तु, अक्षतां चारिष्टं चास्तु इति जल पुष्प यव तिलान् पत्रपुटे दत्वा । अपसव्वादिना कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य आधादि द्वादश मासिकांत षोडश श्राद्धेषु यहत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् । ततः पिंडानामुपरि प्रत्येकं पवित्रं दत्त्वा तदुपरि जलधाराः पयधाराश्च दद्यात् । ओं अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुंडरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव? अतसीपुष्प संकाशं पीतवाससमच्युतम् । ये नमस्यंति गोविंदं न तेषां विद्यते भयं २ कृष्ण कृष्ण कृपालु स्वमगतीनां गतिर्भव । संसारार्णवमज्ञाना प्रसीद पुरुषोत्तम ३ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकांत तिल जल लेकें आय आदि सोलह श्राद्धनिमित्त दियाहुवा अन्न, जल प्रेतके निमित्त अक्षय दानकरै (यहाँ षष्ठी विभक्ति देणा चाहिये) । फिर पिंडोके ऊपर एक एक कुगा रसकें दुग्ध जलकी धारा (अनादि निधन० १ अतसीपुष्प० २

मुगोभित दरी, सोडीये, तकीया, चादरा, सोड, केबल आदि बहसहित चंदन, धूप, पुष्प, नागरपान केसर,
 कर्पूर, अगरु, दीपक, उपानह, (जूते) छत्र, चामर, पंखा, आसन, सप्त धान्य, घृतका, भराहुवा, कलश
 इत्यादि सामग्री करके शोभायमान उत्तम शय्या स्थापनकरे। उसके ऊपर सुवर्णकी प्रेतप्रतिमा रखके पूर्व
 गंधधूपादिवासितां पुष्प तांबूल कुंकुम कर्पूरागरु चंदन दीपकोपानह छत्र चामर व्यजना
 सन सप्त धान्य घृत पूर्णकुंभसहितां शय्यामासाद्य। तत्र हैमं कांचनपुरुषं स्थापयेत्। ततः
 पूर्वागिमुख उदङ्मुखो वा उपविश्य। आचम्य, प्राणानायम्य। देशकालौ संकीर्त्य। ओं
 अथाशौचान्त द्वितीयेन्हि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य स्वर्गकामः शय्यादानं करिष्ये इति
 संकल्प्य, देवब्राह्मणं गंधादिना संपूज्य। ओं इमां सोपकरणां शय्यां ददामीति द्विजकरे जलं
 पाउत्तरकों मुख कियाहुवा आचमनकरे। प्राणायाम करे। देश काल उच्चारण करके कहैकी आज मे
 सुतकके दूसरे दिन अमुकगोत्र, नामवाले प्रेतकों स्वर्ग प्राप्तिके अर्थ यहै शय्यादान कारताहो। इसतरे संकल्प
 लेके शय्या लेनेवाले ब्राह्मणकी चंदन आदिसे पूजाकरे। यहै शय्या, सामग्रीसहित आपको देवोंगा ऐसे कहके ब्राह्म-

जपे । रत्नादीपक बुझावै और सब्य होके हाथ पैर प्रक्षालन करै । आचमन करै । (प्रमादात्०) यह श्लोक पढके कर्म पू-
 त्तिके अर्थ विष्णुका स्मरण करै । श्राद्धसामग्री ब्राह्मणको देके पिंड आदि गौ या कागलौको खिळादेवै या नदी आ

पादौ प्रक्षाल्य, आचमिन् । तत ओं प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत् । स्मरणादेवतद्वि-
 ष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिरिति पठित्वा; कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः श्राद्धं वस्तूनि
 ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् पिंडादिकं गोभ्यो वायसेभ्यो वा दद्यात् । अगाधे जले वा क्षिपेत् ।
 तत एकादशप्रमृति ब्राह्मणान् भोजयेत् । तान् शय्यादिदानैः परितोषयेत् । इत्याद्यादि षोडश
 पद्धतिः समाप्ता ॥

॥ अथ शय्यादि दानम् । तत्र प्रयोगः । तत्रादौ सारदारुमयीं
 दृढां दंतपत्रहेमपद्मार्थै र्लंकृतां हंसवूली प्रतिच्छन्नां शुभ्रगंडोपधानिकां प्रच्छादनपटीयुक्तां

दिके भीतसे पानीमें डाल देवै । फिर एकादश ११ ब्राह्मणोंको भोजनकराके; शय्या, पददान आदिसे प्रसन्नकरै इति
 आपादि षोडश श्राद्धपद्धतिः ॥ अथ शय्यादान लिख्यते । सालकाष्टकी, मजपूत, दस्तिकेदात सुवर्ण आदिसे

झणकों देताहों ऐसै पढकें जलकों ब्राह्मणके हाथमें त्याग न करदेवै। फिर शय्यादान प्रतिष्ठाके अर्थ सुवर्णदक्षिणा देकें
 (यथानकृष्णशयन०) इस मंत्रसे प्रार्थना करे और प्रणाम करकें विसर्जन करदेवै इति शय्यादानं ॥ अथ पददानं आ-
 ओं स्वस्तीत्युक्त्वा शय्यां संस्पृशेत् । ततो दाता ओं यथानकृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ।
 शय्याममाप्यशून्यास्तु तथाजन्मनि जन्मनि ? इति पठित्वा, प्रणम्य, विसृजेत् । इति शय्या
 दानम् ॥ अथ त्रयोदश पददानं । तत्र आसनं, १ उपानहौ, २ छत्रं, ३ मुद्रिकां, ४ कमंडलुं, ५
 अन्नं, ६ जलं, ७ भाजनानि, ८ वस्त्राणि, ९ आज्यं, १० यज्ञोपवीतं, ११ यष्टीं, १२ तांबूलंच
 ? इमानि त्रयोदशानिपदानद्रव्याणि यथाशक्ति संपाद्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, देश
 कालौ संकीर्त्य, (अपसव्येन) ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य परलोकिसुखप्राप्त्यर्थं असद्ग-
 तिनिवारणार्थं इमानि, आसनोपानहौ छत्र मुद्रिका कमंडलु अन्न जल भाजन वस्त्र आ-
 ज्य यज्ञोपवीत यष्टी तांबूलानि त्रयोदशपदानि नानादैवतानि नानानामगोत्रिभ्यो ब्राह्मणे
 सन, १ उपानह, (सुता) २ छत्र, ३ किंठी, ४ लोटा, ५ अन्न, ६ जल, ७ पात्र, ८ वस्त्र, ९ घृत, १० यज्ञोपवीत, ११ छडी.

णके हाथमें जल दें और शय्याकी पूजा करे, नमस्कार करके, कांचनपुरुष अर्थात् सुवर्णकी मूर्तिको गंध, पुष्प, धूप, दीप आदिसे पूजे। फिर नमस्कार करके। कुशात्रय तिल जल लेते और सकल्प उच्चारण करके और अमुकमेतके स्वर्ग दत्त्वा। ददस्वेति प्रतिबचनानंतरं विप्रं शय्यायामुपवेशयेत्। ततः ओं सोपकरणशय्यायै नमः इति शय्यां नमस्कृत्य। कांचनपुरुषं गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलादिभिः संपूज्य। नमस्कृत्य। कुशात्रय तिल जलान्यादाय। ओं अद्यैकादशेऽन्हि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकमेतस्य परलोकै सुखशयनार्थं स्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिमां सोपस्करां शय्यां कांचनपुरुषप्रतिमायुतां विष्णुदेवत्याममुकगोत्रायाममुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे इति सतिलकुशोदकं विप्रहस्ते दद्यात्। ओं स्वस्तीति विप्रो वदेत्। ततः शय्यादानप्रतिष्ठार्थं हिरण्यं कुशात्रय तिल जला निचादाय। ओं अद्य कृतैतत्सोपकरणशय्यादान कर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे इति विप्रहस्ते दद्यात्। प्रतिगृहीता लोकरासिके अर्थ तथा परलोकमें सुखशयनके अर्थ यह शय्या सामग्री, कांचनपुरुष सहित विष्णुदेवताकी अमुक प्रा-

निवृत्ति अर्थ बारहमासके दिनदिनके जलसहित कुम्भके निमित्त और सर्पिंडीश्राद्धके अधिकारके अर्थ ग्यारवैदिन ३६० पिंडदान करता हों यहै पढके संकल्पका जल त्यागदेवै। फिर अपने अगाडी बारह १२ बेदी पिंडदानके

छानि प्रतिमासं प्रत्यहनि कर्त्तव्यानि। इदानीं द्वादशेन्हि करिष्यमाण सर्पिंडीकरणाधिकार
सिद्धयर्थं सर्वाण्यपकृष्य, पिंडदानविधिना करिष्य. इति संकल्प्य। स्वपुरतो द्वादशवेदिकाः
सिकताभिः पिंडदानार्थं कृत्वा। तत्र द्वादश कुशचदान् संस्थाप्य। तिलान् गृहीत्वा। चदान्
सृष्ट्वा। ओं इह लोकं परित्यज्य० १ गतोसि दिव्यलोकं त्वं कृतांतविहितात्ययात्। मनसा
वायुभूतेन चटे त्वाहं निमंत्रये२ इत्यनेन वा। ओं अमुकप्रेताऽत्र क्षणं ते उपतिष्ठतामिति क्षणं
दत्त्वा। चट्रेषु तिलान् विकीर्ये। प्रत्येकं दक्षिणाग्रं समूलकुशत्रयास्तरणं कुर्यात्। ततो द्वादश

अर्थ मट्टि या बालुरेतकी बुणावै, उसीके ऊपर १२ कुशचट स्थापन करै। तिल लेके चटोंको स्पर्श करताहुवा (इह-
लोकं० गतोसि०) इण श्लोकोसै प्रेतको निमंत्रण देके एकएक १ वेदिपै मूलवाली त्रिकुशा स्थापन करदेवै। फिर बारह १२

१२ नागरपान १३ यहै तेरह सामग्री शक्तिपाफिक तैयार करके संकल्प उच्चारण करके प्रेतके निमित्त ब्राह्मणोंको दान करदौं इति पददानम् । अनंतर यदि धनवान होवे तो मोतमोलवाले रत्न, गौ, हस्ती, घोडा, म्याना, रथ, दासी, भ्यो दातुमहमुत्सुजे । प्रेताय । उपतिष्ठतां एभिस्त्रयोदशपदानैरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्चास्तु इतिपठेत् । इति त्रयोदशपददानम् ॥ ततः शक्तौसत्यां महाहर्षिणि रत्नानि गाः वाहनं, यानानि; दासी, दास, वेश्मानिच प्रेतमुद्दिश्य विप्रेभ्यो दद्यात् ॥ अथ सान्नोद कुंभदाननिमित्त पष्टुत्तरशतत्रय पिंडदानप्रयोगः ॥ तत्र तावत् आचम्य, प्राणानायम्य, देश कालौ संकीर्त्य (अपसव्यादिना, । ओं अधामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक परलोकै संवत्सरपर्यंतं क्षुत्तृपोपशांत्यर्थं प्रथममासिकसान्नोदकुंभश्राद्धं, द्वितीयमासिक० तृती यंचतुर्थं पंचम० षष्ठममासि० सप्तम० अष्टम० नवम० दशम० एकादश० द्वादशमासिक कुंभश्रा दास, घर आदि प्रेतकानिमित्त लेके ब्राह्मणोंको दानकरणा चाहिये ॥ अथ पष्टुत्तरशतत्रय पिंडदानप्रयोगः । प्रथम आचमन, प्राणायाम करके संकल्प उच्चारण करे और अपसव्य दक्षिणासुल होके प्रेतकी संवत्सरपर्यंत, भूक, प्यास

संसाठ ३६० पिंड बुनावे ओर कुशत्रय तिल जल, लेकें प्रेतका नाम उच्चारण करताहुवा प्रथम० द्वितीय० तृतीय, साल

मित्त इमानि त्रिंशत्पिंडानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा । वामान्वारब्धादक्षिणह
स्तेन कुशोपरि दद्यात् १ अनेन क्रमेण द्वितीयमासिक० २ तृतीयमासिक० ३ चतुर्थमासि
क० ४ पंचम० ५ षण्मासिक० ६ सप्तम० ७ अष्टम० ८ नवममासिक० ९ दशममासिक० १० एका
दशमासिक० ११ द्वादशमासिक सान्नोदकुंभानिमित्तपिंडानि क्रमेण दद्यात् १२ ततो हस्तप्रक्षा
लनं कृत्वा । अर्चनेजनपात्रेण । ओं अमुक० प्रेत प्रथममासिकादि द्वादशमासिकांत सा
न्नोदकुंभानिमित्त षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडोपरि प्रत्यवने निक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति
सकल्प्य क्रमेण दद्यात् । ततः पिंडान् सूत्र गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य तांबूल पूगीफल दक्षि
णाभिः संपूज्य । अमुकगोत्र० प्रेत अत्र षष्ट्युत्तरत्रिंशत्पिंडेषु एतानि आच्छादन गंध पुष्प

आदि बारहमहिनोंका न्यारा २ तीस ३० तीस पिंड एकएक वेदिएं क्रमसे देदेवे । अनंतर हाथ धोकें सपूर्ण पिंडोंपर

डोनोंमें या एकडोनोंमें जल तिल गंध पुष्प डालके प्रथम०१ द्वितीय०२ तृतीय०३ चतुर्थ०४ पंचम०५ षष्ठम०६ सप्तम०७ अष्टम०८ नवम०९ दशम०१० एकादश०११ द्वादश०१२ मासिकनिमित्त पिंडस्थानमें न्यारा २ अवनेजनदेवै। पश्चात् पत्रपुटेपु जल तिल गंध पुष्पाणि कृत्वा । प्रथमपुटकं गृहीत्वा । ओं असुक० प्रेत प्रथममासिक सान्नोदकुंभनिमित्त त्रिशत् पिंडदान स्थानेऽत्रावनेनिक्ष्वते मया दीयते तवोपतिष्ठता मिति प्रथम वेदिकायां कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् १ एवं द्वितीय०२ तृतीय०३ चतुर्थ०४ पंचम०५ षष्ठ०६ सप्त०७ अष्ट०८ नवम०९ दशम०१० एकादश०११ द्वादश मासिक पिंडस्थानेऽवनेजनं क्रमेण दद्यात् । अथवा एकत्रेण सर्वत्र दद्यात् । तत स्तिल घृत दुग्ध दधि मधु शर्करादियुक्तेन चरुणा, यवचूर्णेन वा, सक्तुना वा । अद्रोमलक मानान् षष्ट्युत्तरशतत्रयपिडान् कृत्वा । क्रमेण दद्यात् । तत्र त्रिशत् पिडान् कुशत्रयादीनि चादाय । ओं असुकगोत्र असुकप्रेत परलोकै धुत्तृषोपशांत्यर्थं प्रथममासिक सान्नोदकुंभनि तिल, घृत, दुग्ध, दधि, सहत, शक्कर आदि मिलेहोये यवोंके चूनकरकें या शतू करकें हरे आवलेकी माफिक तीन-

करके अमुकप्रेतकी भूख बारह मासतक शांती होवो । अनंतर पिंड विसर्जन करके ३६० अंजलीदान करें । पीपल, बड आदिदरखतके नीचे बैठके अपसव्य, दक्षिणमुख कीयाहुवा तिल दुग्ध मिलेहोये जल करके सीधीदर्भायुक्त दोनी पिंडविसर्जनं कृत्वा । अश्वत्थादिके षष्ट्युत्तरशतत्रयांजलिदानं कुर्यात् । तद्यथा । एकस्मिन् बृहत्पात्रे जल त्रिल दुग्ध गंध पुष्पाणि प्रक्षिप्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय, देशकालौ संकीर्त्य, अपसव्येन, दक्षिणामुखः । ओं अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य परलोकै संवत्सरपर्यंतं क्षुत्तृषोपशांत्यर्थं प्रतिमासिक निमित्त सान्नोदकुंभदानानि प्रतिमासं प्रत्यहनि कर्तव्यानि इदानीं द्वादशेन्हि करिष्यमाण सर्पिंडीकरणाधिकारसिद्धयर्थं तन्निमित्त षष्ट्युत्तरशतत्रयअंजलिदानं करिष्ये । इति संकल्प्य ऋशु कुशत्रय तिल पूर्णांजलिना । ओं अमुकंप्रेत संवत्सर क्षुत्तृषोपशांत्यर्थं प्रतिदिननिमित्त सान्नोदकुंभनिमित्तक षष्ट्युत्तरशतत्रयोजलयस्ते मयादीयं तेतवोपतिष्ठताभित्युच्चार्य्य क्रमेण ३६० दद्यात् । ततः सव्यं कृत्वा, आचम्य, विष्णुस्मरणं, घृते हाथोत्ते ३६० अंजली देणी चाहिये । फिर सव्यहोके आचमन विष्णुस्मरण करें और घृतके पात्रमें श्रपना मुख देसके

प्रत्यग्नेज्जन दान करे और पूत, गध, पुष्प धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, दक्षिणासे पिंडोको पूजके (अनादि०१ अतसो०२
 कृष्णकृष्ण०३ नारायण०४ हिरण्यगर्भ०५) इन मंत्रोंकरके पिंडपे दुग्धजलधारा देवै । फिर चांदीकी दक्षिणा लेके तीनमों-
 घूप दीप नैवेद्य तांबूल पूर्णफल दक्षिणादीनि महत्तानि तत्रोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् । ततः ओ
 अनादिनिधनो देव० १ अतसीपुष्प०२ कृष्णकृष्ण०३ नारायण सुरश्रेष्ठ०४ हिरण्यगर्भे पुरु
 ष० ५ इति पठित्वा जलदुग्धधारा दद्यात् । ततो रजतद्रव्यं कुशत्रयादीनि चादाय ।
 ओ असुकगोत्रस्य० प्रेतस्य० कृतैतन्मासिकादि द्वादशमासिकांत सान्नोदकुंभानिमित्त
 षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठासिद्धयर्थं इदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायामु
 कशर्भणे ब्राह्मणाय दातुमहसुत्सृजे । इत्युक्त्वा । ततः असुक० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं
 कृतैतत् षष्ट्युत्तरशतत्रय पिंडदानविधेर्यन्मूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णताऽस्तु एभिः
 षष्ट्युत्तरत्रिंशत् पिंडदानैरसुकप्रेतस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्पातृतिर्भवतु इति पठेत् । ततः
 साठ पिंड दानकी सांगताके अर्थ ब्राह्मणको दक्षिणा दानकरे । फिर हाथमें जल लेके कहेकी इण तीनसोंसाठ पिंडो

र स्नान किये होयें भाई आदि द्वारा पाक दो २ करावें । अर्थात् एक पितृपक्षक और दूसरा प्रेतका । पश्चात् मृतिस्थानमें श्राद्धकरणके अर्थ गोमयका लेपा देवें और अग्निसें जलताहुवा तृण फेरके साफ शुद्ध मट्टि (रेत) बिछाके तिल पीली सरसोंका विकिरण करै और तहां श्राद्धसामग्री जलसें पूरित १२ घट तथा एक १ पक्वान्न पूरित बर्दनीकुंभ स्थापन

सुन्नात, सपिंडादिद्वारा, स्वयं वा, पाकद्वयमारभेत । ततो मृतिस्थाने श्राद्धभूमिं परिकल्प्य गोमयोदकेनोपलिप्याज्वलदंगारैः संशोध्यगौरमृत्तिकयाच्छाद्य । तिलगौरसर्षपैश्च विकिरेत् । तत्र श्राद्धसामग्रीं जलपूरितान् द्वादशघटांश्चैकां पक्वान्नपूरितां बर्द्धिनींच संपाद्य । आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य, स्थापयेत् । काककुक्षुटादीन् श्राद्धापहंतृनपसारयेत् । अथ प्रयोगः तत्र तावत्स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य । पादयोरधः कुशपत्रत्रयं दत्त्वा । सव्येन पवित्रधारणं, आ

करके आसनके समीप तिलोके तेलसें दीपक जलाके धरे और कवा, मुर्गी, कुत्ता, चील, शू, मार्जार आदि निषिद्ध जानवरोंको पास नहि आनदेवें, इनको दूर हटादेवें । पश्चात् श्राद्ध करनेवाला आसनपे पूर्वको मुखकरके बैठे आसन-

यथाशक्ति मुगले, भिसारी आदिकों अन्न अथवा दक्षिणा देवे । फिर अपने घर आके वैश्वदेव और शांतीपाठ करे । इति षष्ट्युत्तरशतत्रयपिंडदानम् ॥ ॥ अथ सर्पिंडनश्राद्धप्रयोग लिख्यते । प्रथम पहले दिन श्राद्धकरनेवाला एकादशा-
 ऽश्राद्धकरके (निरामिप) अर्थात् मासआदिनिषिद्धवस्तुरहित उत्तम चावल आदि पदार्थ एववक्त भोजनकरे और

सुरवावलोकन्नंच कृत्वा । यथाशक्ति भिक्षुकप्रभृतिभ्योऽन्नं, तन्निष्कयद्रव्यं वा दत्त्वा । गृहभाग
 त्य, वैश्वदेवं कृत्वा । शांतिपाठं पठेत् । इति षष्ट्युत्तरशतत्रयपिंडांजलिदान प्रयोगः समाप्तः ॥
 इत्येकादशाहकर्म समाप्तम् ॥ ॥ अथ द्वादशाहे सर्पिंडनश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र पूर्वं दिन
 एकादशाहश्राद्धं कृत्वा । निरामिपमेकवारं शुक्त्वा सर्पिंडनदिने नद्यादौ प्रातः स्नात्वा ।
 नित्यक्रियां समाप्या । मध्याह्ने पुनः स्नात्वा । धौतशुक्लवस्त्रयुग्मे परिधाय । गोमयोपलिप्तायां भूमौ

सर्पिंडनके प्रातःकाल नदी, तलाव आदिमें स्नानकरके, सध्या, त्रययज्ञ, तर्पण, देवपूजन आदि करे और मध्याह्नमें,
 फिर स्नान करके धोयाहुवा श्वेत (वस्त्र) धोती, अगोछा धारण करे । फिर गोमयका लेप दिईहुई शुद्धभूमिके ऊप-

पश्चात्, त्रिकुश, तिल, जल, यत्र, आदि ताम्रके पात्रमें लेकर दाहणे हाथसे संकल्प करै अर्थात् सात, ऋतु, मास, पक्ष, तिथी, वार, आदिका उच्चारण करके अपने गोत्रका उच्चारण करै और (अपसव्य) से अमुकगोत्रनामवाले प्रेत-का प्रंतवनिवृत्तिके अर्थ और उत्तमलोक प्राप्तिके अर्थ अमुकगोत्रनामवाले प्रेतके पिता, दादा और परदादेके साथ तिलजलान्यादाय । देशकालौ संकार्ये (अपसव्येन) औ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेत-तत्वनिवृत्तये उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्रैः अमुकप्रेतस्य पितृपितामहप्रपितामहैरमुकानु-कशर्मभिः वसुध्वादित्यस्वरूपैः सह मृताहाद्वादशेन्द्रि एकोद्विष्टपार्वणोभयात्मकं सर्पिंडीकर-णश्राद्धमहं करिष्य इति संकल्पयेत् (मातुः सर्पिंडीकरणेतु औ अमुकगोत्रायाः अमुकीप्रे-तायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्राभिः अस्मिन्पितामहीप्रपितामहीवृ-द्धप्रपितामहीभिः गंगा यमुना सरस्वतीस्वरूपाभिः सह सर्पिंडीकरणश्राद्धं करिष्य इति, ततो-वारवै दिन एकोद्विष्टपार्वणसंज्ञक सर्पिंडीश्राद्धं करताहौ ऐते कहके पात्रका जल तिल आदि पृथिवीपे छोडदेवै । इसी-तरे माताके सर्पिंडीश्राद्धमें, अपनी, दादी, परदादी, बुडोदादी, के साथ सर्पिंडनश्राद्धका संकल्प त्यागन करै । फिर

के तले त्रिकुश देवै, सव्यहोके पवित्रधारण करे और तीनबेर आचमन करे। प्राणायाम करके कर्मपात्र, जल, तिल, गंध, पुष्प आदिसे परिरूपी करे। फिर (अपवित्रः०) इस श्लोक और (पुंडरीकाक्षः पुनातुः) इस मंत्रस द्वाँ करके जल द्वारा संपूर्ण सामग्री तथा अपने शरीरको पवित्र करे। प्रोक्षणकरणके अनंतर (ओं वैष्णव्ये० काश्यप्ये० अक्षय्यायै०

चमनं च कृत्वा, प्राणानायम्याकर्मपात्रं जलेन परिपूर्य, तिल गंधपुष्पादिभिः संपूज्याओं अप
वित्रः पवित्रो वा०१ ओं पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति पठित्वा। श्राद्धीयवस्तूनि स्वात्मानं च सि
चेत्। तत ओं वैष्णव्ये नमः ओं काश्यप्ये नमः ओं अक्षय्यायै नमः ओं भूम्यै नमः इति
नत्वा श्राद्धदेशं गयात्मकत्वेन तदेकदेशस्थं गदाधरं च ध्यात्वा। तयोः ओं भगवत्यै गयायै
नमः। ओं भगवते गदाधराय नमः। इति मनो वाक्कार्यैर्नमस्कारं कुर्यात्। ततः कुशत्रय

भूम्ये०) इन मंत्रोंसे पृथ्वीको नमस्कार करे। फिर श्राद्धस्थानको गया सदृश समझके और तहाँ स्थित गदाधर भगवा-
नका ध्यानकरके (भगवत्यै गयायै० भगवते गदाधराय नमः०) इन मंत्रोंसे मन, वाणी, काया द्वारा नमस्कार करे।

बलके बाहर (ओं सोमस्य०१ निहन्मि०२) इन दोमंत्रोंके अंतमें तिल कुशाका स्थापनकरै । इसको नीवीबंधन कहते
 हैं । यह नीवी बंधन अपसव्यसे करणा चाहिये, कारण अगाडी अपसव्यहिसे निकाली जावेगी । फिर सव्य
 सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्यैद्रिस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि
 उच्छ्रयस्व व्वनस्पतऽऊर्ध्वमापाह्वयठं० हसऽआस्य यज्ञस्यो दृचः१निहन्मि सर्वं यदमेध्यव,
 ऋवे हताश्र सर्वं सुरदानवा मया । यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुयानाश्च
 सर्वे २ इति नीवीबंधनं कुर्यात् । ततः सव्येन कस्मिंश्चित्पात्रे जलं गृहीत्वा । दर्भे रालोड्य
 ओं यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा व्वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुचत्वठं० हसः१ यदि
 दिवा यदि नक्तमेनाठं०सि चकृमाव्वयम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुचत्वठं० हसः २
 यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽएनाठं०सि चकृमाव्वयम् सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुचत्वठं०
 हसः ३ इति कृष्मांडसूक्तनाभिमंत्र्य । ओं उदक्यादि दुष्ट दृष्टिपातात् शूद्रादिसंपर्कदोषाच्च
 होके एक तामेआदिके पात्रमें जल घाले और दर्भासे (आलोडन) हिलाके (ओं यद्देवा देवहेडनं०) इण तीन

तीनबेर ब्रह्मगायत्रीका जप और (देवताम्यः०) इस मंत्रको तीरबेर पढे । फिर (नमोनमस्ते०) इस मंत्रसे देवस्थानमें यव विकीरण करके अप्सव्यसे पितृस्थानके भिपे (अग्निष्वाता०) इत्यादि मंत्रोंको पढके दक्षिण हाथसे पूते, दक्षिण, गायत्रीं त्रिर्जपित्वा॥ओं देवताम्यः पितृम्यश्च महायोगिम्य एवचानमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनम इति त्रिर्जपेत् । तत ओं नमोनमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः इति देवप्रदेशे यवान् विकीर्य । अप्सव्येन पैतृकप्रदेशे । ओं अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशो तथा बर्हिपदः पान्तु याम्यां ये पितरः स्थिताः प्रतिचीमाज्यपा रक्षेदुदीचीमपि सोमपाः । ऊर्ध्वतस्त्वयमार क्षेत्रकव्यवाहनलोप्यधः २ रक्षोभूतपिशाचैर्म्यस्तथैवासुरदोपतः । सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ३ वायुभूतपितृणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती । य इदं श्राद्धकाले तु कुर्याद्वै पितृपंजरः ४ अक्षयं तद्भवेच्छ्राद्धं पितृभ्यः परिरक्षतु ॥ इत्यनेन दिक्षु अधस्तादूर्ध्वं कोणेषु च दर्भतिलान् गौरसर्षपांश्च विकीर्य (ओं पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्वं, अध, कोणोंमें अर्थात् दशदिशामें सर्वत्र दर्भों, तिल पीलीसरसों विकीरण करके दाहणे कटी-

यत्र लेकं विश्वेदेवोका आवाहन करे अर्थात् कहेंकी कालकामनामवाले विश्वेदेवोंकी हम बुलातेहैं। फिर (विश्वेदेवा०) इस मंत्रसे आवाहन करके (यवोसि०) इस मंत्रकरके यत्र विकीरण करे और (विश्वेदेवाः शृणुते० आगच्छंतु०) यहै २ मंत्र पढ़े इसतरै। आसनदेनेके अनंतर एक अर्घ्यपात्रमें पूर्वको अग्रभाग कराहोया (पवित्र) दो कुशपत्र दश१० अंगुल

इत्युक्त्वा ओं विश्वे देवास ऽआगत शृणुतामऽ इमठं हवं । एदम्बर्हिनिषीदत्
 इत्यनेनावाह्य। ओं यवोसि यवयास्मद्धेपो यत्रधारातीरिति यवान् विकीर्य । ओं विश्वे देवाः
 शृणुतेमठं० हवस्मेयेऽंतरिक्षेय उपधविष्ठये अग्निजिह्वाऽ उतवायजत्राऽ आसद्यास्मिन् बर्हि
 षिमादयध्वम् इति जपेत् । आगच्छतु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ये यत्र यो
 जिताः श्राद्धे सावधानां भवंतु ते इति श्लोकोऽप्युच्चारणायः । ततोऽपि त्रे पूर्वाग्ने पवित्रे

लंबाधरे इसीका नाम पवित्र; पवित्रैहै (कात्यायनस्मृतौ। अनन्तगर्भिणं साग्रं कौशं द्विदंलमेवच । प्रादेशमांत्रं विद्मर
 पवित्रं यत्र कुत्रचित् । एतदेवहि पिंजूर्यां लक्षणं समुदाहृतम्) यहै कात्यायनस्मृतिका प्रमाणहै अर्थात् तीनपत्ते। छुडेहोके
 मासे नीचकापचा निकालदेवे। वाकीका दोपत्ता अग्रभागसहित हो दशअंगुल लंबाहो इसको पवित्र संपूर्ण कर्ममें कहते

मर्चकरके मंत्रे होये जलसे; रजस्वला, श्वान, चांडाल, आदिकी दृष्टिसे और शूद्र आदिके स्पर्शसे अशुद्धहोये पाककी शुद्धिके अर्थ पाक प्रोक्षण करना चाहिये। आसनादि देनेकी विधि लिखते हैं। प्रथम उत्तरकी तरफ मुखकरे जाघसहित दाहना (जानु) गोडा नीचेको रखके दक्षिणहायमें कुशात्रय, यव; जल लेवै और कहेको हमारे (पितामहादि त्रय)

पाकदीनां पवित्रतास्तु इति पाकादीन् संभोक्षयेत् । अथासनादि दानम् ॥ तत्र तावत्
उदङ्मुख उपविश्य । सव्येन सजवनं दक्षिणं जान्वाच्य यव जलान्यादाय । ओं अद्य
पितामहादित्रयश्राद्ध संवधि कालकामसंज्ञिकानां विश्वेषां देवानां ओं भूर्भुवः स्वः
इदमासनं । सुखासनं स्वाहा नमः । इत्युच्चार्य देवतीर्थेन पूर्वोत्तं कुशात्रयमुत्सृजेत् ।
ततो यवात् गृहीत्वा । ओं कालकामसंज्ञिकान् विश्वान् देवान् आवाहयिष्ये (आवाहय)

अर्थात् दादा, परदादा, बुदादादिके श्राद्ध (संवधि) हिस्सेदार (काल काम) नामवाले विश्वदेवताओंको यव सुखदेनेवाला आसन देताहूँ सो प्राप्त होवो। ऐसे करके (पूर्वाग्र) पूर्वको आगे का हिस्सा रखके कुशाका तीन पत्ता मडलपै छोड़देवै। फिर

अर्घपात्रका जल देदेवै और (विश्वेभ्यो देवेभ्यः०) ग्रहे पङ्कके देवतोंके आसनकी दक्षिणतरफ निराला सूधाहि स्थापन-
करे । पश्चात् देवोंके आसनपै, गंध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, सुपारी, यज्ञोपवीत वस्त्र (धोतीया, साफा) आदि रखके
कुदात्रय यव जल लेके ऊपरका सकल्प उच्चारण करे; और यहै गंध, पुष्प, धूप आदि सामग्री विश्वेदेवोंके अर्थ है ऐसा

श्रुं ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युत्तानं स्थापयेत् । अथ गंधादिदानं । तत्र गंध पुष्प धूप
दीप तांबूल यज्ञोपवीत वासांसि धृत्वा । कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अद्य पितामहादित्रय
श्राद्धसंबंधिनः कालकामसंज्ञिकाः विश्वेदेवा एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूर्णफल
यज्ञोपवीत वासांसि वः स्वाहा नमः इत्युत्सृजेत् । तत ओं विश्वेपादेवानामर्चनं संपूर्णमस्त्व
ति प्रार्थय । प्रणीताग्निभस्मना वारिणावा ब्राह्मणादिषु चतुरस्रत्रिकोणवर्तुलमंडलं वेष्टयित्वा
कुर्व्यात् । इति देवार्चनम् ॥ एवं देवक्रियाकांडं निर्वृत्या पितृश्राद्धदेशमागत्या आसने दक्षिणा

कहके संकल्पका जल त्यागदेवै । फिर प्रार्थनाकरके भस्मी या जलकरके आसन आदिके बाहरकर ब्राह्मण, क्षत्रि,
वैश्य, के चतुरस्र, त्रिकुश, गोल, मंडलकरणा चाहिये । इति देवपूजा । इसतरं देवपूजनकरके पितृश्राद्धदेशमें आके

हैं और इसीका नाम (पिंजुली) पिंडस्थानमें रेखानिकालनेवाली दर्भाकों कहतेहैं । फिर पात्रमें (शन्नोदेवी.०) इस मंत्रसे जल घाले (यवोसि०) इससे यव (जो) गेरे और मंत्ररहित, गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र घालदेवें । अनंतर धृत्वा॥ओं शन्नो देवीरभिष्ट्यऽ आपो भवंतु पितये । श व्योरभिस्रवंतु नः । इति जलं क्षिप्त्वा ओं यवोसि यवयास्मद्धपो यवयारातीरितियवान् प्राक्षिप्यातूष्णीमेव गंध पुष्प तुलसीदलानि निक्षिपेत् तत ओं देवार्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा।पवित्रं पला शपत्रं दत्त्वा॥ ओं या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्याऽअंतरिक्षाऽउतपार्थवीर्या॥ हिरण्यवर्णा य क्षियास्तानऽआपः शिवाः शर्ठे०स्योनाः सुहवा भवतु इत्यभिमंश्रादक्षिणहस्ते कृत्वा॥ओं पि तामहादि त्रयश्राद्धसंबंधिनः कालकामसक्षिकाः विश्वेदेवा एषोऽर्धे. स्वाहा नमः । इति प ठित्वा॥ देवतीर्थेन पश्चिमोपरि अर्घ्यजलमुत्सृजेत्। ततोऽर्घपात्र पवित्रादियुतमासनदक्षिणपा र्घपात्र लेके वामे हाथसे रखे और दर्भाका २ पत्र पूर्वका अग्रभाग करके पत्तलेपे अगाडी रखदेवें फिर (यादि- व्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रको मंत्रके दाहणे हाथकरके अगुलीयोंके ऊपरकर पवित्रेपे ऊपरका सकल्प उच्चारण करके

वे दक्षिणको अग्रभाग करके स्थापन करदेंवै । इसीतरै; तीसरी वेदीपें ऊसीसँ पूर्बे परदादेके अर्थ वूसरा मोटक रूप आसन २ और चौथी वेदीपें परदादेके अर्थ तीसरा आसन ३ सबसँ पूर्बे ऊपरके सकल्पोंको उच्चारण करताहुवा स्था-

नर्द्धिगुणभृन्नकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अध्यामुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्यामुकशर्मणोऽऽदि
 त्यरूपस्य इदमासनं स्वधा नमः । इति तृतीयमासनं वृद्धप्रपितामहाय उत्सृजेत् ३ ततस्तिला
 न् गृहीत्वा । पितामहादीनुद्दिश्य । ओं पितृनावाहयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं उशंतस्त्वानिधी मह्यु
 शन्तः समिधीमहि । उशन्नशतऽ आवह पितृन् हविषेऽ अत्तवे इत्यावाह्य । ओं अपहताऽ असुरा
 रक्षाठं० सि वेदिषद । इति तिलान् विकीर्यो कृतांजलिः । ओं आयंतु नः पितरः सोम्यासो
 अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदंतोधिभुवंतु तेऽधन्त्वस्मान् इति पठेत् ।

पनकरै । पश्चात् तिल लेकें (पितृन् आवाहयिष्ये) यहै कहकें (उशंतस्त्वा०) इस मंत्रकरकें पितामह (दादे) आदि-
 का आवाहन करै । पश्चात् (अपहता०) इसमंत्रसँ तिल विकीरण करकें । अजली कियाहुवा (आयंतुनः०) इसमंत्रको

आसनपै दक्षिणमुख, अपसव्य, पातितवामजानू, करकें बैठ जावे और कुशत्रय तिल जल लेंके । अमुकगोत्र नामके प्रेतको सपिंडीकरणश्राद्धमें यहै कुशाका आसन देताहों सोप्रेतको प्राप्त होवो ऐसैं कहकें त्रिकुश प्रेतकी वेदीपै दक्षिणको श्रद्धभाग करकें स्थापन करदेवै १ प्रेतको आसन देनेके अनंतर. (द्विगुणभुज) अथात्र वोचसैं दृणी करिहुई

भिमुख उपविश्या अपसव्यं कृत्वा। वामं जान्वाच्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य सपिंडीकरणश्राद्धे इदमासनमुपतिष्ठतामिति ऋशुकुशत्रयरूपं दक्षिणाग्रमासनमुत्सृजेत् । ततो द्विगुणभुजकुशत्रयनिलजलान्यायाओं अद्यामुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मणो वसुरूपस्य इदमासनं स्वधानमः । इति प्रथमासनं मोटक रूपं दक्षिणात्रं पितृमहाय उत्सृजेत् ? पुनर्द्विगुणभुजकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्यामुकशर्मणो स्वरूपस्य इदमासनं स्वधानमः इति द्वितीयमासनं प्रपितामहाय दद्यात् २ पुनर् (भुज) मुडीहोयी कुशत्रय, इसको मोटकमी कहतेहैं । सो यहै और तिल जल लेंके । अमुकगोत्रनामवाले मेरे पितामह (दादेजीको) यहै आसन प्राप्त होवो यहै कहकें मोटरूप आसन दादेके अर्थ प्रेतकी वेदीसैं पूर्व । दूसरी वेदी-

का गोत्रनाम उच्चारण करके अर्घकीतरहे डालदेवे और पवित्री, जलसहित प्रेतके अर्घपात्रको उसीके अगाडी स्थापन
 करदेवे और पितामहादिकेसाथ पात्रमेलन करे (अथ अर्घपात्र मेलनप्रकार लिख्यते) प्रथम सव्यहोके कुशत्रय
 तिल जल दाहणेहायमे लेवे और संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार, आदिका उच्चारण करे । फिर अपसव्य, दक्षिणमुख,
 रणश्राद्धे एष ते हस्तावो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति पवित्रोपरि पितृतीर्थेन किंचिज्जलं
 दद्यात् । ततोचशिश्टजल पवित्रसहितमर्घपात्रं पुरतः स्थापयेत् (ततः प्रेतपात्र जलं पितृपा
 त्रेष्वसिचति) ॥ अथ अर्घ्यःसह संयोजनम् ॥ तत्र तावत्सव्येन कुशत्रय तिल जलान्यादा
 या देशकालो संकीर्त्य । अपसव्यादिना ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं सद्ग
 तिप्राप्त्यर्थं तरिपितृपितामहप्रपितामहानामर्घ्यैः सहार्घसंयोजनं करिष्ये इति संकल्प्य संयोज
 येत् । ततः प्रेतार्घपात्रस्थमेकं पवित्रं तत्पितृपात्रे निधाय । प्रेतार्घ्यं गृहीत्वा।ओं अमुकगोत्र
 यानितयामजानू, करके (अमुकप्रेतकी प्रेतत्वनिवृत्ति और सद्गतिप्राप्तिके अर्थ उसीके पिता, दादा. परदादाके
 अर्घपात्रोंके जलमें प्रेतके अर्घ पात्रका जल मेलन करताहो ऐसे कहके संकल्पका जल पृथिवीपे त्यागदेवे और) पा-

पढे । फिर पितामह आदिके तीन ३ अर्घपात्रोंमें एक एक (पवित्र) दर्भाका दो २ पत्ता घालें और प्रेतके अर्घपात्रमें एक पचेकाहि पवित्रा रखे । फिर (शन्नो देवी०) इसमंत्रसे संपूर्णपात्रोंमें जल घाले (तिलोसि०) इसमंत्रको पढके तिल, और मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र सबपात्रोंसे डालदेवे (यहां तिलोसि० इसमंत्रके अंतमें स्वधाहिततोऽर्घपात्रचतुष्टयं धृत्वा । प्रतिपात्रं पवित्रं दत्त्वा । ओं शन्नोदेवीरिति जलं प्रक्षिप्य । ओं तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । मत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृलोकान्प्रीणाहिनः स्वधा इति प्रत्येकं तिलान् तृष्णीमेव गंध पुष्पाणि च निक्षिपेत् । ततोऽर्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा । प्रेतार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा । पवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा । ओं यादिव्याऽआपः पयसा संवभ्रूदुर्योऽ अन्तारिक्षाऽ उत पाथिवीर्योः । हिरण्यवर्णाः यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः शर्ठे० स्योना सुहवा भवन्तु इत्यभिमंत्र्यादक्षिणहस्तेन ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिंडीक पद देने योग्यहै स्वाहा पद नहिदेना चाहिये) फिर प्रेतके अर्घपात्रको लेके दर्भाका पवित्रा आसनके अगाडी पत्तलमें धरे (यादिव्या०) इसमंत्रसे अर्घपात्रको अभि मंत्रणकरके अगाडी धरीहोई पवित्रीधे भोतयोडा अर्घका पानी प्रेत-

देवें इस्सें रुद्रलोक प्राप्त होताहै ॥ २ ॥ फिर तीसरे, प्रेतप्रपितामहके अर्घपात्रमें प्रेतकापवित्रा घाले और प्रेतके पात्रका जल (येसमाना०) यहै २ मंत्रपढके सपूर्ण (तीसरे) हिस्सेका जल अर्घ पात्रकरके अपने बूढे दादेके अर्घपात्रमें डाले

नाः समनसो० इति मंत्रद्वयांते द्वितीयांशमर्घ्यैर्वावै क्षिपेत् । तेन रुद्रलोक प्राप्तिः ॥ २ ॥ पु
नः तत्रेतपवित्रं तत्प्रपितामहार्घे निधाय । प्रेतार्घ्यं गृहीत्वा । औं अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य० त
त्पात्रस्थं सर्वजलं अमुकगोत्रस्य प्रेतप्रपितामहस्य आदित्यरूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयि
व्ये इत्युक्त्वा । औं येसमाना इति मंत्रद्वयांते तृतीयांशमर्घ्यैर्वावै क्षिपेत् । तेन आदित्यलोकप्रा
प्तिः ३ (मातुः सर्पिंडीकरणेतु० अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं उत्तम
लोकावाप्त्यर्थं सर्पिंडीकरणश्राद्धे तदर्घपात्रस्थं प्रथमांशजलं अमुकगोत्रायाः अस्मत्पिताम

लदेवै इस्सें आदित्यलोक प्राप्त होताहै ॥ ३ ॥ इसीतरहै पित्तके सर्पिंडीश्राद्धमें पात्रमेल करणा चाहिये । अब माताका सर्पि-
डीश्राद्धमें पात्रमेलनका विधान लिखतेहैं । माताके अर्घपात्रका पवित्र अपनी दादीके अर्घपात्रमें धरे । फिर प्रंतरूप-

त्रोंको मिलन करे (पात्र मिलानेकी विधि लिखतेहै) प्रेतके अर्घपात्रका पवित्रा उसके पिताके अर्घपात्रमें स्थापनकरे फिर प्रेतके अर्घपात्रको लेकर उसमासे एकहिस्सेका जल (येसमाना०) दूसरे मंत्रको पढके अपने पितामहके अर्घपात्रमें
 स्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं तत्पात्रस्थं प्रथमांशजलं असुकगोत्रस्य प्रेतपितुरसुकशर्मणः
 वसुरूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा। ओं ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये
 तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्। येसमानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। ति
 पाठ० श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन्लोके शतठ० समाः २ इति मंत्रद्वयाति । प्रथमांशमर्घणैर्वावे क्षिपे
 त् तेन वसुलोकप्राप्तिः ॥ १॥ ततः प्रेतपवित्रं तत्पितामहार्घे निधाया। प्रेतार्घ्यं गृहीत्वा। ओं अ
 सुकगोत्रस्य० प्रेतस्य प्रेतत्वनि० प्रेतार्घपात्रस्थं द्वितीयांशजलं असुकगोत्रस्य प्रेतपितामहस्य
 स्वरूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा। ओं येसमानाः समनसः पितरो० येसमा
 पितृतीर्थसे थोडासा डालदेवे. इससे वसु लोक प्राप्त होताहै १ पश्चात् दूसरे प्रेत पितामहके अर्घपात्रमें प्रेतका पवित्रा
 रखसे और प्रेतके अर्घपात्रका जल (येसमाना०) यहे २ पढके अपने परदादेके अर्घपात्रमें दूसरे हिस्सेका जल डाल-

हिस्सेका जल बुद्धीदादीके अर्घपात्रमें घालदेवै इस्से आदित्यलोक प्राप्तहोताहै ३ इति मातृसर्पिडने पात्रमेलनम् । अर्घ-
 पात्र मिलानेके अनंतर प्रेतके पवित्रेको प्रेतार्घपात्रमें रखके उसीके आसनसमीप स्थापन करदेवै और दादे आदिको
 अर्घदान करे (अब अर्घदेना लिखतहै) प्रथम दादेका अर्घपात्र वामे हाथमें लेके उसका पवित्रा आसनके अगाडी
 शमर्घणैवावं क्षिपत् ३ । इति मातृविषये विशेषः) । तत अनेन अर्घसह योजनेन
 प्रेतस्य सद्रत्युत्तमलोकप्राप्तिः इतिपठित्वा । प्रेतय वित्रं प्रेतार्घपात्रे कृत्वा । प्रेतसमीपे
 उत्तानं पात्रं स्थापयेत् ॥ ततः पितृगणामर्घदानम् ॥ तत्रादौ पितामहार्घपात्रं वामहस्ते
 कृत्वा । पवित्रं पितामहपात्रे दत्वा । ओं या दिव्याऽ आप इत्यर्घपात्रम भिमंभ्य ।
 दक्षिणहस्तेन ओं अमुकगोत्र पितामहाऽमुकशर्मन् एष ते हस्तार्घःस्वधा नमः ।
 पत्तलपं रसे और (यादिव्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रको अभिमंत्रणकरके दक्षिणहाथमें लेवै । फिर (पितामह) दादेका-
 नाम उच्चारण करणके अनंतर पत्तलपर रखिहुई (पवित्र) दर्भापे किंचित् अर्घका जल पितृतीर्थसे अर्थात् दाहणें अं-
 गुटे और आगली अंगुलीके बीचकर छोडदेवै १ । इसीतरे. (प्रपिता) परदादेको (बृद्धप्रपिता) बुढे दादेको

माताके अर्घको ग्रहणकरके उसके एकहिस्सेका जल (येसमाना०) इण २ मंत्रोंको पढके दादीके अर्घपात्रमें थोडासा जल डालदेवे इस्से बसुलोक मिलताहै १ । फिर इसीतरहे, पढदादीके अर्घपात्रमें प्रेतरूपमाताका अर्घपवित्रघरे ह्यः अमुर्कीदेव्याः गगरूपिण्याः अर्घपात्रेणसह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा । ओं ये समाना० इति मंत्रद्वयति प्रथमांशमर्घेणैवार्धे क्षिपेत् ३ पुनः अमुकगोत्राया० प्रेताया० अर्घपात्रस्थं द्वितीयांश जलं । अमुकगोत्रायाऽस्मत्प्रपितामह्यः यमुनारूपिण्याः अर्घपात्रेण सह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा । येसमाना० इति मंत्रद्वयान्ते द्वितीयांशमर्घेणैवार्धे क्षिपेत् २ पुनः अमुक प्रेताया० अर्घपात्रस्थं तृतीयांशं जलं अमुकगोत्रायास्मत् वृद्धप्रपितामह्यः सरस्वतिरूपिण्या अर्घपात्रेणसह संयोजयिष्ये० । ओं येसमाना० इति मंत्रद्वयान्ते तृतीयां और (येसमानाः०) इण २ मंत्रोंकरके प्रेतके अर्घपात्रका जल दूसरे हिस्सेका डालदेवे इस्से रुद्रलोक मिलताहै २ फिर बुढीदादीके अर्घपात्रमें प्रेतका पवित्र घाले और प्रेतके अर्घपात्रको लेके (येसमाना०) इन दोमंत्रोंकरके तीसरे

हिलवेभी नहि । इत्यर्घ्यप्रकारः । अथ गंदादि दानम् ॥ प्रथम, प्रेतके और पितामह, वृद्धप्रपितामहके छुदेर
 आसनोपर, गंध, पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीप, तांबूल, पूगीफल, यज्ञोपवीत, वस्त्र (धोती. सांफा) आदिछुदार रखके
 रेन्न चालयेत् ॥ इत्यर्घदान प्रकारः ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ तत्र तावलेतस्थाने गंध पुष्प धूप
 दीप तांबूल वासांसि धृत्वा । कुशत्रय तिल जलान्यादायाओ अद्यामुकगोत्र असुकप्रेत स
 पिंडीकरणश्राद्धे एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल यज्ञोपवीतवासांसि ते मया दी
 यंते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥३॥ पुनः पितामहादि स्थानत्रये धृत्वा । द्विगुणभुग्नकुशत्र
 यादीन्यादायाओ अद्यामुकगोत्र पितामहासुकशर्मन्वरूप एतानि गंध पुष्प धूप दीप तांबू
 ल पूगीफल यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा नमः । इति पितामहाय गंधादीन्युत्सृजेत् । ए
 वमेव प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च गंधादीन्युत्सृजेत् ॥ ततः कृतांजलिः ओं पितृणाम
 चर्चनं संपूर्णमस्विति प्रार्थ्य । अस्त्वर्चनं संपूर्णमिति । प्रतिवचनानंतरं गौरमृतिकया जलादि
 संपूर्णका गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेत और पितामहादिकेके अर्थ ऊपरकी संकल्परीतिसें अर्पणकर देवें और सक

अपने २ अर्घपात्र करके पवित्रीपर अर्घदान करे और पवित्र जलसहित संपूर्णपात्र छुदा २ अपने २ आसनके अगा-
डी स्थापन करदेवै । फिर प्रेतके अर्घपात्रको लेके उसीके वामेभागमें अर्घ्यात् निर्ऋतिकोणमें सूघाहि स्थापनकरे और
वृद्धप्रपिताका तथा प्रपिताके अर्घपात्रका पवित्र जल आदि पितामह (दादे) के अर्घपात्रमें घालदेवै । फिर पितामह-

इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि पूर्ववत् दद्यात् । एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहाभ्यां दद्यात् ।
अत्रशिष्टजल्युतान्यर्घपात्राण्यत्रे स्थापयेत् । ततः प्रेतार्घपात्रमासनवामपार्श्वे तूर्णान् उत्तानं
न्युब्जंवा स्थापयेत् । ततो वृद्धप्रपितामहाद्यर्घपात्रस्थानि जलपवित्रादीनि पितामहार्घपत्रे
कृत्वा।तं औ पितृभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा।आसनवामप्रदेशभूमावसंचरे न्युब्जमुखं स्थापयेत्।
तदुपरि प्रपितामहाद्यर्घपात्रंद्वयं दद्यात् । एतानि स्थापितपात्राणि दक्षिणादानपर्यंतं नोद्ध

के अर्घपात्रको लेके उसीके निर्ऋतिकोणमें (पितृभ्यः स्थानमसीति) इसमंत्रसे (न्युब्ज) मुदा स्थापनकरे और उ-
सीके ऊपर प्रपितामहादिके दो पात्रोंको अधरसी ऊंचा धरदेवै । परत. इण मुहेक्रिये होये पात्रोंको सूघा नहि करे और

निराला रत्नदेवे (यंहे हुतशेष अन्न प्रेतके भोजनपात्रमें नहीं देना चाहिये। और विश्वेदेवोंके पात्रमेंभी नहीं देणा कि-
 स्नाहं क्युकी ऊपरके वसिष्ठके प्रमाणसे निषेध है) पश्चात् सव्यहोकें देवपात्रमें और अपसव्य करके प्रेत. पितामह आ
 पिंडार्थं चावशेषयत् (तदमौकरणशेषसहितं पात्रमसंचरदेशे निदध्यात्) तदवशिष्टं न प्रेतपा
 त्रेदानं न च विश्वेदेवपात्रे (नहिस्मृताः शेषमाजो विश्वेदेवाः पुराणैरिति हेमाद्रौ वसिष्ठस्म
 रणात्) । ततः सव्यादिना देवपात्रे अपसव्यादिना प्रेतपात्रे पितामहादिपात्रेषुच स्वं स्वं
 उष्णमन्नं सघृतं अनेकव्यंजनयुतं सुशीतलज्जलसहितं यथावत् परिविश्य । मधुनाभिधार्य
 ओं मधुव्याताऽऽकृतायते मधु क्षरन्ति सिधवः । माद्धीर्निः सन्वोषधीः १ ओं मधु नक्तमुतोषसो
 मधुमत्पार्थिवर्ठे ० रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता २ ओं मधु मान्नो व्वनस्पतिर्मधुमांऽ अस्तु
 सूर्यः । माध्वीर्गावो भवंतुनः ३ ओं मधु मधुमध्वित्यभिमंत्रयेत् ॥ तत उदङ्मुखः सव्यादि
 दिके पात्रोंमें छुदा २ गरम २ अन्न और घृत, शाग, दही, बडे, पकोरी आदि अनेक व्यंजन. ठडा २ पानिका गिलाश,
 अछितर खुदे २ पात्रोंमें परिवेण करके अत्रके मधु (सहत) लगावै और (मधुवाताऽऽकृतायते ०) इत्यादि तीन मंत्रपढ़के

लपका जल आसनोके पास छोड़देवै । अनंतर, अंजलिंकरके पितरोका अर्चन परिपूर्ण होवो ऐसै कहके प्रार्थनाकरै । और सुपेदगद्दी, बाजुरेत, या, जलकरके अपने २ आसनके बाहरकर मंडलकरै । फिर खुदारभोजनकेअर्थ पात्र या पत्तल स्थापन करदेवै । भोजनपात्रदेनेके अनंतर अन्नोकरणहोम लिखतहै । प्रथम (व्यंजन) शाक, लूण, मरिच, खार, आना वा प्रत्येक मंडलं कृत्वा। भोजनपात्रणि दद्यात् ॥ अथान्नोकरणम् ॥ तावत् व्यंजनक्षारव

जितं घृताकमुष्णमन्नं श्राद्धीयान्नान्नभागं कांस्यपात्रे कृत्वा । ओं अन्नोकरणं करिष्ये इति पृष्ठा । ओं कुरुष्वेत्यनुज्ञातोऽपसव्यादिना एव रजतादिपात्रंस्थजले । ओं अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा । इदमग्नये कव्यवाहनाय । ओं सोमायपितृमते स्वाहा । इदं सोमाय पितृमते इत्याहुं तिद्वयं जुहुयात् ॥ ततो हुतशेषमन्नं पितामहादि पात्रत्रये किंचित्किंचित्पितृतीर्थेन दत्त्वा ।

दिवस्तुरहित घृतकरके युक्त, गरम, श्राद्धकेयोग्य अन्नमेंसे (अन्नभाग) चार ४ ग्रास उनमान कांसिके पात्रमें आपसव्यहिसै चांदि, तामे आदि पात्रस्थित जलमें (ओं अग्नये कव्य० ओं सोमाय पितृमते०) इण मंत्रोकरके दो २ आहुति देवै । पश्चात्, अवशेष बचाऊवा अन्न थोडा २ दादे, परदादे, खुदेदादेके भोजनपात्रोंमें देवै और थोडा पिंडके अर्थ

देवोंके योग्य अमृतरूप अन्न बिन्धेदेवोंके अर्घ्य करें और संकल्पका जल आसनके दक्षिणतरफ भूमिमें रखानावेदे। पञ्चस्त
 अपसव्य दक्षिणमुख पातितवामजानुकरके प्रेतपात्ररहित पितामहादि तीनपात्रोंके हस्तालंमन करें- और प्रेतपात्रके
 तो बाहरकर (अपहृता०) इसेतिल विकीरण करके वामे हाथसे अन्नपात्र स्पर्श करताहुवा, कुशत्रय तिल जल लेके
 देवा इदमन्नं हव्यं सोपस्करं अमृतरूपं वः स्वाहा नमः । इत्युदकं देवतीर्थेन देवदक्षिणभागे
 भूमौ निक्षिपेत् । ततोऽपसव्यादिना प्रेतपात्रवर्ज्यं पितामहादि पात्रत्रयालंभः । प्रेतपात्रस्य तु
 परितः । ओं अपहृताऽअसुरा रक्षार्थं० सि व्वेदिषदः । इति तिलान् विकीर्य । वामेन करेण स्पृ
 शन् । कुशत्रयादिना ओं अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिंडीकरणश्राद्धे इदमन्नं घृताद्युपस्करसहि
 तं ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजत् । ततः पितामहपात्रं न्युञ्जाभ्यां व्यस्ताभ्यां
 पाणिभ्यां स्पृष्ट्वा । ओं पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्व
 प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करके प्रेतके अर्पण करदेवे । फिर पितामह (दादे) के अन्नपात्रको ऊंधे दोनों हाथ-
 से (व्यस्त) अर्थात् वामेहाथसे पात्रके पश्चिमकनारेको और उर्सीके ऊपर करगये होये दाहणे हाथसे पूर्वके क-

(मधु मधु मधु) यहै तीनवेर जैपे । पश्चात् उत्तरमुख होके सव्यसे मूया दोनों हाथों करके देवताका अन्नपात्र स्पर्श करे और (ओषृथिवीते पात्र० ओं इद विष्णु०) यहै दो २ मन्त्र पठके । अपने दाहणे अंगुठेको मूया करके नस्तरहित रूपरका भाग (ओं विष्णोहव्यर्ध० रक्ष०) इसमन्त्रसे अन्नके ऊपर भ्रमावे । फिर यह अन्नहै, यह जलहै, यह घृत है,

ना उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालम्य । ओं पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽ अ
मृतेऽ अमृतं जुहोमि स्वाहा । ओं इदम्बिष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाठं० सुरे
इति पठित्वा । स्वदक्षिणकराङ्गुष्ठं अधोमुखमनखं । ओं विष्णो हव्यर्धं० रक्ष इत्यनयाऽन्ने निवे
श्य । ओं इदमन्नं, ओं इमा आपः ओं इदमाज्यं, ओं इद हविरित्युक्त्वा । अपहताऽ असुरा रक्षा
ठं० सि व्वेदिषदः । इति पात्रपरितो यवान् विकीर्य । करेण पात्रं स्पृशन् । दक्षिणकरे कुशत्रय
यव जलान्यादाय । ओं अद्यास्मत्पितामहादित्रय श्राद्धसंबन्धिनः काल काम संज्ञिका विश्वे

यश्च हविर्दे ऐसापठके (अपहता०) इस मन्त्रकरके अन्न पात्रके बाहरकर यव विकीरणकरे और वामे हाथसे अन्न-
पात्रको स्पर्श करताहुवा दक्षिणहाथमें त्रिकुश यव जल लेके सकल्पद्वारा परिवेषण कियाहोया सामग्रीसहित (हव्य)

नाम उच्चारणकारकें छंदे २ सकल्पद्वारा अन्नका त्याग करणके अनतर (अन्नहीन०) इस श्लोकको पठे. । फिर सव्य होके तीन व्याहृति ओंकारसहित तीनवेर या एकवेर गायत्रीका जपकरे और (मधुवाता०) इत्यादि तीनमत्र (कृणुष्वपाज०) इत्यादि पाच मंत्रोंको पठके तिल विकीरण करे. ।

तामहाय-दृद्धप्रपितामहाय चान्नसुत्सृजेत् । तत ओं अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इतिप्रार्थ्ये । सव्येन प्रणवव्याहृतित्रयपूर्वा गायत्रीं त्रिः सकृद्वा जपेत् । तत ओं मधुवाताऽ ऋतायते० इत्यादि ऋचम् । ओं मधु मधु मध्विति च जपेत् । ततः ओं कृणुष्वपाजरित्यादि रक्षोघ्नीः पंचऋचः पठित्वा । भूमिं तिलैरास्तार्ये । उदीरतामवर इत्यादि पितृमंत्रान् पुरुषसूक्तं० अप्रतिरथं रुचिस्तवादिंकंच यथाशक्ति

फिर (उदीरता०) इत्यादि तेरह १३ मत्र (आशुः शिशानो) इत्यादि १७ मंत्रोंको (सहस्रशीर्ष०) इत्यादि १६ मंत्रोंको पठे. और (अमूर्त्ताना०) इत्यादि रुचिस्तोत्र और ब्रह्माविष्णु आदिके उत्तम स्तोत्र शक्तिमाफिक

नारियेँ स्पर्श करकेँ (ओं पृथिवीते० ओं इदमिष्णु०) इत्यादि मंत्रोंको पढ़े और (विष्णोकव्यर्थ० रक्ष०) इस यज्ञ-
 बंदके मन्त्रकरकेँ दाहणे हाथके ऊधे अगुठेकोँ अन्त्रके ऊपर भ्रमौँ और (इदमन्न) इत्यादि पढ़केँ अन्त्रके वाहरकर
 (अपहृता०) इसमन्त्रसेँ तिल विकीरणकरेँ । फिर अन्नपात्रकोँ वामेँ हाथसेँ स्पर्श करताहोया दाहणेहाथमें मोटक तिल
 धा इति पठित्वा । ओं इदम्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ्मस्यपाठे० सुरे । इत्येतामृचं
 चजस्वाऽधोमुखं स्वदक्षिणकराद्भुक्कमनखं । ओं विष्णो कव्यर्थे० रक्ष इत्यन्ने निवेश्य । इदमन्नं,
 इमाआपः, इदमाज्यं, इदं हविरित्युक्त्वा । ओं अपहृताऽअसुरा रक्षा० सि व्वेदिपदरिति तिला
 न् पात्रपरितो विकीर्ये । वामकरणे पात्रं स्पृशन् । दक्षिणकरणे द्विगुणभुग्मकुशत्रयादीनि
 चादाय । ओं अध्यामुकगोत्र पितामहासुकशर्मन् वसुरूप इदमन्नं कव्यं सोपस्करं अमृतरूपं
 तुभ्यं स्वधा नमः । इत्युदकं पितृतीर्थेन आसनवामभागे भूमौ क्षिपेत् । एवमेव प्रपि
 जल छेवे और अपने पितामह (दादे) का गोत्रनाम उच्चारणकरकेँ सकल्पद्वारा पितामहकेअर्थ उपस्करसहित अ-
 न्नका त्याग करेँ और सकल्पका जल आसनके वामभागमें छोडदेवै । इसीतरे प्रपितामह वृद्धप्रपितामहके गोत्र

लरी वेदी पितामह आदिके तीन पिंड देनेके अर्थ बनावै । फिर पितामहादिकी वेदीकेबीच दीपसेवाली वार्धसे (अप-
 इता०) इस मंत्रको पठके दक्षिणको अग्रभागकरके दश अंगुल लंबी एक रेखा निकाले और (येरूपाणि०) इस मंत्रसे
 जलताहाया वृण रेखाके ऊपरकर अग्रको दक्षिणको धरदवै (यहै रेखा उल्मुक भ्रामण प्रेतस्थानमें नहिकरणा
 दृश्यमेव स्थानं कुर्यात् । ततः पितामहादिस्थानमध्ये दर्भपिंजुलीमूलेन ओं अपहताऽ असुरा
 रक्षा ठं० सि व्वेदिपदरिति दक्षिणाग्रां रेखां सकृद्विल्य । दर्भपिंजुलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिप्य ।
 ओं येरूपाणि प्रतिमुंचमानाऽ असुराः संतः स्वधया चरंति परापुरो निपुरोयेभरंत्यग्निद्वांष्ट्रो
 कालप्रणुदात्यस्मात् इति मंत्रेण ज्वलदुल्मुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा । दक्षिणतो निदध्यात् ।
 ततः रेखोपरि उपमूल सकृदाच्छिन्नकुशान् दक्षिणाग्रान् स्तीर्त्वा । प्रेतस्थाने समूल कुशत्रयं
 घृत्वा । देवताग्यरिति त्रिर्जपेत् । ततः पुटकचतुष्टये जल तिल गंव पुष्पाणि कृत्वा । एकं पुटकं
 चाहिये) पम्बात् वेदीपे रेखाकेऊपर जडकेसमीपसे अछितर छेदिहोई कुशास्त्रे और प्रेतस्थानमें जडसहित कुरात्रय
 दक्षिणको अग्रभागकरके स्थापनकरे । फिर (देवताम्यः०) यह मंत्र तीन बेरपढके चार ४ पात्र (डोनों) में जल

पठे । फिर अपसव्य आदिकरके पितामह (दादे) के भोजनपात्रके समीप जलसे भूमि धोंके दक्षिणाग्र त्रिकुशा रखे । फिर सर्वतरहका अन्न, व्यजन, तिल, जल, सहित लेंके (अग्निदग्धा०) इस मंत्रसे दर्भीके ऊपर अन्नको विकीरण कर देंगे । पश्चात् सव्यहोंके आचमन और हरिस्मरण गायत्रीजप करे और अपसव्य आदि करके (मधु-पठेत् । ततोऽपसव्यादिना पितामहपात्रसन्निधौ भूमिं प्रोक्ष्य । तत्र दक्षिणाग्र कुशत्रयमास्तीर्य सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजनसुद्धृत्य०सतिलमेकीकृत्य । ओं अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यऽद्गधाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु वृषायान्तु परां गतिम्? इति मंत्रेण कुशोपरि तदन्नं विकिरेत् । ततः सव्यं कृत्वा आचम्य हरिं स्मृत्वा, गायत्रीं जपित्वा । अपसव्येन ओं मधु व्वाता इति ऋचं, मधु मधु मध्विति च पठेत् । तत उच्छ्रितसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणप्लवं रमणीयं हस्तमात्रं चतु रंगुलोच्छ्रितं त्रेतपिंडपातनार्थं स्थानं निर्माय । तत्पूर्वे अपरं पितामहादित्रयपिंडदानार्थं च ता वाता०) इत्यादि तीन मंत्रपठके भोजनपात्रके समीप चोक्रोण दक्षिणकों नीचा रमणीक चोविस २४ अंगुलचोडा पार अंगुलकंचा एकस्थान (बेदी) मढि रेत, आदिसे त्रेतके पिंडदानके अर्थ बणावे और इसीतरे उसके पूर्व दू-

गर्म २ अन्न थोडा २ लेकें अमीकरणशेष, सहत, घृत, तिल, शाग आदि मिलाकें एक करे और बीलके फलकीमा-
फिक तीन पिंड बनाकें सहत, घृत करके । चीकना करे । फिर प्रेतवाला पिंड, कुशत्रय, तिल, जलसहित लेकें प्रेतका

णशेष मध्वाज्यतिलव्यंजनयुतं पात्रे कृत्वा । एकीकृत्य, बिल्वोपमां स्त्रीन् पिंडान् निर्माय, मधु
घृताभ्यामभिवार्य, क्रमेण दद्यात् । तत्र प्रथमं प्रेतपिंडं कुशत्रयादीनि चादाय । ओं अद्या
मुकगोत्र असुकप्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे एपते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथम वेदि
कायां कुशोपरि सव्योपगृहीत दक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन पिंडं दद्यात् ? ततो द्वितीयपिंडं
कुशादीनि चादाय । ओं असुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिंडः स्वया
नमः । इति द्वितीयवेदिकायां प्रथमावनेजनस्थाने पितामहाय पूर्ववद्दद्यात् २ एवं

गोत्र नाम उच्चारण करके प्रथम वेदीकी कुशाके ऊपर दोनों हाथोंको मिलाके दाहणे हाथसे प्रेतके अर्थ पिंड दे देवे
फिर दूसरा पिंड और मोटक आदि लेके पितामहका नाम उच्चारण करताहूबा दूसरी वेदीपे कुशाके मूलदेशमें दादेके-

तिल, गन्ध, पुष्प, घाले और एक पात्र दाहणे हाथमें लेके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करताहुवा प्रथम बेदीपे अग्नेजन देवे । फिर दूसरा पात्र लेके पितामह (दादे) के अर्थ दूसरी वेदीकी दर्भाके जडके ऊपर गोत्र नाम लेके

दक्षिणकरेण गृहीत्वा । ओं असुक०प्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे अत्रावने निक्ष्वते मया दीयते तत्रोपतिष्ठामिति पितृतीर्थेन प्रथमवेदिकायां कुशोपरि अग्नेजनं दद्यात् । ततो द्वितीयं पुटकं गृहीत्वा । ओं असुकगोत्र पितामहामुकशर्मन् वसुरूप अत्रावनेनिक्ष्वते स्वधा इति कुशमूले पितामहाय पितृतीर्थेनावनेजनं दद्यात् । एवमेव प्रपितामहाय कुशमध्ये वृद्धप्रपितामहाय कुशात्रे चावनेजनं दद्यात् । ततः प्रेतपाकमध्यात् प्रेतापिंडं तिल मध्वाज्यसहितं नारीकेलाकारं कृत्वा ततः पितृपाकात्सर्वस्माच्छ्राद्धशेषान्नाहुष्णं किंचित्किंचिदुद्धृत्य । अन्नौकर

अग्नेजन देवे । इसीतरे दर्भाके बीचमें परदादेके अर्थ और दर्भाके अग्रभागमें बुढेदादेके अर्थ क्रमसे अग्नेजन दान करे । पश्चात् प्रेतके पाकसेति तिल, सहज, घृत आदिमिलाके नोरलेके आकार एक पिंड बनावे और पितृपाकसे संपूर्ण

देवैः) फिर बारह १२ जलसहित घट और एक पकान्नपूरित वर्द्धिनी कलशका दानकरै। सव्यहोके संकल्प उच्चारणक
 रके (यै पकान्नसँ भराहुवा कुंभ विष्णुदेवत अमुकप्रेतके प्रेतनिवृत्तिकेअर्थ अमुकब्राह्मणको देताहु) ऐसँ कहके संकल्पका
 वासिश्चास्त्विति पठेत्। (अथत्रयोदशकुंभसंकल्पः। सव्येनाचम्य, स्वात्रे सपक्वान्नोदकुंभं नि
 धाय। देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य स्वर्गकामः (सव्यं)
 इदं सपक्वान्नोदकुंभमेकं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।
 इति संकल्प्यावर्द्धिनीसंज्ञकं कुंभं कस्मैचिद्ब्राह्मणाय दद्यात्। एवं कुंभमेकं यमचित्रगुप्तप्रीत्यर्थ
 मपि दद्यात्। ततोऽपसव्यं कृत्वा। कुशत्रय तिल जलान्यादाय। ओं अमुकगोत्रस्यामुकप्रे
 तस्य क्षुत्पिपासानिवृत्यर्थं इमे द्वादशकुंभाः सान्नोदकाः, सवस्त्राः, नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्म
 णेभ्यो दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य। सुशीतलजलौपेताः सर्वोपस्करसंयुताः। एते घटा म
 जल छोडदेवै और कुंभ ब्राह्मणको देदेवै। इसीतरे एक कुंभ पकान्नसहित यम चित्रगुप्तके अर्थ दानकरै। फिर अपस
 व्यसँ कुशत्रय तिल जल केके प्रेतकी मूल, प्यास निवृत्तिकेअर्थ जलसँ भराहुवा अन्न, वस्त्र सहित ब्राह्मणोंको दानकरै

अर्थ पिंडदानकरे । इसीतरे तीसरा परदादेकेअर्थ और चौथा वृद्धेदादेकेअर्थ अपने २ अवनेजन स्थानमें पिंडदेवै । फिर पितामहादिके पिंड नीचेकी कुशाके जडमें (ओं लेपभागभुजः पितरस्त्वृष्यंतु०) यहाँ मंत्र पढ़के दाहणो हाथके लगाहुवा अन्न पुंछ डाले । फिर जलसे हाथ धोके सव्यसे नो९ वेर आचमन करे और हरिस्मरण करे और अपसव्य होके पहले प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च दद्यात् । ततः पितामहादि पिंडास्तरणकुशभूले ओं लेपभागभुजः पितर स्त्वृष्यंतु इति पठित्वा । दक्षिणहस्तं प्रोच्छ्रय, जलेन हस्तौ प्रक्षालयेत् । ततः सव्यं कृत्वा, त्रिराचम्य हरिं स्मरेत् । ततोऽपसव्येन प्रेतपिंडे पूर्वदत्ता वनेजनपात्रेण । ओं अमुकगोत्र० प्रेत सपिंडीकरणश्राद्धपिंडेऽत्रप्रत्यवने निक्ष्वते मया दी यते तवोपतिष्ठतामिति प्रत्यवनेजनं दत्त्वा । सूत्राच्छादन गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादिभिः प्रेतपिंडमभ्यर्च्य । अनेन पिंडदानेन प्रेतस्य सद्गतिः उत्तमलोका दियेहोये अवनेजनपात्र करके प्रेतपिंडके ऊपर प्रत्यवनेजन देवै और मूत्र, चंदन, पुष्प, तुलसीपात्र, धूप, दीप, तांबूल, पू गीफल, बक्षिणा आदिकरके पिंडकी पूजाकरे (इस पिंडदानकरके अमुकप्रेतका प्रेतत्वपणा दूरहोवो ऐसे कहके जल छो

श्रीर शीतलजल वस्त्र, अन्न आदिसहित यहै १२ घट प्रेतकेनिमित्त देताहो सो परलोकमें प्राप्त होवो ऐसे पढके देश कुल परपरासँ ब्राह्मणको देदेंवै । फिर पिंडमेलनकरै (अथ पिंडमेलनप्रकार लिख्यते) प्रथम प्रेतपिंडके कपरका सूत पुष्प आदि उत्तारदेवे और सुवर्ण, चादी, तामे, आदिकी शलाका अथवा दर्भाकी रस्सी सहत घृतसँ मालसकरीहोई लेके प्रेतके

या दत्ताः स्वर्गद्वारोपतिष्ठतामिति पठित्वा यथाचारं दद्यात् । एभिः घटदानैः प्रेतस्य क्षुधा तृषा निवृत्तिरस्तु इतिकुम्भदानम् ॥ अथ पिंडसंयोजनम् । तत्र तावत्प्रेतपिंडे सूत्रादिकमपनीय । हस्तद्वयेन सुवर्णरजतादिशलाकां, तदभावे दर्भमयीं रज्जुं मधु घृताकामादाय । तथा प्रेतपिंडं सम त्रेधा विभजेत् । ततो द्विगुणभुक्तशत्रयादीन्यादाय । ओं असुकगोत्रस्यासुक प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं पितृसमत्वं प्राप्त्यर्थं वस्वादिलोकप्राप्त्यर्थं च असुकगोत्राणां तत्पि

पिंडका तीन भागकरै और पितामह आदितीनिपिंडोमें सकल्प पढके खुदा २ मिलदेवै । पिंडमिलानेको विधि लिखतेंहै ॥ प्रथम कुशानय, तिल जललेक, सवत्, मास पक्ष आदि ऊच्चारणकरके प्रेतका गोत्र नाम उच्चारण करे और अमुकनाम वाले प्रेतका प्रेतभाव निवृत्त होने और पितृयोग्यहोनेकेअर्थ उसीके, पिता, पितामह, प्रपितामहके पिंडोकरके सहित प्रे

लनप्रकारः (यदिमाताकामपिंडीश्राद्ध होवेतो इसतरहे पिंडमेलन करे) कुशत्रय, तिरु, जल लेके संकल्प पठे और प्रेत रूपमानाका नाम लेके अर्थात् अमुकनाम प्रेतरूपमाताका प्रेतभाव निवृत्त होनेके अर्थ हमारी दादी, परदादी, बुढीदा

शेषः । देश कालो संकीर्त्य । ओं अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक पितृस मत्वप्राप्त्यर्थं वसुध्वादित्यलोकप्राप्त्यर्थं च अमुकगोत्राणां अस्मत्पितामही प्रपितामही वृद्धप्र मितामहीनां अमुकामुकदेवीनां गंगा यमुना सरस्वतीरूपिणीनां पिंडैः सह अमुकभ्रैतायाः पिंडयोजनं करिष्य इति संकल्पयेत् । ततः प्रथम भागं गृहीत्वा । अमुकगोत्रायाः प्रेतायाः पिंडप्रथमांशः अमुक० अस्मत्पितामह्याः पिंडेन सह संयोजयामि इत्युक्त्वा । ओं ये समाना इति मंत्रद्वयेन पितामह्याः पिंडेन सह संयोजयेत् । तेन वसुलोकप्राप्तिः १ ततो द्वितीय

दीके पिंडीकरकेगति अमुकप्रेतका पिंड मिलताहों । ऐसे कहेके संकल्प छोड देवै । फिर प्रेतके पिंडका प्रथम भाग केने. दादीके पिंडमाथ ऊपरके वाक्य और (येतमानाः २) इण दोमत्रोंसे मिलके गोल करे । इससे वसु लोक प्राप्त होताहै

अपने परदादेके पिंडमें मिलाके गोल करे और सहत, दृतकों मालस करदेवे २ फिर प्रेतके पिंडका तीसरा हिस्सा
 लेके इसीतरे ऊपरके ग्रन्थते और(येसमानाः०)इण दो मंत्रोंकरके अपने बुढेदादेके पिंडसाथ मिलादेवे । फिर गोल कर
 पितामहस्यामुकशर्मणो स्वरूपस्य पिंडेनसह संयोजयिष्ये इत्युक्त्वा॥येसमाना इति मंत्रद्वयेन
 प्रपितामहपिंडे नियोजयेत् २ । ततस्तृतीयं प्रतपिंडभागमादाय । अमुक० प्रेतस्य तृतीयपिंड
 शकलं अमुक गोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्य० आदित्यरूपस्य पिंडेनसह संयोजयिष्ये इत्यु
 क्त्वा । ओं येसमाना इति मंत्रद्वयेन वृद्धप्रपितामहपिंडे नियोजयेत् ३ । एवं प्रेतभागोनसह
 पिंडत्रयं प्रत्येकमेर्काकृत्य समं वर्तुलं कृत्वा । प्रथमपिंडं कुशादीनि चादाय । ओं अमुकगो
 त्र पितामहासुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते पिंडं स्वधा नमः । इति पूर्वोक्तस्थाने पितृतीर्थेन दद्या
 त् । एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहयोरपि दद्यात् । इति पिंडमेलनम् ॥ (अथ स्त्रीविषये वि
 के माल, गृनका, मालिस करदेवे. ३ इसतरे तीनों भाग तीनों पिंडोंकेसाथ मिलाके पितामहादिकोंकी वेदीपे दर्भा
 के ऊपर क्रमसे अपने २ स्थानमे पितामहादिकोंका संबोधन रीतिमें नाम उच्चारण करताहुवा पिंडदान करे । इतिपिंडमे

ऊपरांत भूलकेभी प्रेतशब्द ऊच्चारण नहीं करणा चाहिये । यहां निश्वासधेनुदान अथवा उसकेनिमित्त द्रव्य सव्यार्थोंके ऊपरकेसंकल्पसे ब्राह्मणको देवें) पश्चात् अपसव्य होके(ओं अत्र पितरो) यहै मंत्र पठे और वामभागकीतरफसे उत्तरको द्यथा॥ सव्यं अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्यास्मत्पितुः पित्रादित्रयेण सह संयोजनेन चतुर्थस्य निवृत्तिर्जाता॥ तच्छोकोपनयक्षमार्थं ब्राह्मणाय निश्वासधेनुदाननिष्क्रयरूपद्रव्यं दातुमहमुत्सृत्सृजे इति दद्यात्)। ततोऽपसव्यादिना॥ओं अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमिति पठित्वा । वामावर्त्तेन उदङ्मुखो भूत्वा । प्रीतमनाः मनाक् श्वासं नियम्य । तेनैव यथा प रावृत्या॥ओं अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत इतिजपेत्। ततः पूर्वदत्तावनेजन जले न ।ओं अमुकगोत्र पितामहासुकशर्मन् वसुरूप अन्न प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा नमः इति प्रथमपिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् । एवमेव प्रपितामह वृद्ध प्रपितामह पिंडोपरि प्रत्यवनेज मुखकरके प्रसन्नमन, मौन होके श्वास बंधकियाहुवा ऊसीतरफसे पिछाहटके(अमी मदंत०) इसमंत्रसे पिंडोपिश्वास तीन बेर त्यागन करे । फिर पहले दियेहोये अवनेजन पात्रोंकरके पितामह आदि तीनों पिंडोपर छुदे२ संकल्पसे प्रत्यवनेजन

१ फिर इतीतरे प्रेतके पिंडका दूसरा भाग, परदादिके पिंडसाय और तीसरा भाग, बुढीदादिके पिंडसाय ऊपरके वाक्य और (येसमाना०) इण दो २ मंत्रोंकरके मिलद्वैवै । इसमें रुद्रलोक. और आदित्यलोक प्राप्त होताहै । इति मान्वापिंड भागमादाय । अमुक० प्रेतायाः पिंडद्वितीयांशः अस्मत्प्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयामि इत्युक्त्वा । ये समाना इति मंत्रद्वयेन प्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयेत् । तेन रुद्रलोक प्राप्तिः २ ततस्तृतीयभागमादाय । अमुक० प्रेतायाः पिंडतृतीयांशः अमुक० अस्मत् वृद्धप्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयामि इत्युक्त्वा । ये समाना इति मंत्रद्वयेन वृद्धप्रपितामह्याः पिंडेनसह संयोजयेत् । तेन आदित्यलोकप्राप्तिः ३ इति स्त्रीविषये विशेषः) । ततः पिंडा नामभिमृशति । एष वोनुगतः प्रेतः पितरस्तं ददामिवः । शिवमस्त्विति शेषाणां जायतां चिरजीविनां? अमानीव आकृताः समानाहृदयानि वः । समानमस्तु वो चित्तो यथा वः सुसहासतीति जपेत् (अत ऊर्ध्वं कदाचित् भ्रांत्यापि प्रेतशब्दो नकार्यः । अत्रावसरे निश्वासधेनुदानं । तमेवम प्रकारः) पिंडमिलानेके अनंतर. पिंडोंको स्वर्ग करताहुरा (एषोनुगत० १ अमानीव० २) इणदोमंत्रोंको पठे (इस्से

धूप, दीप, तांबूल, सुपारी, दक्षिणा आदिसें तीनों पिंडोकी पूजाकारके बंचाहुवा अन्न पिंडोकेपास, विकीरण करदेवै । फि
 र, सव्यहोके हाथ प्रक्षालनकरे उचरको मुखकरके देवपात्रमें (शिवा आप०) इस्से जल डाले (सौमनस्यमस्तु०) इस्से
 पुण्य और(अक्षतं चारिष्टं०) इसकरके यव (जो) डालदेवै परंतु चावल नहिंरै(अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ताः०) इस स्मृतिसे अ
 धूप देगैप तांबूल पूर्णाफल दक्षिणादीनि दद्यात् । पिंडशेषान्नं पिंडसमीपे विकीरेत् । ततः
 सव्यं कृत्वा । हस्तौ प्रक्षाल्य । उदङ्मुखो देवान्नपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इति जलं । ओं सौम
 नस्यमस्त्विति पुण्यं । ओं अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति यवांश्च दद्यात् । ततोऽपसव्यादिना पितृपा
 त्रेषु । ओं शिवा आपः संतु । ओं सौमनस्यमस्तु । ओं अक्षतं चारिष्टमस्त्विति सोदकपुष्पाक्षितान्
 दद्यात् । (अक्षताः यवाः) ततो द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुंकगोत्रस्य पितु
 रमुकशर्मणः वसुरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् । एवं
 क्षनाम योंकाहिदे । फिर, इमीतरदे अपसव्यहोके पिताआदिके चारों अन्नपात्रोंमें जल, पुष्प, तिल, गेरे और कुशत्रयः
 जल, लेके (अमुंकगोत्रं नामचाले मेरे पिताको दियाहुवा अन्न, जल आदिअक्षय प्राप्तहोवो ऐसे पटिविभक्तिकेद्वारा

देवे और नीची (कडमें रखिहोई तिलकुशा) पिंडोंके पाम रखके सव्यसे आचमन करे । फिर अपसव्य होके (ओं नमो वः पितरो०) इसमंत्रसे अंजली बांधके प्रार्थना करे, और (ओं एतद्०) इसमंत्रको पठताहुवा । एक, एक, पिंडोपे

नं दद्यात् । नीचीं विंशस्य सव्येन आचम्य । अपसव्यादिना ओं नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितर स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्मः । इति कृतांजलिः पठेत् । तत ओं एतद्ः पितरो वासः॥ इति पठित्वा प्रत्येकं पितामहादि पिंडोपरि सूत्रत्रयं धारयेत् । ततो द्विरुणभुमकुशत्रयादीन्याद्राय । ओं अमुकगोत्र पितामह प्रपितामह वृद्धप्रपितामहामुकासुकाशर्मणः वसुद्रादित्यरूपा एतानि वासांसि सुष्मभ्यं स्वधा नमः इत्युसृजेत् । ततः प्रत्येकं पित्रानुद्दिश्य तदीयपिंडेषु, तूर्णीं, गंध, पुष्प

तीन २ सूत्रके तामे रखके संकल्पद्वारा पितामह, आदिकेअर्थ करदेवे । पश्चात् मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र

वित्रसहित कुशारत्ने (ओं स्वधां वाचयिष्ये०) इत्यादि वाक्योंको पठकें (ओं उर्जी बहती०) इसमंत्रसे दक्षिणाग्रजलधा-
 रा देवे और पितामहआदिका (न्युञ्ज) ऊधा कियाहुवा अर्घपात्र सूधाकरकें दक्षिणादान करै । प्रथम सव्यहोके सुवर्ण
 ओं उर्जी ब्वहन्तीरमृतं वृतम्पयः कीलालम्परिभ्रुतम् । स्वधास्थतर्पयत मे पितृन् इति पिंडो
 परि दक्षिणां जलधारां दद्यात् । ततोर्घपात्राण्युत्तानिकृत्य । सव्येन देवदक्षिणां दद्यात् ।
 तत्र कुशत्रय यव जल हिरण्यद्रव्यमादायाओं अध्यास्मत्पितामहादित्रय श्राद्धसंबंधिनां काल
 कामसंत्रिक विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थं इदं हिरण्यमग्निदेवतं यथानामगोत्राय वा
 ह्मणाय दातुमहसुत्सृजे इत्युत्सृजेत् । तदोऽपसव्यादि कृत्वा । द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीनि रज
 तद्रव्यं चादायाओं अध्यासुकगोत्रस्य पितुरसुकशर्मणः कृतैतत्सापिंडीकरणनिमित्तककोद्दिष्ट
 श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायामसुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहसुत्सृजे इति
 कुशत्रय यव जललेपे और ऊपरका संकल्प उच्चारण करकें विश्वेदेवोंके श्राद्धप्रतिष्ठाकें अर्थ सुवर्णदक्षिणा ब्राह्मणको
 देद्वे । फिर अपसव्यहोके मोटक तिल जल रजत (चादी) की दक्षिणा धारणकरकें पिता, दादा, परदादा बुढेदादा-

तिल अक्षयोदक दानकरे) फिर इसीतरे दादे, परदादे, बुढेदादेकोभी अक्षयोदक दानकरे । फिर सव्यसे पूर्वको मुख तन्मन, प्रसन्नचित्त करके अजली कियाहुवा और दक्षिणको देखताहोया (ओं अघोराः पितरः सतु०) इसमनसे पूर्वोग्रजलधारा

पितामहाय प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय च सतिलमक्षय्योदकं दद्यात् । ततः सव्यं कृत्वा ।
 प्राङ्मुखस्तन्मनाः सुमनाः कृतांजलिर्दक्षिणां दिशं पश्यन् । ओं अघोराः पितरः संत्विति
 पठित्वा । समाचारात्पूर्वाग्र जलधारां दद्यात् । तत ओं गोत्रं नो वर्द्धतां, दातारो नोभिर्व
 र्द्धतां । वेदाः संततिरेव च, श्रद्धाच नोभाव्यगमद्बृहदेय च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहुभवेद
 त्तिथीश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सतु माचयाचिष्मकं च नः । एताःसत्याशिषः सतु
 इति याचेत् । ततोऽपसव्यादिना पिडोपरि सपवित्रान् कुशानास्तीर्य । ओं स्वधां
 वाचयिष्ये । वाच्यतां । पितृ पितामहप्रपितामहेभ्यः स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा ।

पिंडप देवे । फिर अजलीकरके (ओं गोत्र नो वर्द्धता०) इत्यादि आशीप मागे । अनतर, अपसव्यहोके पिंडोकेऊपर प

पितरोका विसर्जन कारदेव और (अमा व्वाजस्य०) इसमंत्रसे परिक्रमाकरके (देवताभ्य०) यह मंत्र तीनवेर जपे । फिर सब्य और अपसब्यहोके देव, पितृस्थानका दीपक निर्वापन, (बुध्नावे) और हाथ पैर, धोके सब्यसे आचमन

यात पथिभिर्द्वयानैः १ उत्तिष्ठतु पितरः (सब्यं) देवैः सह इति पितृन् विसृज्य । ओं अमा व्वाजस्य प्रसवो इति परिक्रम्य । ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति त्रिजपेत् । ततः सव्यापसव्याभ्यां देवपितृश्राद्धाय दीपान् पाणिभ्यां निर्वाप्य । सब्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमनं कुर्यात् । ततः ओं प्रमादारुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुति रिति पठित्वा । कर्मापूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडान् गां अजं वायसान् वा खादयेत् । अग्नौ जले वाक्षिपेत् । ततो वैश्वदेववर्लिकर्मणि पार्वणवदाचरेत् । उच्छिष्टमार्जनं कुर्यात् । ततो

रं । फिर (ओं प्रमादात्०) इसश्लोकको पढके कर्मपूर्तिके अर्थ श्रीविष्णुका स्मरण करे और पिंडोंको गौ, बकरा, गणले, घृतम, आदिनों सिलानेवे अथवा अग्निमें या जलमें डालदेवे । फिर वैश्वदेव बलिकर्म करके मकानकी शुद्धिकरे

के आह मतिश्रुके अर्थ ऊपरके संकल्पोंसे छुदे २ ब्राह्मणोंको दक्षिणा दानकरै; परंतु विश्वेदेवोंकी दक्षिणा चांदीकी नहि दिवै। सुवर्ण नहिहोवै तो चांदीसे दूणेमोलकी ताम्र। फल आदिकी दक्षिणा देवै। फिर नम्र होके पिंडोंको थालीमें रखै पितृश्राद्धदक्षिणां दद्यात् ? पुनः कुशादीनि रजतद्रव्यं चादाय। ओं असुकगोत्रस्य पितामह स्यासुकशर्मणो वसुरूपस्य कृतैतत्सपिंडीकरणनिमित्तकपार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजनं चंद्र देवतमसुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहसुत्सृजे इतिपितामहश्राद्धदक्षिणां दद्यात्। एवमेव प्रपितामह वृद्धप्रपितामहयोः श्राद्धदक्षिणां दद्यात्। (देवे रजतनिषेधः) ततो नम्री भूय, पिंडानुत्थाप्य, स्थाल्यां निधाय, अवाजिघ्रति। ततः सकृदाच्छिन्नान् कुशान् उल्मुकंच व न्हौ क्षिपेत्। ततः सव्येन ओं विश्वेदेवाः प्रीयंतामिति देवे वाचयित्वा (अपसव्येन) ओं व्वा जेव्वाजे वत व्वाजिनो नोधनेषुविप्राऽअमृताऽऽकृतज्ञाः। अस्य मद्भूः पिवत मादयद्भूं तृप्ता ओर सुगंके पिंडोके नोचेकी दर्भा, उल्मुक अश्रिमै डालदेवै,। पश्चात् सव्यसे (विश्वेदेवाः प्रीयता०) इसवाक्यको पढके अपसव्य करके (ओं वाजे वाजे०) इस मंत्रके द्वारा

प्राणायाम करें। फिर कुशत्रय तिल जल लेकर संकल्प उच्चारण करें और गौदानके अर्थ ब्राह्मण वरणन करके ब्रा-
 प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादाय । देशकालौ संकीर्त्य० । ओं अमुकगोत्रस्यास्म
 रिपुरमुक्शर्मणः स्वर्गकामो गौदानमहं करिष्ये । तदंगतया गोब्राह्मणस्यच पूजनं करिष्य
 इति संकल्प्य । ब्राह्मणं पाद्यादिभिः संपूज्य । हस्ते पुष्प चंदन तांबूल वासांस्यादाय । ओं
 अद्य करिष्यमाणगौदानार्थं त्वामहं वृणे इति वृणुयात् । ओं वृतोस्मीति प्रतिवचनम् ॥ अथ
 गोपूजाक्रमः ॥ अवाहयाम्यहं देवी त्रैलोक्येषु चमातरं । यस्याः शरणमाविष्टः सर्वपापैः प्रमु
 च्यते ३ इत्यावाहनं । त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुंधरा । सावित्री त्वंच गायत्री गं
 गा त्वंच सरस्वती ३ तृणानि भक्षसे नित्यं अमृतं स्रवसे प्रभो । भूतप्रेतपिशाचांश्च पितृदेव
 तमानुपान् ॥ सर्वोस्तारयसे देवि नरकात् पापसंकटात् २ ओं भूर्भुवः स्वर्धनोइहा
 ऋणका चरण धोने, चंदन आदिसे पूजाकरे । फिर, गौकी पूजन करें (अवाहयाम्यहं०) इस्से आवाहन, (त्वदेवीत्यं०)

और शक्तिमुजब दश १० या १०० या १००० ब्राह्मणोंको भोजन करावै । फिर अभ्यागत, भाई, बाधव, जातिवालों करके सहित आपभी भोजनकरै । फिर गणेशपूजा स्वस्तिवाचनआदि कर्म करके ब्राह्मणोंकी पूजन करै और ब्राह्मणोंकी आशीष लेवै (इस दिन क्लृप्तणे शिष्ट, वैतरणीनिमित्त गोदान और शय्यादान करतेहैं । इसवास्ते यहा गोदान-

दशप्रभृति श्रोत्रियान् यथाशक्ति भोजयेत् । ज्ञातिभिःसह स्वयमपि भोजनं कुर्यात् । ततो गणपत्यादिपूजनं कृत्वा । विप्रान् संपूज्य । तैर्देतान्याशीषो गृह्णीयात् । (इदानीं केचिच्छिष्टाः वैतरणीधनुदानं शय्यादानं च कुर्वन्ति तस्मात्तत्प्रयोगो लिख्यते) ॥ अथ गोदानविधिः ॥ तत्रादौ पुण्यदेशे यथोक्तलक्षणवतीं गां प्राङ्मुखीमवस्थाप्य । यथोक्तलक्षणं सत्पात्रं तदसंभावे अनिषिद्धब्राह्मणं उपवेश्य । स्वयं गोपुच्छदेशे प्राङ्मुख उपविश्य । सव्येन आचम्य

विधि लिखतेहैं) शुद्धजगें सुशील गुणयुक्त गौको पूर्व मुखकरके स्थापन करै और उसीके पास उत्तम ब्राह्मणको बैठाव । सुद यजमान गौके पुच्छकीतरफ बैठके पूर्वको मुख किया आचमन,

नवय सुबावे. (आच्छादन०) इसमंत्रसे बल २ उठावे. (यत्ते मयापित्त०) इसमंत्रसे घंटा चामर भावि अर्पणकरे । फिर पत्रिमाकरके उत्तरको मुख किया हुआ गौका पुच्छ कुशत्रय तिल जल लेवे और अपनी शालाके अनुसार देव

अच्छादनंच कौशेयं शुद्धं चैव सुनिर्मलं। सुरम्यै दीयमानं तु प्रीयतां केशवः सदाऽइति वस्त्रं
यत्ते मयापितं शुद्धं घटं चामरमण्डितं। सुरभे तद्गृहाणेदं सुनिन्निदशवांदिते ९ इति घंटाचामरं
इति गंधादिभिः संपूज्य। प्रदक्षिणांकृत्या उदइसुखो गोपुच्छं गृहीत्वा। कृशत्रय यव तिलजलैः
कातीयवेदमंत्रैस्तर्पणं कुर्यात् । ओं देवा सुरास्तथा यक्षा नागा गंधर्वराक्षसाः। पिशाचा गु
ह्यकाः सिद्धाः कृष्मांडास्तरवः खगाः ३ जले चरा भूमिलया वाद्याधाराश्च जंतवः। प्रीतिमेते
प्रयान्त्वाशु मद्देतेनाम्बुनाखिलाः २ आब्रह्मणोये पितृवंशजाता मातृस्तथा वंशभवा मदीयाः
वंशद्वयेस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ३ ते सर्वे तुस्तिमायांतु गोपुच्छोदक

ऋषि, पितृतर्पण करे । फिर (ओं देवासुरास्तथा०) इण ३ श्लोकोंसे जलालि देके

इस मंत्रसे स्थापनकरे । पश्चात् (सर्वदेवप्रियं०) इसमंत्रसे चंदन, कुंकुम लगावे (ऐरावतकुले०) इसमंत्रसे पुष्पचोडे गच्छ इहातिष्ठ । इति प्रतिष्ठापनम् ॥ ततः सर्वदेवप्रियं देवि चंदनं मलयोद्भवं । कस्तूरि कुंकुमाढ्यच गो गंधं प्रतिगृह्यतां ३ इति गंधं । ऐरावतकुले जाता शतक्रतुप्रिया सदा । या लक्ष्मीः सर्वभूतानां याच देवेष्वस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ४ इति पुण्याणि । अथांगपूजा । ओं आस्थाय नमः । ओं शृंगाभ्यां नमः । ओं पृष्ठाय नमः । ओं पुच्छाय नमः । ओं पूर्वपम्धां नमः । ओं पश्चिमपम्धां नमः । ओं वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाठ्यो गंधउत्तमः । अग्नेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यतां ५ इति धूपः । साज्यं च वर्तिसंतु क्तं वन्दिना योजितं मया । दीपं गृहाण सुरभे मया दत्तं हि भक्तिः ६ इति दीपं । वैष्णवि सुरभि मातर्नित्यं विष्णुपदे स्थिते । नैवेद्यं हि मया दत्तं गृह्यतां पापहारिणि ७ इति नैवेद्यम् । ओं अंगणुन्नकरे (वनस्पतिरसो०) इसमंत्रसे धूपकरे. (साज्यच वर्ति०) इसमंत्रसे दीपकरे (वैष्णवि०) इस मंत्रसे

पुष्टसहित देकें गोकों प्रणामकरे और दानप्रतिष्ठाके अर्थ दक्षिणा देकें ब्राह्मणकों विसर्जन करे कर्मपूषिकेअर्थ विष्णु-

कमादाय० । ओं अद्य कृतैतद्गोदानप्रतिष्ठार्थमिमं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायासुकशर्मणे
ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ततः प्रतिगृहीता ओं स्वस्तीत्यु
क्त्वा यथाशाखं ओं कोदात्कस्मादादिति कामस्तुतिं पठेत् । ततो दाता० अनेन कर्मणा
श्रीनारायणः प्रीयतामिति पठित्वा । विप्रं विसृज्य । कर्मपूषिकामो विष्णुं स्मरेत् । इति गोदा
नविधिः समाप्तः ॥ श्री पण्डित चतुर्थीलालविरचिते गौडीयश्राद्धप्रकाशे प्रेतकल्पे द्वादशाह
सपिंडनश्राद्धपद्धतिः समाप्ता । ॥ श्रीगदाधरः प्रीयताम् ॥

हाम्भरण करे । इति गोदानविधिः ॥ इतिश्री पण्डितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचिते गौडीय श्राद्धप्रकाशे महा-
नियोगे पद्धतिसर्वे प्रेतकल्पे द्वादशाहसपिंडनश्राद्धपद्धति भाषाटीकासहिता समाप्ता । श्रीगदाधरारयनमः ।

गणितनश्राद्ध करनेके अनंतर तेरहवें दिनसें लेकर महिने २ ऊनमासिक आदि षोडश १६ कुम्भश्राद्ध करणा चाहिये (रश्मि लिसते हैं) कर्त्ता स्नान, संध्या, तर्पण, आदि करके आचमन, और प्राणायाम करे। फिर जलसे अथ त्रयोदशदिनादारभ्य प्रतिमासं ऊनमासिकादि षोडश सान्नोदकुम्भदानं श्राद्धप्रयोगश्च। कर्त्ता स्नानसंध्यातर्पणादि विधाय। आचम्य प्राणानायम्य। सान्नोदकुम्भमुपनीय। कुश त्रय तिल जलान्यादाय। देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) ओं अद्यासुकगोत्रस्य पितुरसु कशर्मणः वसुरूपस्य परलोकैके शुचृपोपशांत्यर्थं यावत् वत्सरं तावत्प्रतिमासं सान्नोदकुम्भदान महं करिष्य इति संकल्पयेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा। दक्षिणासुखः पातितवामजातुर्द्विगुण भुञ्ज कुशत्रय तिल जलान्यादाय। ओं अद्यासुकगोत्र पितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमा सिक सान्नोदकुम्भश्राद्धे इदमासनं तुभ्यं स्वयाइत्यासन पित्रे (मोटकरूपं) सतिलजलप्रो मराहृगा कलश १ आमाम्न, घृत, शकर, आदि सहित अपने अगाडी रखे और कुशत्रय तिल जल लेकर, सवत्, मास, पक्ष, तिथि, आदिका उच्चारण करे और अपने पिताका नाम गोत्र लेवे ऊपरका संकल्प छोड़े। फिर अपसव्य

दक्षिणमुख, पातितवामजानु करके मोटक, तिल, जल लेंके और पिताके अर्थ मोटक रूप आसनदेके (हेपितः ऊनमा-
 सके निमित्त यहै अन्नसहित जलसे मराहूवा घट आपके निमित्त हे सो आपको प्राप्त होवो) ऐसे कहके ब्राह्मणके अर्थ
 देखे. । फिर दानप्रतिष्ठाके निमित्त रजत (चादी) की दक्षिणा ब्राह्मणको देके विष्णुस्मरण करे. । इसीतरे मासिक,
 क्षितं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् । पुनर्द्विगुणशुभ्रकुशादीन्यादाय । ओं असुकगोत्र पितरमुकश
 र्मेन् वसुरूप ऊनमासिकश्राद्धे इदं सान्नोदकुंभं तुभ्यंस्वया इति संकल्प्य ब्राह्मणाय दद्यात् ।
 तत ओं अद्य कृतैतत्सान्नोदकुंभदानप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रदेवतमसुकगोत्रायासुकशर्मणे
 ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इति रजतदक्षिणां दद्यात् । ततो विष्णुस्मरणं । एवमेव मासिका
 दि पंचदश सान्नोदकुंभदानं कुर्यात् ॥ इति प्रतिमासकर्त्तव्य कुंभदानप्रयोगः ॥ इदानीं
 शिष्टाः एकस्मिन्नेव दिने सर्वाण्यपकृष्य कुर्वति । तच्च पुत्रजन्म विवाहादि वृद्धि प्राप्त्ौ
 त्रिपाक्षिक आदि पदरह घटदान महिनेकी महिने कारण चाहिये । परंतु आजकल, उचमपुरुष कहतेहैकी पुत्रजन्म,
 विवाह आदि (वृद्धि) प्राप्त होनेके निमित्तसे एकहि दिनहि सपूर्ण पदरहकुंभ, आमन्न, वस्त्र, दक्षिणा आदि सहितका

दान साट्टिपाचमाससे अग्रा डेट्ट माससे १६ या. सतरासे दिन या. चोडये १४ दिन देश कुल, चारसे एक १ या दो २ या तीन ३ दिन मरण दिनेमें कमति दिन होनेमें करें, परतु उसदिन, मगल, आदित्य, शनैश्वर वार नहिहो और अधि-
 रतिथि, एरपाद, द्विपाद त्रिपादयोग, चतुर्दशी, शुक्रवार, कर्त्तिका जन्मनक्षत्र, भद्रा, व्यतिपात आदि निषिद्ध दिनरहित
 ऊनपाणमासिके वा त्रैपाक्षिके सप्तदशेहनि चतुर्दशेहनि वा यथाचारं एक द्वि त्रीन्यूनदिने
 भोमार्कमंद नंदा तिथियुग्मेकपाद द्विपाद त्रिपाद चतुर्दशी शुक्रवार कर्तुनक्षत्र भद्रा
 व्यतिपातादि वर्जिते सर्वाण्यपकृष्य कुर्यात् । वृद्धच्युतरनिषेधनात् ॥ तत्र प्रयो
 गः॥आचम्य प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादायादेश कालो संकीर्त्याओं अमुकगो
 त्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्तृपोपशांत्यर्थं ऊनमासिकं? मासिकं
 श्रेष्ठ दिनहो तव करे औरीरिवाह आदि शुभ कर्म करणेके अनंतर फेर ऊन वटदान नहि करणा चाहिये(पंचदशघटदानकी
 विधिः) आचमन प्राणायाम करके कुशत्रय तिल जल धारण करें। देश काल आदि ऊचारणकरणेके बाद (अमुकगोत्र
 नाम बाले मेरे पिताकी मारह १२ मासपर्यंत भूस्र प्यास शांति होनेकेअर्थ ऊनमास १ मास, २ त्रिपक्ष, ३ द्वितीयमास, ४

तृतीयमास, ५ चतुर्थ्यं०६ पंचम्यं०७ ऊनपाणमास, ८ षाण्मास, ९ सप्तम मास, १० अष्टम०११ नवम० १२ दशम० १३
 एकादश० १४ ऊनवार्षिक १५ श्राद्धनिमित्तक पंद्रह १५ अन्नसहित जलका घटदान महनेकी महने एक एक करने
 त्रिपाक्षिकं द्वितीयमासिकं तृतीय० चतुर्थ्यं० पंचम० ऊनपाणमासिकं षाण्मासिकं सप्तम०
 अष्टम० नवम० दशम० एकादश० ऊनाब्दिकं एतानि पंचदशसान्नोदकुंभश्राद्धानि स्वस्व
 काले कर्तव्यानि इदानीं मम कुले भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य सांकल्पेन
 विधिना तंत्रेण सधः करिष्ये इति संकल्पयेत्। ततोऽपसव्यादि कृत्वा कुश तिल जलान्या
 द्रायाओं असुकगोत्र पितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश सान्नोदकुं
 भश्राद्धनिमित्त इदमासनं पंचदशधा विभज्य तुभ्यं स्वधा इत्युक्त्वा । दक्षिणाग्रं मोटक
 पमासनं दद्यात् । तत ओ अत्र क्षणः कर्तव्यरिति पठित्वा । देशकालौ स्मृत्वा। ओ असुक
 योग्यया परं हमारं कुलं विवाह आदि वृद्धि (मंगल आचरण) आनेवालाहै इसवास्ते संपूर्ण पंद्रह १५ घट आज
 दिन एकदि साय संकल्प विधिसं दान करताहो) ऐसे पढके संकल्पका जल छोडदेवे । फिर अपसव्य आदिकरके मोट-

दान साष्टयान्चमाससं अथवा डेढ मासमें १६ या. सतरावें दिन या. चौदवें १४ दिन देश कुलाचारसं एक १ या दो २ या तीन ३ दिन मरण दिनमें रुमति दिन होनेसं करै, परंतु उसदिन, मंगल, आदित्य, शनिश्चर वार नहिहो और अधि-
 रुतिथि, एरुपाद, द्विपाद, त्रिपादयोग, चतुर्दशी, शुक्रवार, कर्ताका जन्मनक्षत्र, भद्रा, व्यतिपात आदि निषिद्ध दिनरहित
 ऊनपाण्मासिके वा त्रैपाक्षिके सप्तदशेहनि चतुर्दशेहनि वा यथाचारं एक द्वि त्रीन्यूनदिने
 भोमार्कमंद नंदा तिथियुग्मेकपाद द्विपाद त्रिपाद चतुर्दशी शुक्रवार कर्तुनक्षत्र भद्रा
 व्यतिपातादि वर्जिते सर्वाण्यपकृष्य कुर्यात् । वृद्धयुत्तरनिषेयनात् ॥ तत्र प्रयो
 गः॥आचम्य प्राणानायम्य । कुशत्रय तिल जलान्यादायादेश कालो संकीर्त्य।ओं असुकगो
 त्रस्य अस्मत्पितुरसुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुत्रूपोपशांत्यर्थं ऊनमासिकं? मासिकं
 श्रेष्ठ दिनहो तव हरे औरोरिगाह आदि शुभ कर्म करणके अनंतर फेर ऊन घटदान नदि करणा चाहिये(पंचदशघटदानकी
 विधिः) आचमन प्राणायाम करके कुशत्रय तिल जल धारण करै। देश काल आदि ऊचारणकरणके वाद (अमुकगोत्र
 नाम वाले मेरे पिताकी वारह १२ मासपर्यंत भूल प्यास शांति होनेकेअर्थ ऊनमास १ मास, २ त्रिपक्ष, ३ द्वितीयमास, ४

तृतीयमास, ५ चतुर्थे ०६ पंचम ०७ ऊनपाणमास, ८ षण्मास, ९ सप्तम मास, १० अष्टम ०११ नवम ० १२ दशम ० १३
 एकादश ० १४ ऊनवार्तिक १५ श्राद्धनिमित्तक पंद्रह १५ अन्नसहित जलका घटदान महनेकी महने एक एक करने
 त्रिपाक्षिकं द्वितीयमासिकं तृतीय ० चतुर्थे ० पंचम ० ऊनपाणमासिकं षण्मासिकं सप्तम ०
 अष्टम ० नवम ० दशम ० एकादश ० ऊनाब्दिकं एतानि पंचदशसान्नोदकुंभश्राद्धानि स्वस्व
 काले कर्तव्यानि इदानीं मम कुले भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य सांकल्पेन
 विधिना तंत्रेण सद्यः करिष्ये इति संकल्पयेत्। ततोऽपसव्यादि कृत्वा। कुश तिल जलान्या
 दावाओं असुकगोत्र पितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश सान्नोदकुं
 भश्राद्धनिमित्त इदमासनं पंचदशधा विभज्य तुभ्यं स्वधा इत्युक्त्वा। दक्षिणाग्रं मोटक
 यमासनं दद्यात्। तत ओं अत्र क्षणः कर्तव्यरिति पठित्वा। देशकालो स्मृत्वा। ओं असुक
 योग्यया परंतु हमारे कुलमें पिराह आदि वृद्धि (मंगल आचरण) आनेवालाहै इसवास्ते संपूर्ण पंद्रह १५ घट आज
 दिन एकदि साथ संकल्प विधिसें दान करताहों। ऐसैं पढकें संकल्पका जल छोडदेवें। फिर अपसव्य आदिकरकें मोट-

रूप आसन देवे और क्षण प्रदान करे। पथात् मोटक तिल जल लेके हेपितः (ऊनमासिक आदि ऊनवार्षिक पर्यंत परदर श्राद्धके निमित्त यह पंचदश १५ अन्न वस्त्र दक्षिणा सहित जलका घट आपके अर्थ होवो) ऐसे कहके दान प्र-
 तिष्ठा दीक्षिणासहित ब्राह्मणोंको १५ घट देवे और विष्णुस्मरण करे। इति पंचदशकुम्भदानम् ॥ अथ ऊनमासिकादि
 गोत्र पितरसुकशर्मन्वसरूप ऊनमासिकाद्यूनान्दिकान्त पंचदशश्राद्धनिमित्तकानि इमानि
 पंचदश सान्नोदकुम्भानि तुभ्यं स्वया इति संकल्प्य । दानप्रतिष्ठा दक्षिणासहित ब्राह्मणेभ्यो
 यथाचारं दद्यात् । ततः सव्येन विष्णुस्मरणं । इति सान्नोदकुम्भदानप्रयोगः ॥ अथ ऊनमा
 सिरुद्यूनान्दिकान्त पंचदशश्राद्धनिमित्तकेोद्विष्टम् । तच्च विवाहादिवृद्धिप्राप्तौ ऊनमासि
 कादिकाले एक द्वित्रीन्यूनदिने पूर्वोक्त मौमाकादिनिषिद्धवर्जिते कुर्यात् । तत्र प्रयोगः ।
 पंचदशश्राद्धविधिः । यदि विवाह यज्ञोपवीत. आदि मगलीक कार्य करणा होवेतो ऊनमासिक आदि समयमें माणादि-
 नसें एक १ दो २ या तीन ३ दिन कमति और मगलवार आदि पहले कहे होये निषिद्ध दिन त्यागके अच्छे दिन ऊन-
 मासिकादिश्राद्ध (छमाई) करे । (करणेकी विधि लिखतेहैं) श्राद्धके पहले दिन एक भक्त भोजन कर. श्राद्धके दिन

प्रातः काल स्नानकरके घुसाहुवा श्वेतवस्त्र धारण करे। (संध्या आदि नित्यकर्म करणके अनंतर गोमयसे लेपी होई शुद्ध-
 जने भाई आदिकेद्वारा पाक करावे। श्राद्धभूमिकों गोमय उलमुक मट्टि आदिसे शुद्धि करके तिल पीलीसरसों बिकी-
 श्राद्धपूर्वदिने एकभक्तादि नियमं विधाय। श्राद्धदिने प्रातः स्नात्वा। धौत श्वेतवस्त्रे परि-
 धाय। संध्यादि नित्यक्रियां समाप्य। पाकभूमिं गोमयादिना संस्कृत्य। तत्र सपिंडादिद्वारा
 स्वयं वा पाकं कुर्व्यात्। ततः श्राद्धस्थानं गोमयोदकेनोपलिप्य। ज्वलदंगारैः संशोध्य। गौ
 रसृत्तिकयाच्छाद्य। तिलैर्गौरसर्पपैश्च विकीर्य। वस्त्रादिना वेष्टयित्वा। तत्र श्राद्धसामग्रिं सं-
 पादयेत्। ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा। वाससी परिधाय। श्राद्धभूमिमागत्य। अन्नाभिप्रा-
 येण सिद्धमित्यभिधाय। आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत्। दीपरक्षा
 द्विजेन कार्या। काककुटुटादीच्छ्राद्धापहंतृनपसारयेत्। ततः कर्ता स्वासने प्राङ्मुख
 राण करे और वस्त्र लपेटे देवे और तहां श्राद्धसामग्रि स्थापनकरे। पश्चात् मध्याह्नेमें फेर स्नानकरे। शुद्धवस्त्र पहरे।
 श्राद्धभूमिमें आंकें पाक तैयारहे एतें ब्राह्मणोंको कहे। आसनकेसमीप तिलैके तेलसे भरहुवा दीपक जलके स्थापनकरे।

दीपककी रक्षा ब्राह्मणनें करणीचाहिये । काग मुर्गी गूर श्वान आदिनिपिद्ध जानवरोको दूर हटावे । फिर श्राद्धकर-
नेमाला आसनपे पूर्वको मुख फरके बैठे । सव्य होके पवित्रीधारण करे और आचमन प्राणायाम करे । कर्मपात्रको जल
तिल चंदन पुष्प आदिसे पूर्णकरके (ओ अपवित्र०) (पुंडरीकाक्षः पुनातु०) इसमंत्रसे दर्भायुक्त जल करके श्राद्धसा-
उपविश्य । पवित्रे परिधाय । सव्येन आचरय । प्राणानायम्य । कर्मपात्रं जल तिल
गंध पुष्पादिनाऽपूर्य। ओ अपवित्रः पवित्रोवा इति पठित्वा । ओ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति
कुशत्रयानीतजलेन श्राद्धीयद्रव्याणि स्वात्मानं च सिंचेत्। ततः ओ वैष्णव्यै नमः ओ काश्य
प्यै नमः ओ अक्षय्याये नमः ओ भूम्यै नमः इति नत्वा । ओ भगवत्त्रैगयायै नमः ओ भ
गवते गदाधराय नमः इति मनोवाक्कायेर्नमस्कुर्वीत् । ततः कुशत्रय तिल जलान्यादाय
मयी और अपने शरीरको प्रोक्षण करे । अनंतर (ओ वैष्णव्यै० ओ काश्यप्यै० ओ अक्षय्यायै० ओ भूम्यै० ओ भग-
वत्यै गय्यायै० ओ भगवते गदाधराय०) इन मंत्रोंकरके पृथ्वि० गया० गदाधरको मन वाणी शरीरकेद्वारा प्रणाम करे ।
फिर कुशत्रय तिल जल लेके

संकल्प ऊच्चारण करें । पिताका गोत्र नाम लेकर (अमुक गोत्र नामवाले मेरे पिताका ऊनमाससे लेकर ऊनवार्षिक
कर्मपुत्र पंचदशश्राद्ध अपने २ समयपर करणे योग्यथा परंतु हमारे कुलमें विवाह आदि वृद्धि (मंगल-
कार्य) होनेवालेहै इसवास्ते सबको खींचकर आजदिन एकोद्विष्टविधि करके एकसाथहि सक्षेपरीतिसें करताहुं) ऐसे
देशकालो संकीर्त्य० । ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य संवत्सरपर्यंतं
क्षुत्तृपोपशांत्यर्थ० । ऊनमासिकाधूनाब्दिकांतानि पंचदशमासिकानि स्वस्वकाले कर्त्तव्या
नि श्राद्धानि । इदानीं मम कुले भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य एकोद्विष्टविधि
ना तंत्रेण सद्यः कारिष्य इति संकल्पयेत् । (अधिकमासपाते तन्निमित्तकं अधिकं कार्यं) ततो
गायत्रीं त्रिर्जापित्वा । ओं देवताभ्यरिति त्रिर्जपेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । दक्षिणामुखः पाति
त्वामजानुः तिलगौरसर्पपान् गृहीत्वा । ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम । इदं
उच्चारण करके संकल्पका जल त्यागदेंवै (यदि बीचमें अधिकमास होवे तो पंदरकी जगे सोलह (षोडश) पद उच्चारण
करे । फिर तीनवेर गायत्री (देवताम्य०) इसमंत्रको तीनवेर जपे और अपसव्य दक्षिण मुख पातितवामजानु करके तिल

पीलातरसौं (ओं नमो नमस्ते०) (अग्निष्वात्ताः०) इत्यादि मंत्रोंकरके पूर्वादिक संपूर्ण दिशाओंमें और ऊपर नीचे को
 णोंमें रिकीरण करे। फिर तिल दर्मां लेके कटीभागमें स्थापन करे, इसको नोवीवध कहते हैं। पश्चात् एकपात्रमें जल डाले व
 श्राद्धं हृपिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः १ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राची रक्षंतु मे दिशं । तथा
 बर्हिपदः पांतु याम्यां ये पितरः स्थिताः २ प्रतीचीमाज्यपा रक्षेदुदीचीमपि सोमपाः । अधो
 र्ध्वमपि कोणेषु हविष्मंतश्च सर्वदा ३ रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोपतः । सर्वतश्चाधिप
 स्तेषां यमो रक्षां करोतुवे ४ वायुभूत पितृणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती । इत्यनेन पूर्वोदे दिक्षु
 अधस्थादूर्ध्वं कोणेषु च सर्वत्र तिलान् गौरसर्पणांश्च विकीर्य । निर्वीबंधं कुर्यात् । ततः
 कस्मिंश्चित्पात्रे जलं महीत्वा । दर्भरालोड्य । ओं यद्देवा देवहेडन मित्यादि कृष्मांडसूतेना
 भिमंत्र्य । उदक्यादि दृष्टिपातात् शूद्रादि संपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तु इति पाका
 सकौ दर्भासें हिलारे और (ओं यद्देवा देवहेडन०) इस कृष्मांडसूक्त करके अभिमंत्रण करे। फिर रजस्वला, ध्यान, गूरु,
 चांडाल आदिकी दृष्टिसें गूद्र आदिके स्पर्श दोषसें अशुद्ध होयेहुये पाकको दर्भाकरके जलसें प्रोक्षणकरे और हरिको

निवेदनकरे । फिर मोटक तिल जल लेंके । हेपितः ऊनमासिक आदि ऊनवार्षिकपर्यंत पंद्र आढके निमित्त यहै आ-
 मन आपको देताह सो ग्रहणकरो । ऐसे पढके पितृतीर्थसे दक्षिणको अग्रभागकरके मोटक रूप आसन देवे और (अ-
 दीन् संप्रोक्ष्य हरये निवेदयेत् । अथासनादि दानं । तत्र द्विगुणभुगनकुशत्रयतिलजलान्यादा
 य । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदशश्राद्धनि
 मित्त इदमासनं पंचदशधा विभज्य तुभ्यं स्वधा । इत्युच्चार्य्ये । पितृतीर्थेन मोटरूपं दक्षि
 णाग्रं कुशत्रयात्मकमासनमुत्सृजेत् । ततः ओं अपहताऽअसुरारक्षार्थं०सि वेदिपद इत्यासनो
 परि तिलान् विधीर्य्ये । अर्घपात्रोपरि पवित्रमेकं धृत्वा । ओं शन्नो देवीरिति जलं प्रक्षिप्य ।
 ओं तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमग्निः पृक्तः स्वधया पितृलोकान्प्रणा
 हि नः स्वधा इति तिलान् तूष्णीं गधपुण्ये च निक्षिपेत् । ततोऽर्घपात्र संपत्तिरस्तु इति पठि
 पृता०) इस मंत्रसे तिल भिरिण करके, एक अर्घपात्रमें दर्भाका एक पत्ता पवित्रके अर्थ धरे (शन्नो देवी०) इस-
 मंत्रमें जल डाले (तिलोसि०) इसमंत्रसे तिल और मंत्ररहित गध (चदन) पुष्प घालदेवे । फिर अर्घपात्रको वामे हाथमें-

लेंके पवित्रा पत्तलपें रखे (यादिव्या०) इस मंत्रसे अर्घपात्रकों अभिमंत्रणकरके दाहणे हाथसे । हेपित० ऊनमासि
 कादि ऊनवार्षिकपर्यंत पंचदश श्राद्धके निमिच येहे अर्घ आपके अर्थ देताहूं सो आपको प्राप्तहोवो । ऐसे कहके अर्घ-
 पात्रका जल पवित्रे ऊपर थोडासा डालदेवे । फिर अर्घपात्रकों (पित्रे स्थानमसि०) इसमंत्रसे आसनके निकृत्तिकोणमें
 त्वा । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा । तत्रस्थं पवित्रं पितृपात्रे दत्त्वा । ओं या दिव्या इति मंत्रे
 ण पात्रमभिमन्त्र्य । दक्षिणहस्तेन ओं असुकगोत्र पितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकादि
 ऊनाब्दिकांतपंचदशश्राद्धनिमित्त एष तेऽर्घःस्वधा नमः । इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घं
 दद्यात् । ततोऽर्घपात्रं ओं पित्रे स्थानमसीति पितृवामपार्श्वे न्युब्जं निदध्यात् । इदं दक्षिणा
 दानपर्यंतं न चालयेत् । ततो गंध पुष्प धूपं दीपादिकं धृत्वा । द्विगुणभुज कुशत्रयादीन्या
 दाय । ओं असुकगोत्रपितरसुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्त पंचदश श्राद्धनि
 निराला कंथा स्थापनकरे परंतु दक्षिणादानपर्यंत हलावे चलावे नहि । पश्चात् गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूर्गीफल य-
 मोपपीत वल्लआदि आसनपें रखके मोटक तिल जलकेद्वारा । हेपित० ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश श्राद्धके-

निमित्त यह गंध पुष्प धूप आदि सामग्रि आपके अर्थहे सो आपको प्राप्त होवो ऐसे कहके निवेदन करदेवै । फिर भोजनपात्र स्थापन जंगको साफ करके पत्तल रखे और सुपेदमट्टि या जलको आसनके बाहरकर मडलकरे । पश्चात् भोजनपात्रमें गरम २ अन्न वृत (व्यजन) शाग दही रायता वडा पकोरीआदि और ठडा २ जल अछितरे मित्त एतानि गंध पुष्प धूप दीप यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा । इत्युत्सृजेत् । तत ओ अर्चनं सपूर्णमस्तु इत्युत्त्वा । भोजनपात्रस्थापनदेश समाज्यं । पात्रं च दत्त्वा । गौरमृत्तिकया जले नवा आसनं वेष्टयित्वा । चतुरस्रादि मडल कुर्यात् । ततो भोजनपात्रे उष्णमन्नं सघृतमनेक व्यजनयुत सुशीत जलसहितं यथावत् परिविष्य । मधुनाभिवाद्यं । ओ मधुव्वाताऽऽकृतायते इति मन्त्रत्रयेण । ओ मधु मधु मध्वित्यभिमन्त्रयेत् । ततोऽन्नपात्र न्युञ्जपाणिभ्यां स्पृष्ट्वा । ओ पृथिवी ते पात्र द्यौरपिधानं । ब्राह्मणस्य मुखेऽ अमृतं छुहोमि स्वधा । ओ इदं विभुदे २ पात्रोंमें पुरसके (मधु) सहत लगावे (ओ मधुवाता०) इण तीन मत्रोंसे (मधु मधु मधु) दस्य अभिमन्त्रण करे । फिर अन्नपात्रको ऊधे उपर थली न्यारे न्यारे दोनो हाथोंसे स्पर्शकरके (पृथिवीते०)

(इद्विष्णु०) इत्यादि दोमंत्रोंको पढ़के अपना दाहणे हाथका अंगुठा (विष्णो हृदयर्ठ० रक्ष०) इस-
 मंत्रसे अन्नपे लगाने ओर (इदमन्न०) इत्यादि पढ़के (अपहृता०) इसमंत्रसे अन्नके बाहर कर लिल
 गिराएण करे । फिर वामे हाथको स्पश करतहुवा दाहणे हाथमें मोटकादि लेके हेपित ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकात प-
 णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपा ठं सुरे इति पठित्वा । स्वांगुष्ठमधोमुखमनखं
 ओं विष्णो कव्यर्ठ० रक्ष इत्यन्ने निवेश्य । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । एतत्सर्वं कव्य
 मिति पठित्वा । ओं अपहृता इत्यन्नपात्रपरितस्तिलान् विकीर्य । वामकरेण पात्रमत्यजन् ।
 दक्षिणकरेण कुशादीन्यादाया ओं असुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊनमासिकाधूनब्दि
 कान्त पंचदशश्राद्धनिमित्त इदमन्नं कव्यं सोपस्करममृतरूपं तुभ्यं स्वया । इत्युदकं पितृतीर्थेन
 पित्रासनवामभागे भूमौ क्षिपेत् । तत ओं अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं
 चदश श्राद्धनिमित्त क यद् अन्न कव्यसज्ञक उपस्करसहित अमृत रूप आपके अर्थ है सो आपको मिलो । ऐसे कहके
 आसनके गामभागमें संकल्पका जल त्यागदेवे । फिर (अन्नहीन०) इसमंत्रसे प्रार्थना करके तीनवेर गायत्रीजप और

(मधुवाता०) यह तीनमंत्र पढ़े और (कृणुष्वपाज०) इत्यादि पांच मंत्र (उदीरता०) इत्यादि १३ मंत्र (सहस्र-
 शीर्षा०) इत्यादि १६ मंत्र (आशुः शिशानो०) इत्यादि १७ मंत्र और (अमूर्त्तानां०) इत्यादि सप्तार्चि रुचि
 मच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्ये । सव्येन गायत्रीं त्रिर्जपित्वा । मधुव्वाता इति ऋचांमधु मधु मध्वि
 ति जपेत् । ततः कृणुष्वपाजरित्यादि रक्षोघ्नीः पंच ऋचः पठित्वा । तिलान् विकीर्ये । पितरं
 ध्यायन् । उदीरतामवर इत्यादि पितृमंत्रान् । पुरुषसूक्तं । अप्रतिरथंच जपेत् । ततोऽन्यान्य
 पि सप्तार्चिश्चिस्तव प्रभृतीनि यथाशक्ति पठेत् । ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ भूमिं
 प्रोक्ष्य । तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्थ्य । सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजन तिल जलं गृहीत्वा । औं
 अग्नि दग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृसायांतु परां गतिमि
 ति कुशोपरितदन्नं क्षिपेत् । ततः सव्येन आचम्य । हरिं स्मृत्वा । पूर्ववत् गायत्रीं । मधुवाता
 स्तोत्र शक्तिमाकुरु पठे । फिर भोजनपात्रकेसमीप जगें घोंके दक्षिणाग्रदर्भा धरे और सर्व प्रकारकाअन्न व्यंजन तिल
 जलसहित छेंके (अग्निदग्धा०) इसमंत्रले दर्भाके ऊपर विकीरण करे और सव्यहोंके आचमन विष्णुस्म-

रण गायत्रीजप (मधुघाता०) इत्यादि तीन मंत्रजपे । फिर भोजनपात्रकेसमीप चोकोण दक्षिणको नीला एकस्थान मट्टिसे बणारे और उसके बीच दोपत्तेवाली दर्मा दर्माकारके (अपहता०) इस मंत्रमें एक रेखा दक्षिणाग्र लिखके दर्मा उत्तरदिशामें रखदेंगे और (ओं येरूपाणि०) इसमंत्रको पठके जलताहुवा उल्मुक इति ऋचं मधु मधु मध्वितिच जपेत् । ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणप्लवं स्थानं निर्मायातन्मध्ये दर्मापिंडुलीमूलेन ओं अपहताऽअसुरा रक्षाठं० सि वेदिपदारिति रेखां दक्षिणाग्रां समुह्णिव्य । दर्मापिंडुलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिपेत् । ततः ओं ये रूपाणि प्रतिमुं चमाना० इति मंत्रेण ज्वलदुल्मुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात्ततः समूलकुशत्रयं रेखोपरिस्तीर्त्वा देवताभ्यारिति त्रिर्जपित्वा । सतिलजलपात्रं गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्रपितरस्तु कशर्मन् वसुरूप ऊनभासिकादिऊनान्दिकांत पंचदश श्राद्धनिमित्तपिंडस्थानेऽत्रावने निक्ष्वते रेखाऊपर भ्रमांकं दक्षिणतरफ छोड़े । फिर जडसहित तीन दुशाकापचा भिलाहोया वेदीपें धरकें (देवताम्य०) इणको तीनवेर पठे और तिल जलसे भराहुवा एक पात्र दाहणे हाथमें लेके, पिताका गोत्र नाम ऊच्चारण करणके अनंतर विदी-

में अर्चनेजन देवे। फिर सर्वप्रकारके अन्नमेंसे थोडा २ अन्न लेंके, सहत, घृत, तिल; व्यंजन आदि पिलावे और बीलके फलकी तरह गोलपिंड १ बुणावे। पिंडके घृत, सहत लगाके कुशा जल तिल सहित दाहणे हाथमें धारणकरे (हे पितः ऊनमासिकादि ऊनवार्षिकपर्यंत पंचदश श्राद्धके निमित्त यहै पिंड आपके अर्थ है सो आपको प्राप्तहोवो) ऐसे बहके स्वधा। इति कुशोपरि अर्चनेजनं दद्यात्। किंचिज्जलं पात्रे अवशेषयेत्। ततः सर्वस्मादन्नार्तिक चित्किंचिदुद्धृत्य मध्वाज्य तिल व्यंजनयुतं कृत्वा। बिल्वोपमं पिंडं निर्मायाद्युत मधुम्यामभि धार्य। द्विगुणभुग्नु कुशत्रयादिसहितमादाय। औ अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन् वसुरूप ऊन मासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश निमित्त एष ते पिंडः स्वधा नमः। इत्युच्चार्य। सव्योपगृही तदक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन कुशोपरि दद्यात्। ततो लेपभागभुजस्तृप्यंतु इति दर्भमूले करं प्रोच्छ्रयाहस्तौ प्रक्षाल्यासव्येन आचम्याहरिं स्मरेत्। ततोऽपसव्यादि कृत्वा। औ अत्र पितर्मा दोनो हाथोंसे कुशाकेऊपर पिंड देदेवे। फिर (लेपभागभुजस्तृप्यंतु०) इसमंत्रसे दर्भाकी जडमें पिंडकेपास दाहणो हाथ पुछ देवे और दोनो हाथ धोके सव्यसे आचमन हरिस्मरण करे। अपसव्य होके (अत्रपितर्मा०) इस मंत्रको पठताहुवा

वामीतरफसे उत्तरको मुख करके प्रसन्न मनसे श्वास बंध करे और उसीतरफ पीछा फिरके (ओं अमीमंदत०) इसको जपता होया पिंडपे श्वास छोडदेते । फिर अग्नेजन पात्रको लेके पिंडपर प्रत्यवनेजन देवे. (नीवी) कडमें रखिहोई दयस्वा यथाभागमा वृपायस्व इति पठित्वा । वामावर्त्तेनोदइमूखीभ्रूया।प्रीतमनाः श्वासं नियम्य तिनैव यथापरावृत्त्याओं अमीमंदत पितर्यथाभागमावृषायिष्ठ इति जपेत् । ततोऽवनेजन पात्रं गृहीत्वा । ओं अमुक० पितरमुकशर्मन् वसुरूप अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधानमः । इति पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा । नीवां विस्रंस्यासव्येन आचम्या।अपसव्यादि कुर्यात्।तत ओं नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवाय नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्दत्त सतस्ते पितर्द्वेष्म इति कृतां जलिः पठित्वा। ओं एतत्ते पितर्वासः।इत्यनेन पिंडोपरि सूत्रं ऊर्णादिशांवा दत्त्वा।ओं अमुक० तिल दुर्भानिहालके पिंडकेपास रसे । सब्य होके आचमन करे ।अपसव्य होके (ओंनमस्तेपित०) इसमंत्रसे अंजली बांध के प्रार्थना करे और (ओं एतत्ते पितर्वास०) यह मंत्र पठताहुवा मूतका तीन तार या ऊनका फल वा पिंडपे रखके सक

ल्व रीतिसँ त्याग करदेवै। फिर पिताका निमित्त लेकँ उत्सिके पिंडकी मंत्ररहित गंध, (चंदन) पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीप, ताबूल, पूगीफल, दक्षिणा आदि करकें पूजाकरै। पिंडकेपास पिंडका शेष अन्न विकीरण करदेवै और भोजनपात्रमें (ओं) पितरमुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते वासः स्वया नमः। इत्युत्सृजेत् । ततः पितरमुद्दिश्य तदीयपिंडे तूर्त्मीं गंध पुष्प धूप दीप तांबूल पूगीफल दक्षिणादीनि दद्यात्। पिंडशेषान्नं पिंडसमीपे वि किरेत् । ततो भोजनपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इति जलं। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं। अक्ष तं चारिष्टमस्त्विति यवांश्च दत्वा। ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य ऊ नमासिकाधूनाब्दिकांत पंचदशश्राद्धनिमित्त दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतां इति ति ल्युक्तमक्षयोदकं दद्यात् । ततः प्राङ्मुखः सव्येन कृतांजलिराशिषो गृह्णीयात् । ओं अ धोरः पिताऽस्तु इति। ततः ओं गोत्रं नोर्वर्द्धतां, दातारो नोभिवर्द्धतां, वेदाः संततिरेवच। श्रद्धा शिवा आप० सौमनस्य० अन्नतं चारिष्ट०) इणवाक्योकरकें जल, पुष्प, यव, तिल घालकें ऊपरके पष्ठिविभक्तिः सहित सं कल्पतसँ अन्नयोदक दानकरै । फिर सव्यहोकें अजली कियाहोया पूर्वको मुख करकें (ओं अघोरः पितास्तु० ओं गोत्र

नोरद्धतां०) इन मंत्रोत्तरके आशीप मागे और अपसव्यसे पिंडरे ऊपर त्रिकुश रसके (ओं उर्जं वहति०) इस मंत्रकरके दक्षिणाग्र जलधारा उशाके ऊपर देवे । फिर अर्घ्यपात्र सूधा करके यथाशक्ति रजत (चादी) और कुशा, जल, तिल च नो माव्यगमत्, बहुदेयंच नोऽस्तु। अन्नंच नो बहुभवेदतिथीश्च लभेमहि। याचितारश्च नः संतु माचयाचिण्मकंच नः । एताः सत्याआशिपः संतु इति वदेत्। ततोऽपसव्यादिकृत्वा।पिं डोपरि सपवित्रकुशत्रयमास्तीर्य। स्वधां वाचयिष्ये । ओं स्वधोच्यतामिति पठित्वा। ओं ऊर्जं वहतिस्मृतं घृत पयः कीलालं परिलुतं स्वधास्थ तर्पयत मे पितरमिति मंत्रेण कुशोपरि दक्षि णायां जलधारां दद्यात्। ततोऽर्घ्यपात्रमुत्तानीकृत्य । यथाशक्ति रजतद्रव्यं कुशादीनि चादाय ओं अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत् ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकांत पंचदश मासिकश्राद्धनिमित्तकेकोद्विष्टश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चद्रदेवतममुकगोत्रा यामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे इति ब्राह्मणाय दद्यात्। ततो ब्राह्मणभोजनसंकल्पः। लेंके ऊपरके पश्चिमभक्तियुक्त वाक्यसे श्राद्धप्रतिष्ठकेअर्थ दक्षिणा ब्राह्मणको देवे । अनंतर मोटक, जल, तिल लेंके

(अमुकगोत्रनामवाले मेरे पिताजीकि परलोरुमें बारह १२ मासतक भूख प्यास दुरहोनेकेअर्थ इण कियेहोये ऊनमा-
 सिक आदि ऊनवार्षिकपर्यंत १५ श्राद्धोंकी सांगता सिद्धिकेलिये पंदर १५ ब्राह्मणोंको भोजन करताहुं ऐसे कहके ब्रा-
 तद्यथा । कुशत्रयादीन्यादाय । देशकालौ स्मृत्वा । ओं अमुकगोत्रस्य अस्मात्पितुरमुकशर्मणः
 वसुरूपस्य परलोकैः सवत्सरपर्यंतं क्षुतृपोपशांत्यर्थं कृतैतत् ऊनमासिकादि ऊनाब्दिकांत
 पंचदश० मासिकश्राद्धनिमित्तकैकोद्विष्टकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं पंचदश संख्याकान् ब्राह्म
 णान् तृप्तिपर्यंतान्नेन भोजयिष्ये इति संकल्पयेत् । ततः पिंडमुत्थाप्य स्थाल्यां नि
 धाय अवघ्राणं कृत्वा । पिंडाधस्तृदर्मं चोल्मुकमग्नौ क्षिपेत् । तत ओं अभिरम्यता
 मिति विसृज्य । देवताभ्यरिति त्रिःपठित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । स
 व्येन आचम्य । ओं प्रमादादिति पठित्वा । कर्मपूर्त्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडादिकं गवा
 ल्मणभोजनका संकल्प छोड़े । फिर पिंडकों उठाके थालीमें रखे । सुंगके पिंडोंके नीचेकी दर्भा उल्मुक अग्निमें डाल-
 दें । पश्चात् (ओं अभिरम्यतां०) इसकों पढके तीनबेर (देवताम्य०) इसमंत्रको जपे और दीपकों नंदोंके हाथ

पर पोरै । सब्यसौ आचमन करै (ओं प्रमादात्०) इत्यादि कर्मपूर्ति के अर्थ विष्णुस्मरण करै । फिर पिंड आदि गौ वृ-
 त्तम, या, बकरे गौं सिला देरै और वैश्वदेव गौं आदिके अर्थ बलिदान करनेके अनंतर श्राद्धसामग्री ब्राह्मणको देके १५
 प्रायणोक्तो भोजन करावै । अथवा १५ आमात्र देवै । फिर (ओं यस्यस्मृत्या०) यह पढ़के अतिथि, पुत्र, भाई,
 दिग्भ्यो दत्त्वा वैश्वदेवत्रिलिकर्माणी कृत्वा श्राद्धीयद्रव्याणि आचार्याय प्रतिपाद्या यथाशक्ति पंच
 दशप्रभृति ब्राह्मणान् भोजयेत् इति मयः पूर्वसंकल्पपितान् पंचदश सान्निदकुंभान् दद्यात् तत
 ओं यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वदे तमच्युतमि
 ति पठित्वा । अतिथि सुत भृत्य बांधवादिभिः सह भुंजीत । एवमेव मात्रादिश्राद्धप्रयोगः ।
 ततः पूर्णं संवत्सरे क्षयाहदिने सांवत्सरिकश्राद्धं कुर्यात् इति ऊनमासिकाघ्नूनादिकान्तं पंचद
 श मासिका श्राद्धनिमित्तकेकोद्विष्टश्राद्धपद्धतिः समाप्ता । ओं गदाधरार्पणमस्तु ॥ ॥ अथ
 नोकर बांधव, मित्र आदिकरके सहित भोजन करै । इसीतरे माना, भाई, चाचे आदिका श्राद्ध करै और पूर्ण संवत्
 रीनेमें मरणके दिन सांवत्सरिक श्राद्ध करै । इति ऊनमासिकादि पंचदश श्राद्धविधिः समाप्तः । प्रथम श्राद्धके पहिले

दिन (निरामिष) मास आदि निषिद्ध वस्तु त्यागके उत्तम हविष्यान्नका एकभक्त भोजनकरे । फिर रात्रिमें ब्राह्मणों-
 को नौता देके प्रातःकाल सुपेद धोति अंगोछा लेके स्नान करे और संध्याआदि नित्यकर्म, समाप्ति करके पाकभूमि-
 को गोमय, मिट्टी, जलद्वारा शुद्ध करे । फिर तहां नवीन शुद्ध पात्रोंमें शक्तिमुजब अच्छे अन्न नानातरहके भाइ बां-
 सांवत्सरिकेकोदिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र तावत्पूर्वेद्युर्निरामिषमेकवारं भुक्त्वा । श्राद्धदिने प्रातः
 श्वेतवस्त्रयुगलेन स्नात्वा । नित्यावश्यकं समाप्य । पाकभूमिं गोमयादिना संस्कृत्य । तत्र नूतनपा
 त्रेषु यथाशक्त्युत्कृष्टमन्नं नानाप्रकारं सपिंडस्त्रीद्वारावा पाचयेत् । स्वयं वा पंचेत । ततः श्राद्धभूमिं
 गोमयोदकेनोपलिप्य । ज्वलदंगारैः संशोध्य । गोरमृत्तिकयाच्छाद्य । तिलैर्गौरसर्षपैश्च विकीर्य
 वस्त्रादिना वेष्टयित्वा । तत्रश्राद्धसामग्रीं संपादयेत् । ततो मध्यान्हं पुनः स्नात्वा । धौतशुक्लवास
 पव स्त्री आदिके द्वारा करावे । अथवा खुद यजमान करे । पश्चात् श्राद्ध करणेको भूमिमें गोमय जल आदिका लेपा
 करे और जलता होया नृण लेके फेंरे । फिर बारीक साफ वालुका या मिट्टी विछाके तिल सरसोंका विकीरण
 करे और वह्न आदिसे वेष्टन करके तथा श्राद्धसामग्री संपूर्ण स्थापन करदेवे । फिर मध्यान्हमें अर्थात् ग्यारह

बनेंके अनंतर स्नान करके सुपेद वस्त्र पहिरे और श्राद्धस्थानमें आके आसनके समीप तिलोंके तेलसे भराहुवा दीपक जलके ब्राह्मणकेद्वारा दीपककी वायु आदिसें रक्षा करे और काग, मुर्गी, कुत्ता, चील, सूर, माजूर आदि निशिद्ध जानवरोंको दूर दटा देवे। कारण यह जानवर श्राद्धको नाश करतेहैं। पश्चात् श्राद्ध करने वाला आसनपे सी परिधाय। श्राद्धस्थानमागत्या अन्नाभिप्रायेण सिद्धमित्यभियाया। आसनसमीपे तिलैतलेन दीपं प्रज्वालयास्थापयेत्। दीपरक्षा द्विजेन कार्या। काक कुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतृनपसारयेत्। तः कर्ता स्वासने ग्राह्मुख उपविश्या। पवित्रे धृत्वा। सव्येन आचम्य प्राणानायम्य। कर्मपात्रं जल तिल गंध पुष्पादिभिः परिपूर्ये। ओ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरे तुंडरीकाक्षं सवाहाभ्यंतरः शुचिः। १। ओ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति पठित्वा। कुशत्रयानीत जलेन श्राद्धीयद्रव्याणि स्वात्मानंच सिंचेत्। तत ओ वैष्णव्यै नमः। ओ काश्यप्यै नमः। ओ पूर्वको मुख करके बैठे। सव्य होके पवित्र घाटण करके आचमन करे (अपवित्र०) इस श्लोकको पढ़के। पुंडरीकाक्षका स्मरण करताहुवा दर्भाकेद्वारा जलकरके श्राद्धसामग्रीको तथा स्वशरीरको पवित्र करे। पश्चात्

(वेष्णव्ये०) इत्यादिनामोसं भूमिको नमस्कार करके गणा और गदाधर भगवानको मंत्र वाणी काया करके नमस्कार
 करे। फिर ताम्रके पात्र आदिमें त्रिकुश, तिल, जल, चंदन, पुष्प आदि लेके संवत्, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार आदिका
 उच्चारण करके अपने पिताका गोत्र तथा नाम उच्चारण करे और कहैकी अनुकनामवाले मेरे पिताजीका
 अक्षय्यायै नमः। ओं श्रूम्ये नमः। इति नत्वा। ओं भगवत्यै गयायै नमः। ओं भगवते गंदा
 धराय नमः। इति मनो बाह्यार्थैर्नमस्कारं कुर्यात्। ततः कुशत्रय तिल जलान्यादायादेशकालो
 संकीर्त्ये। ओं अनुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरनुकशर्मणः वसुरूपस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं
 करिष्ये। इति संकल्प्य। गायत्रीं त्रिर्जपित्वा। ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवच
 नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः इति त्रिः पठेत्। ततोऽपसव्येन तिलगौरसर्षपान् गृ
 हीत्वा। ओं नमो नमस्ते गोविंद पुराण पुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः
 मावत्सारिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध करताहूँ। ऐसे कहके पात्रका जल आदि भूमिपे त्याग देवे। फिर ब्राह्मणकी आज्ञा लेके
 तीनबेर गायत्रीका तथा (देवताभ्यः०) इत्यादि मंत्रका जप करे। पश्चात् अपसव्यहोके तिल और सपेद सिरसों वाम

शोधमें धारण करे और (नमोनमस्ते० अग्निज्वालाः पितृगणा०) इत्यादि मंत्रोत्तरके पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दि-
 शाओंमें तथा चारों कोण ओर नीचे तथा ऊपरको सर्वत्र विकरण करे। फिर तिल दूर्भा लेंके वाम या दक्षिण पा-
 १ ॐ अग्निज्वालाः पितृगणाः प्राचीं रक्षंतु मे दिशं तथा बर्हिषदः पांतु याम्यां ये पितरः स्थि-
 ताः २ प्रतीचीमाज्यपास्तद्रुदीचीमपि सोमपाः। अधोर्ध्वमपि कोणेषु हविष्मंतश्च सर्वदा ३
 रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोपतः । सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु वैधवायुभूतपितृ-
 णांच तृप्तिर्भवतु शश्वती ॥ इत्यनेन पूर्वादि दिक्षु अधस्थादूर्ध्वकोणेषु च सर्वत्र तिलान् गो-
 रसर्षपांश्च विकीर्यो वामे दक्षिणे वा कटिभागे नीवीचं कुर्यात् । ततः सव्येन कस्मिंश्चित्पात्रे
 जलं गृहीत्वा । दूर्भरालोड्याओं यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो
 विश्वान् सुञ्चत्वठे० हसः १ यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चकृमाव्वयम् । वायुर्मा तस्मादेन
 र्भके कटोवस्त्रमे धारणकरे । इसको नीवीचयन कहतेहैं । पश्चात् सव्य होके ताचे आदिके पात्रमें जल डाले और उस
 पानीको दूर्भा करके आलोडन अर्थात् हिलाने और (यद्देवादेवहेडनम०) इत्यादि तीन मंत्रोत्तरके अभिमन्त्रणकरे ।

फिर (जसकी), धान आदिकी दृष्टिसे तथा शूद्र आदिके स्पर्शसे पाककी अशुद्धि दूर करनेके लिये उसी जलका द-
 र्शासे अन्न आदि सामग्रीका प्रोक्षणकरे। पश्चात् अपसव्य दक्षिणमुख पातितजानु करके बीचसे दूणी ओर बटिदुइ त्रि-
 सो विधान् मुञ्चत्वर्ठ०हसः २ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाठि०सि चक्रमावयमसूर्यो मा तस्मा
 देनसो विधान्मुञ्चत्वर्ठ०हसः ३ इति कृष्मांडसूक्तेनाभिमन्त्र्य । ओं उदक्यादि दृष्टिपातात् शू
 द्रादिसंपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तुइति पाकादीन् संप्रोक्ष्याहरये निवेदयेत् । ततोऽ
 पसव्यं कृत्वा । द्विगुणभुज्ज कुशत्रय तिल जलान्यादायाओं अद्याऽमुकगोत्राऽस्मपितरमुकश
 र्मन् इदमासनं तुभ्यं स्वया इत्युच्चार्य। पितृतीर्थेन मोटक रूप दक्षिणाग्रकुशत्रयात्मकमासनमु
 त्प्रेजेत् । तत ओं अपहताऽसुरारक्षार्ठि०सि वेदिषद् इत्यासनोपरि तिलान् विकीर्य (आयन्तुन
 इति मंत्रं जपेत् नवा) ततोऽर्धपात्रोपरि पवित्रं घृत्वा । तत्र ओं शन्नो देर्वारभिष्टयऽऽआपो भव
 कुशा तिल जल सदित लेँ । फिर अपने पिताका गोत्र नाम उच्चारण करके पितृतीर्थसे आसनके अर्ध देदेवे और सं-
 कल्पना जल वेदिये छोडेदेवे । आसन देनेके अनंतर (अपहता०) इसमंत्रसे आसनपर तिल गेरे और (आयतनः०)

इसमंत्रको पढ़े अथवा नहिभी पढ़े। कारण एकोद्विष्टमें आवाहन मंत्रका त्याग होनेसे पश्चात् अर्घपात्र रखके उसमें पवित्री अर्थात् प्रादेशामात्रदर्भाका दो पत्ता अग्रभागधरे और (शन्नोदेवी०) इसमंत्रको पढ़के जल घाले। तथा (तिलोत्ति०) इसमंत्रसे तिल गेरे और मंत्रके बिनाही चदन पुष्प आदि घालदेवै। पश्चात् अर्घपात्रको वामहाथमें लेके न्तु पीतयोशन्नोऽभि स्रवन्तु न इति मंत्रेण जलं प्रक्षिप्याओं तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रद्भमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृलोकान् प्रीणाहि नः स्वधा इतितिलान् तूष्णीमे व गंध पुष्पे निक्षिपेत्। ततोऽर्घपात्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा। अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा। तत्रस्थं पवित्रं पितृपात्रे धृत्वा। ओं यादिव्या आपः पयसा संवभृदुथर्याऽअन्तरिक्षा उत पार्थिवीवर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शठे० स्योनाः सुहवा भवंतु इत्यर्घपात्रमभिमंत्र्य दक्षिणहस्ते कृत्वा। ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् एषते हस्तार्धः स्वधा नमः इत्युच्चार्य पवित्री पत्तेपर स्थापन करे और (यादिव्या०) इसमंत्रसे अर्घपात्रका जल मंत्रकरके द्विगुणभुम अर्थात् मोटक तिल जल लेके पिताका गोत्र नाम उच्चारण करे और सकल्परीतिसे अर्घपात्रका जल दाहिने हाथकरके पितृतीर्थसे पवित्री

दे घोड़ा देगदेवे और अर्घपात्र जलसहित अगाडी स्थापन करदेवे । पश्चात् सव्यहोके (आपः शिवा०) इसमंत्रकरके
 अर्घपात्रके जलका शिरपें अभिषेक करे । फिर अपसव्य आदि होके (पित्रेस्थानमसि०) इसमंत्रसे अर्घपात्रको आ-
 सनके वामे वाके नीचेको मुख करके स्थापन करदेवे परंतु दक्षिणादिदे पहीली पात्रको वहासे उठावे नही । फिर गंध,
 पितृतीर्थेन पवित्रोपरि सावशेषं अर्घं दद्यात् । अर्घपात्रंच पुरतः स्थापयेत् (ततः सव्येन
 ओं आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शांततमास्ते कृण्वंतु भेषजमिति शिरस्यभिषेकं कृत्वा)
 अपसव्यादिना ओं पित्रेस्थानमसील्युक्त्वा । अर्घपात्रमधोमुखं पितृवामपार्श्वे निदध्यात् ।
 एवंस्थितं अर्घपात्रं दक्षिणादानपर्यंतं नोद्धरेन्न चालयेत् । ततो गंध पुष्प धूप दीपादिकं
 दृत्वा । द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरसुकशर्मन्द् एतानि गंध
 पुष्प धूप दीप तांबूल पूर्गीफल यज्ञोपवीत वासांसि तुभ्यं स्वधा । इत्युत्सृजेत् । तत ओं अ
 पुष्प, धूप, दीप, नागरपान, सुपारी, यज्ञोपवीत, बस्त्र आदि पिताके आसनपे रखके मोटक तिल जल दाहने हाथमें लेवे
 और पिताका गोत्र नाम उच्चारणकरके गंध पुष्प आदि पिताके अर्थ संकल्प रीतिसे करदेवे और संकल्पका जल अ-

गाड़ी त्यागनकरै । फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करै और भगाड़ी पडाहुवा पुष्प तिल आदि दूरकरके भोजनपात्रस्था-
 पनकरणके अर्थ जलसे जगह धोवै और पात्रदेके सुपेद बारीक मीठीसे या जलसे आसनके बाहर मंडलकरै । यह मंड-
 ल ब्राह्मणके चदरस, क्षत्रियके त्रिकोण, वैश्यके गोलकरणा चाहिये । यहि दूसरेका मकान या जगें होवेतो भूस्वामिके
 चैनसंपूर्णमस्त्वित्युक्त्वा । भोजनपात्रस्थापनदेशं समाज्यं । पात्रं दत्त्वा । गौरमृत्तिकया
 जलेनवा आसनं वेष्टयित्वा । मंडलं कुर्यात् (अत्र परकीयभूमौ श्राद्धकारणे औं इदमन्नं भू-
 स्वामिपितृभ्यो नमः । इति घृतादियुक्तमन्नं दभोपरि क्षिपेत् । स्वसत्वेतु न दद्यात्) ततो भो-
 जनपात्रे उष्णमन्नंसघृतं अनेकव्यंजनयुतं सुशितलज्जलसहितं यथावत् परिविश्य मधु दत्त्वा ।
 औं मधुवाताऽऋतायते इति मंत्रत्रयेण औं मधु मधुमध्विति चाभिमंत्रयेत् । ततोऽन्नपात्रं न्यु-
 अर्थ घृतयुक्त अन्नकी (इदमन्नं भूस्वामि०) इसमंत्रसे बलिदेवै । यदि जीवताहोवेतो किराया देदेवै और अपने घरमें
 श्राद्ध करनेवाला तथा तीर्थ क्षेत्र आदिमें यह बलि नहि देवै । पश्चात् भोजनपात्रकेविषे गरम अन्न घृत, व्यंजन शाग
 सहित परोस देवै और शीतल जलकापात्र पास रखै । फिर अन्नपं सहत लगाके (मधुव्वाता०) (मधु मधु मधु) इण

नीमंत्रोंकरके अभिमंत्रणकरै । फिर अन्नपात्रको दोनो ऊँधेहाथोंसे (व्यस्त) छुदा २ ऊपरथली रत्नके स्पर्शकरै अं
 पृथ्वी ते पात्रं०) ओं (इदं विष्णुर्विक्रमे०) यहै २ मंत्रपढ़के अपने ऊँधे कियेहोये दाहणे हाथके नखरहित अंगुठे-
 जपाणिभ्यां व्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा । ओं पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य सुखेऽअमृतेऽअमृतं
 जुहोमि स्वधा इति पठित्वा । ओं इदं विष्णुर्विक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाठं०
 सुरे इत्येतामृचं च जप्त्वा । स्वांगुष्ठमधोमुखमनखं । ओं विष्णो कव्यर्थं० रक्ष इति यजुषाऽ
 न्नेनिवेश्य । इदमन्नन् । इमा आपः । इदमाज्यं । एतत्सर्वं कव्यमिति पठित्वा । ओं अपहताऽ
 असुरा रक्षार्थं० सि वेदिपदः इति अन्नपात्रपरितस्तितान् विकीर्यैवामकरणे पात्रमत्यजन्नाद
 क्षिणकरेण द्विगुणभुन्नकुशत्रयादीन्यादायाँ ओं अधामुकगोत्र अस्मित्पितरमुकशर्मन् इदमन्नं
 कव्यं सोपस्करं परिविष्टममृतरूपं तुभ्यं स्वधा इत्युदकं पितृतीर्थेन पित्रासनवामभागे भूमौ
 को अन्नके (ओं विष्णो कव्यर्थं० रक्ष०) इस मंत्रसे लगावे और (ओं इदमन्नं०) इत्यादि पठके (ओं अपहता०)
 इसमंत्रसे अन्नपात्रके बाहरकर तिल विकीरणकरै । फिर वामे हाथसे अन्नपात्रको नहि त्यागता हुवा दाहणे हाथमें मो-

एक तिल जल लेके ऊपरके संकल्पसे पिताके अर्थ करे । संकल्पका जल वामभागमें भूमिपे त्याग देंगे । फिर (ओं
 अन्नहीन०) इसमंत्रसे प्रार्थना करके सबसे ओंकारव्याहृतिसहित गायत्रीका तीनबेर जपकरे और अंगली करके
 क्षिपेत् । तत ओं अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्विति प्रार्थ्यास
 व्येन सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं त्रिः सकृद्वा जपेत् । कृतांजलिर्द्वैभष्वासीनः । ओं मधुवा
 ताऽऽक्रतायते मधु क्षरन्ति सिधवः । माध्वीर्नैः संत्वोषधीः ? मधु नक्तमुतोपसो मधुमत्पार्थिव
 ठं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता २ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गवो भवं
 छु नः ३ इति ऋचं मधु मधु मध्वीति च जपेत् । तत ओं ऋणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं र्या
 हि राजेवामवाँऽइमेन । तृष्वीमनुष्प्रसितिं दूणानेस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ? तव भ्रमासऽ
 आशु यापतंत्यनु स्पृश धृपताशोशुचानः । तपूठे०ष्वन्ने छद्वापतंगान संदितो विसृज व्विष्व
 गुल्फाः २ प्रतिस्पशो विसृजनूर्णितमो भवापायुर्विशोऽअस्या अदब्धः । यो नो हूरेऽअघश
 (ओं मधुवाता०) इत्यादि तीनमंत्र (ओं ऋणुष्वपाज०)

इत्यादि रक्षोघ्न पांच मंत्र जपे । फिर तिल विकीरण करके (ओउदीरता०) इत्यादि १३ मंत्र (ओसहस्रशीर्षा०) इत्यादि १६ मंत्र. (ओआशुःशिशानो०) इत्यादि अप्रति रथ मंत्र १७ जपे और (ओसप्तव्याधाः०) इत्यादि १० सोयोऽअन्त्येमेमा किष्टेव्यथिरादधर्षित् ३ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यांतनुष्वन्यमित्रा ठे ओषता ति ग्महेते । यो नोऽअरातिठं० समियानचक्रे नीचातं धक्ष्यत सन्नशुष्कम् ४ उर्ध्वो भव प्रति व्विद्धयाद्धयस्मदाविष्कृणुष्वदेव्यान्येमे। अवस्थिरातनुहियातुजूनां जामिमजामिभ्रमृणीहि शत्रून् ऽअग्नेष्वतिजसा सादयामि ॥ ५ ॥ इति रक्षोघ्नीः पंचक्रुचः पठित्वाभूमौ तिलान् वि कीर्ये। पितरं चिंतयन्। ओ उदीरतामवर इत्यादि त्रयोदश मंत्रान्। ओ सहस्रशीर्षा पुरुष इति पुरुषसूक्तं । ओ आशुः शिशानो इत्याद्यप्रतिरथं च जपेत्। तत ओ सप्तव्याधा दशाण्षुमृगाः कालंजरे गिरौ । चक्रवाका शरद्द्वीपे हंसाः सरसि मानुषे १ तंभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेद पारगाः । प्रास्थिता दूरमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसीदथ २ इति हविः स्तोत्रं । अन्यानि च सप्ताचि हविस्तोत्र और रुचिस्तोत्रप्रभृति अन्य पवित्र स्तोत्र शक्तिमाफुक

जपे । फिर अपसव्य करके भोजन पात्रके समीप जलसे भूमि धोके दक्षिणाग्र त्रिकुशा रसे और सर्वतरहका अन्न, व्यंजन, तिल, जलसहित लेके (ओं अग्नि दग्धा०) इस मंत्रकरके कुशाके ऊपर विकीरण करे और सब्यसे आचम-

रुचिस्तवप्रभृतीनि यथाशक्ति जपेत् । ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ भूमिं प्रोक्ष्यात्तत्र दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्यौ सर्वप्रकारमन्नं सव्यंजनमुद्धृत्य । सतिलमेकीकृत्य । ओं अग्निदग्धा श्र ये जीवा येष्यऽदग्धाः कुलेममाभूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिं ? इति मंत्रेण कुशोपरि तदन्नं विकीर्य्य । सव्येन आचम्याहरिं स्मृत्वा पूर्ववत् गायत्रीं मधुवाता इति ऋचं मधु मधु मध्विति च जपेत् । ततोऽपसव्येन उच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणपुवं स्थानं निर्मायात्तन्मध्ये दर्भपिंडुलीमूलेन ओं अपहताऽअसुरा रक्षाठं० सि वेदिपद इति वामान्वाख्ये दक्षिणकरेण प्रा

न, हरिस्मरण करे । फिर तीनवरे गायत्रीजप (ओमधुवाता०) इत्यादि तीनमंत्रोंका जप करे और अपसव्यसे भोजनपात्रके समीप चौकोण दक्षिणको नीचा एक स्थान (बेदी) बुनावे । फिर उसके बीचमें दो पत्तेवाली दर्भकीकरके

(ओंअप्रहृता०) इममंत्रसे दक्षिणाग्र एक रेखा निकालके दर्भाको उत्तरदिशामें त्यागदेवै । फिर (ओंयेरूपाणि०) इसमंत्रमें अग्निसे जलतादृशा (उल्मुक) काष्ठकाशकू रेखाकेऊपर भ्रमाके दक्षिणमें स्थापनकरै । पश्चात् मूलकनेसे अछतर छेदन करीहोई त्रिकुशा रेखाकेऊपर धरकें(देवताभ्यः०) इस मंत्रको तीनवेर पढ़ै । फिर तिल जल सहित एक देशमात्रारेखां दक्षिणाग्रां समुल्लिख्य । दर्भपिंडुलीमुत्तरस्यां दिशी निक्षिपेत् । तत ओं येरू पाणि प्रतिमुंचमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरंति । परा पुरो ये भरन्त्यग्निष्ठांल्लोकाल्प्रणु दाल्यस्मादिति मंत्रेण ज्वलद्दुल्मुकं रेखोपरि भ्रामयित्वा । दक्षिणतो निदध्यात् ॥ तत उपमूल सकल्लून कुशत्रयं रेखोपरि स्तीर्त्वा । देवताभ्यरिति त्रिर्जपित्वा । सतिलजलपात्रं गृहीत्वा । ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् अत्रावनेनिक्ष्वते स्वधा इति कुशोपरि अ वनेजनं दधात् । ततः सर्वस्मादश्नात्किचिद्दुद्ृत्य । मध्वाज्य तिल सर्वं व्यंजनयुतं पात्रे पात्र लेकं पिताका गोत्र नाम उच्चारण करै और कुशाकेऊपर अवनजन देवै । फिर सपूर्ण अन्नमेंसे थोडा २ लेकें स- हत, घृत, तिल, व्यंजन जादि

मिलौं और वीलके फलकी माफिक पिंड बनके, सहत, घृतकामालम करै । फिर मोंटक तिल जलसहित पिंड लेके पिताके गोत्र नामसे दोनों हाथसे वेदीपे पिंड धरै और (लेपभागभुजस्तृप्यह०) यहे मंत्र पढके दाहणे हाथके लगाहुवा अन्न पिंडकेपास पुछके डालदेवे । फिर हाथ धोके सब्यसे आचमन, हरिस्मरण करै और अपसव्य होके (ओंअत्र-

कृत्वा । विल्वोपमं पिंडं निर्मायं । मधुघृताभ्यामभिचार्यं । द्विगुणभुजकुशत्रयादि सहितमादा
य । ओं अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिंडः स्वधा नम इति सब्योपगृही
त दक्षिण हस्तेनावनेजनस्थाने पिंडं दद्यात् । ततो लेपभागभुजस्तृप्यंतु इति दर्भमूले करं
प्रोच्छ्र्य । हस्तौ प्रक्षाल्य । सब्येन आचम्य । हरिं स्मरेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । ओं अत्र पितर्माद
यस्व यथाभागमावृषायस्व इति पठित्वा । वामावर्तेनोद्दक्षुखीभूय । प्रीतमनाः श्वासं नियम्य

पितर्माद०) इस मंत्रको पढ़ताहुना व मंतरफसे उत्तरको मुख करके प्रसन्नमनके द्वारा श्वास बधकरके ऊसीतिरे पीछा-
हटके (ओंअमीमदत०) इसमंत्रसे पिंडपे श्वास छोडदेवे । फिर अर्वनेजनपात्र लेके पिंडपे प्रत्ययेनजन देवे

(नीवी) कडमें रखिहोई तिल कुशा पिंडकेपास गेरदेंवै । और सर्वसंसे आचमन करे । फिर अपसव्य हाक
(ओंनमस्तेपित०) इसमंत्रसे अजली कियाहुवा प्रार्थना करे और (ओं एतत्ते पितर्वासः०) यहै मंत्र पढके

तेनैव यथा परावृत्य । ओं अभी मंदंत पिनर्यथाभागमावृषायिष्ट इति जपेत् । ततः पूर्वदत्ता
वनेजनपात्रेण । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्वते स्वधा । इति पिंडो
परि प्रत्यवनेजन दत्त्वा । नीवी विस्त्रस्य । सव्येन आचामेत् । ततो ऽपसव्येन । ओं नमस्ते पि
तः रसाय नमस्ते पितः शोपाय नमस्ते पितेजीवाय नमस्तेपितः स्वधायै नमस्ते पितर्वोराय
नमस्ते पितर्भन्यवे नमस्ते पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्दत्तसतस्ते पितर्द्वेष्म इति कृतांजलिः
पठेत् । तत ओं एतत्ते पितर्वासः इति पठित्वा । पिंडोपरि सूत्रं ऊर्णदिशां वा पंचाशद्धर्षोपरि
यजमानहृदयलोमानिवा दत्त्वा । ओं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् एतत्ते वासः स्वधा इत्युत्सु

सूतका तीन तार अथवा ऊनका नाका या बुटे यजमानके छातिका सुपेद बाल पिंडपे देके सकल्पद्वारा त्याग

करद्वै । फिर पिताका निमित्त लेंके मन्त्ररहित पिंडपै गध, पुष्प, धूप, दीप, तांबूल, पूगीफल, दक्षिणा अर्पणकरके पिंडका शेष अन्न पिंडके पास विकारण करद्वै । पश्चात् भोजनपात्रमें (ओंशिवाआप०) इस मन्त्रसे जल, ओं सौमन-
 जैत् । ततः पितरमुद्दिश्य । तदीयापिंडे तुष्णीमेव गंवपुष्पधूपदीपतांबूलपूगीफलदक्षिणादी
 नि दत्वा । पिंडशेषान्न पिंडसमीपे विकिरेत् । ततो भोजनपात्रे । ओं शिवा आपः संतु इतिज
 ल । ओं सौमनस्यमस्त्विति पुष्णं।ओं अक्षतं चारिष्टमस्तु इति यवतिलांश्च दत्वा । ओं अमु
 कगोत्रस्य अस्मत्पितुरसुकशमणः वसरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति ति
 लयुक्तमक्षयोदक दद्यात् । ततः प्राङ्मुखः सव्येन कृतांजलिराशिषो गृहीयात् । ओं अ
 वोरः पिताऽस्तु इति । तत ओं गोत्रं नो वर्द्धतां, दातारो नो भिवर्द्धतां, वेदाः संततिरेव च । श्रद्धा
 च नो माव्यगमद्गृह्देयं च नोऽस्तु । अन्न चनो बहुभवेदतिथीश्च लभेमहि । याचिनारश्च नः
 स्य०)इस्से पुष्प, (ओं अक्षत चारिष्ट०) इसमन्त्रसे यव तिल गेरू और मोटक आदिलेके पष्टिविभक्तियुक्त वाक्यसे पिताको
 असयोदकद्वै । फिर सव्यस पुर्वेको मुत्त करके अन्नही कियाहुवा (ओं अघोर. पितास्तु०) (ओं गोत्र नो वर्द्धता०) इत्यादि

मयो करकं आशीपमाणे । फिर अपसव्य होके पिंडके ऊपर पवित्री सहित त्रिकुश रसके (ओ ऊर्जवहति०) इस मंत्रसे
 दक्षिणाग्रजलयारा दानकरे । पश्चात् अर्घपान सूया करके शक्तिमाफिक रजत दक्षिणा और मोटक तिल जल लेवे और
 संतु माचयाचिण्म कंचन । एताः सत्या आशिपः संतु इति वदेत् । ततोऽपसव्यं कृत्वा । पिंडो
 परि सपवित्रं कुशत्रयमास्तीर्य । स्वधां वाचयिष्ये । ओं स्वधोच्यतामिति पठित्वा । ओं ऊर्जे
 वहंतिरमृतं घृतपयः कीलालंपरिश्रुतं स्वधास्थतर्पयत मे पितरमिति सपवित्र कुशोपरि दक्षि
 णाग्रां जलधारां दद्यात् । ततोऽपात्रमुत्तानीकृत्य । यथाशक्ति रजतदक्षिणां कुशत्रयादीनि
 चादाय । ओं अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत्सांवत्सरैकैकोद्विष्ट
 श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजन चंद्रदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमह
 मुत्सृजे । इति दद्यात् । ततो द्विगुणधुन्न कुशत्रयादीन्यादाय । ओं अमुकगोत्रस्यास्मत्पितुर
 मुकशर्मणः वसुरूपस्य कृतैतत्सांवत्सरिकश्राद्धकर्मणः सांगतासिद्धचर्थं अमुकसंख्याकान्
 अग्ने पिनाका नाम पट्टिभिर्भक्तिवहित लेके ब्राह्मणकौ दक्षिणा दानकौ । फिर ब्राह्मण भोजनका सकल्पलेके पिंडको

उठारें और थालीमें रखके सुगें । पिंडके नीचेकी दर्भा, उलमुक अग्निमें डालदेवै । फिर (ओं अभिरम्यता०) यहै पदके विसर्जनकरे (देवताम्य०) इस मंत्रको तीनबेर पढ़के दीपक निवाबै और हाथ पग धोके सब्यसे तीनबेर आच-

ब्राह्मणान् तृप्तिपर्यतेनान्नेन भोजयिष्ये । इति संकल्प्य । पिंडमुत्थाप्य । स्थाल्यां निधाय । अ
वघ्राणं कृत्वा । पिंडाधस्तृतदर्भं चोल्मुकमशौ निक्षिपेत् । तत ओं अभिरम्यतामिति विसृज्य
देवताभ्यरिति त्रिः पठित्वा । रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौपादौप्रक्षाल्य । सब्येन आचम्य । ओं
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिरिति
पठित्वा । कर्मपूत्तिकामो विष्णुं स्मरेत् । ततः पिंडं गां अजं वायसान् वा खादयेत् । अ
सौ जले वाक्षिपेत् । ततो वैश्वदेव बलिकर्माणी कृत्वा।श्राद्धीय द्रव्याणि ब्राह्मणाय प्रतिपाद्याय

मन करे. (ओं प्रमादात्०) इस मंत्रको पढ़के कर्मपूत्तिके अर्थ विष्णुका स्मरण करे । पश्चात् पिंड गोकों या बकरा,
कागलोंको सुलादेवै । अथवा अग्निमें या, भोतसे नदी आदिके जलमें डालदेवै और वैश्वदेव बलिकर्म करके श्राद्धकी

सामग्री ब्राह्मण को देदेवे । फिर शक्तिमाफक वेद पढेहोये ब्राह्मणोंको जिमोत्रे (अथ नैमित्तिक बलिदान) (ओं सोर भेया०) इस मंत्रसे गोके अर्थ (ओं ऐंद्रवारुण०) इस्से कागलोंको (ओ द्वौश्वानौ०) इरसे श्वानके अर्थ (ओं हतते

थाशक्ति श्रोत्रियब्राह्मणान् भोजयेत् । अथ नैमित्तिक बलिदानमंत्राः । ओं सौरमेथ्यः सर्व
हिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णतु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ? इदमन्नं गोभ्यो
नमः । ओं ऐंद्रवारुणवायव्याः सौम्या वै नैऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णतु भूमावन्नं मया
र्षितम् २ इदमन्नं वायसेभ्योनमः । ओं द्वौ श्वानौश्यामशवलौ वैवस्वतकुलेद्भवौ । ताभ्याम
न्नं प्रयच्छामिस्यातामेतावहिंसकौ २ इदमन्नं श्वभ्यांनमः । ओं हतते अन्नमिदमनुष्याय इति
हंतकारबलिं दद्यात् ४ एवं बलिकर्मकृत्वा । ओं यस्य स्मृत्याच नामोक्यातपो यज्ञ क्रिया

अन्नमिदमनुष्याय०) इस मंत्रसे हंतकार बलि निकाले । इस तरह बलि देके (ओं यस्यस्मृत्या०)

इस श्लोकको पढ़ें फिर अतिथि, पुत्र, नोकर, बाधक, मित्र आदिके सहित सुद यजमान भोजन करें । इसीतरे, माता,

दिष्टु । न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतमिति पठित्वा । अतिथि सुत भृत्य बांधवा
 दिभिः सह भुंजीत । एवमेव मातृ भ्रातृ भितृव्यादि श्राद्धप्रयोगः ॥ मातृश्राद्धे । अमुकगोत्रा
 या अस्मन्मातुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकेकोद्विष्टश्राद्धमहं करिष्ये । इति संकल्पं कुर्यात् ।
 ओं अमुकगोत्रे अस्मन्मातरमुकदेवि इदमासनं ते स्वधा इत्याद्युत्सर्गवाक्यं कर्त्तव्यम् ॥ इ
 ति पंडित श्री चतुर्थीलाल गोडविरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धतिखंडे अनुकल्पोक्तश्राद्धेकोद्विष्ट
 श्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥

भाई, चाचे, आदिका सावत्सरिक श्राद्ध करणा चाहिये । इति प० चतु० विर० सावत्सरिकेकोद्विष्टश्राद्ध प्रयोगः ॥

अथ पंचकमरण विधि लिखतेहै । प्रथम दर्भाका पंचपूतला मनुष्यके आकार करके उनके तांगोंसे वेष्टनकरे । फिर उनके ऊपर यवोंका चून पानी घोला होया लेप देवै और इमशान भूमिमें जाके शुद्ध जगें एक स्थंडिल बाहुरेतका या उच्चारण उनके ऊपर करके पुतला ५ स्थापन करके संकल्पका उच्चारण मडिका बनावै । उसके ऊपर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, और बीचमें पुतला ५ स्थापन करके संकल्पका उच्चारण

॥ अथपंचकशांतिप्रयोगः ॥ तावन्मरणकालकृत्यम् । तत्रदर्भणांपंचप्रतिमामनुष्याकृतयः कृत्वा ऊर्णासूत्रेणावेष्टय । यवपिष्टेनानुलिप्य । शवसमीपेस्थंडिले पूर्वादिदिक्षुमध्येचस्थापयेत् ॥ ततोदेशकालौसंकीर्त्य ० । अपसव्येन । अमुकगोत्रस्यअमुकप्रेतस्यधनिष्ठादिपंचकजनितदुर्मरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थंपंचकविधानंकरिष्यइतिसंकल्प्य । प्रेतवाहायनमः ? प्रेतसखायनमः २ प्रेतपायनमः ३ प्रेतभूमिपायनमः ४ प्रेतहर्त्रेयनमः ५ इतिनाममंत्रेणआवाहनंस्थापयेत् । फिर अपसव्य होके अमुक गोत्र नाम प्रेतकों धनिष्ठा आदि पंचकके भीतर मरणसे होनेवाली दुर्गति और वंशवारिष्ठाके अरिष्ट दूर होनेके अर्थमें पंचकोंकेशांतिकी विधि करताहों ऐसे कहके संकल्पका जल त्याग देवै । फिर (प्रेतवाहायनमः प्रेतसखाय, प्रेतपाय, प्रेतभूमि पाय, प्रेतहर्त्रे ०)

इन पांचनाम मंत्रोंकरके आवाहन स्थापन करे और गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तंबूल, -दक्षिणा, आदिसे पूजा करके प्रेतके ऊपर पांचों पूतला रखदेवे । प्रथम तो शिरके ऊपर १ दूसरा दाहणी कूखके० २ तीसरा, बांधी कुखमें० ३ चौथा नाभिमें० ४ पांचवां दोनों पगोंके ऊपर परखके उनके ऊपर पहले कहे होये नाम मंत्रोंसे घृतकी आहु- नंचकृत्वा। गंधमाल्यादिभिःसंपूज्य। दाहसमये प्रेतस्योपरिन्यसेत् । तत्रप्रथमं शिरसि १ द्विती- यां दक्षिणकुक्षौ २ तृतीयां वामकुक्षौ ३ चतुर्थीनाभौ ४ पंचमोपादयोर्मध्ये ५ तदुपरि ताभ्यो नाममंत्रैर्घृताहुतीर्दत्वा। ताभिः सहविधिनाशवंदहेत्। ततः सूतकांतिशान्तिं कुर्यात्। इति पंचकमर- णविधानम् ॥ ॥ अथशान्तिपद्धतिः ॥ सूतकांतिं तर्प्यगत्वा। तत्रस्नात्वा। अहतवस्त्रेपीरथाय स्वासने उपविश्य आचम्याकुशोपग्रहः । कुशत्रयतिलजलान्यादाय। देशकालौसंकीर्त्य० (अ- लिखतेहै) सूतकके अंतमें ग्याखे या बारवें दिन नदी, तलाव, तीर्थ, आदिपे जाके स्नान करे । शान्ति करणेकी विधि पहरे आसनपे बैठके आचमन, प्राणायाम दुर्भा धारण करे। फिर कुशत्रय तिल जललेके संकल्प उच्चारण करे और अप-

रात्र्यं अमुक गोत्र नाम वाले प्रेतकी पंचकमरण दुर्गति दूर होने के अर्थ तथा हमारे घरमें संपूर्ण बांधवोंके आयु, आरोग्य सुख, श्री प्राप्तिके अर्थ पंचक शांतिकर्म करताहों ऐसे कहके संकल्पका जल छोड़देवै। फिर सव्यसे (ओं सुमुख्यं) अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य पंचकजनित दुर्मरणदोषोपशान्त्यर्थं (सव्यं) मम गृहे संपरिवारस्य आयुरारोग्यसुखश्रीप्राप्त्यर्थं पंचकशांतिकर्मोहं करिष्ये इतिसंकल्प्ये । ओं सुमुख्यं श्रेकंदतश्चेत्यादिस्मरणपूर्वकगणेशनाग्रहान् संपूजयेत् । ततो मंडलोपरि पूर्वं दीक्षणं पश्चिमं उत्तरेषु मध्येच धान्यपुंजोपरि ओं भूरसिभूमिरसीत्यादि पंचकलशान् संस्थाप्य । सर्वेषु सर्वापधिं दूर्वां सप्तमृत्तिकां पंचपल्लवः पूगीफलं पंचरत्नं हिरण्यादीनि निक्षिप्य । वस्त्रेणाविष्टयपूर्वकलशं दुग्धजलेन ० १ दक्षिणकलशं दधिजलेन ० २ पश्चिमकलशं घृतोदकेन ० ३ उत्तरकलशं गोमायोदकेन ० ४ मध्यकलशं गोमूत्रोदकेन च ५ परिपूर्य्य प्रत्येकं तंडुलपूरुणपाश्र्वरुदंतश्च ०) इत्यादि पाठ पढ़के गणेश, सूर्यादि नवग्रहोंकी पूजा करै। अनंतर एक मंडल बनाके उसपर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, और बीचमें चारल, मुंग, उडद, गेहूं, चीणे, आदि अन्नका पांच पुंजकरके (कलशस्थापन विधिसे)

पाप कृत्वा स्थापन करें। फिर सपूर्ण ७ उग्रोंमें जल सोंगण्डि, दूर्वा, पंचपल्लव, सममृत्तिका, पूगीफल, पंचरत्न, सुवर्ण, गौरीरक्त, आदि मालकें एकत्रमें ब्रेष्टन करें और पूरके कलशमें दुग्ध जल. १ दक्षिणकेमें दही जल. २ पश्चिममें, पूरा जल. ३ उत्तरमें गोमय जल ४ बीचके कलशमें गोमूत्रजल ५ भरके बुदा २ चावलसें मरानुवा कांसिका पूर्ण पात्र

त्रे निधायातदुपरि क्रमेण पंचनक्षत्रदेवतानांप्रतिमाःस्वर्णमयीः अग्न्युत्तारणपूर्वकं स्थापयेत्
 अयावाहनं। पुष्याण्यादाय। पूर्वं। ओं व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसिसहस्रधा
 रं देवस्त्वासवितापुनाबुव्वसोः पवित्रेणशतधारेणसुष्वाकामद्युक्तः १ ओं वसुभ्योनमः वसून्
 आवाहयामि स्थापयामि ॥ ॥ दक्षिणे० । ओं व्वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज
 नीस्योव्वरुणस्यऽऽकृतसदम्यसि व्वरुणस्यऽऽकृतसदनमसि व्वरुणऽऽकृतसदनमासीद् २ ओं वरु

रुणस्योके ऊपर स्थापन करें और पात्रके अंदर क्रमकरके पांचदेवोंके सुवर्ण मयीं मूर्ति ५ दुग्धसे धोके स्थापन करें और आवाहन करें। पुण्ड्रशयमें लेके पूर्वे कलशमें (ओं व्वसोः पवित्रमसि०) इस मंत्रमें मनुदेवोंको १ और दक्षिणको

(ओं व्वरुणस्योत्तं०) इससे वरुणको० २ पश्चिममें (ओं उतनोहिर्बुध्न्यः०) इस मंत्रसे अजैक पादको० ३ उत्तरमें (ओं
 शिवोनामासि०) इस मंत्रसे अहिर्बुध्न्यको० ४ बीचके कलशपर (ओं पूषन्तवव्रते०) इस मंत्र करके पूषा देवताका आ-
 गायनमः वरुणं आवाहयामि स्थापयामि ॥ पश्चिमे० । ओं उतनोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपा
 तृथिवीसमुद्रः । विश्वेदेवाऽऽकृतावृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवंतु ३ ओं अजैकपादा
 यनमः अजैकपादं० स्थाप० ॥ उत्तरे० ॥ ओं शिवोनामासिस्वधितिस्तोपितानमस्तेऽअस्तुमामाहि
 ई०सीः । निवर्तयाम्यायुषेनाद्यायप्रजननायरायस्योषायसुवीर्याय ४ ओं अहिर्बुध्न्यायनमः
 अहिर्बुध्न्यं० स्थाप० ॥ मध्ये० । ओं पूषन्तवव्रतेव्वयन्नरिब्येमकदाचन । स्तोतारस्त इहस्म
 सि ५ ओं पूषेनमः पूषणमावाहयामि स्थापयामि । इत्यावाह्य । ओं मनो जूतिर्बुध्तामितिप्र
 तिष्ठाप्य । अक्षतान् विकीर्योप्रत्येकं नाममंत्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत् । ततस्तत्पार्श्वे अक्षतपुंजो
 वाहन स्थापन करे ५ । फिर (ओं मनोजूतिर्बुध्ता०) इससे पूष्य विकिरण करके छुदे २ नाम मंत्रसे गंध, पुष्प, धूप, दीप,
 नैवेद्य, तांबूल, पूगीफल, नारेल, दक्षिणा, ऋतुफल आदि षोडशोपचारों करके पूजा करे । फिर कलशोंके उत्तर भाग-

में एक वेदीपे वृक्षके ऊपर चौदह पुंज (डेरी) चावलेंका करके सुपारी १४ धरे। फिर उनके ऊपर चोदह (ओं यमा-
यनमः१ ओं घर्मराजाय०२) इत्यादि नाम मंत्रों करके यम आदि देवतोका स्थापन करे और उसी जगें ईशानमें (ओं

परिपुगीफलेषुयमादिचतुर्दशदेवताः स्थापयेत् । तद्यथा । ओं यमायनमः यमंआवाहयामि
स्थापयामि १ ओं धर्मराजं० धर्मराजाय०२ ओं मृत्यवे० मृत्युं०३ ओं अंतकाय० अंतकं० ४
ओं वैवस्वताय० वैवस्वतं०५ ओं कालाय० कालं० ६ ओं सर्वभूतक्षयाय० सर्वभूतक्षयं० ७
ओं औदुंबराय० औदुंबरं० ८ ओं दध्नाय० दध्नं० ९ ओं नीलाय० नीलं० १० ओं परमेष्ठि
ने० परमेष्ठिनं० ११ ओं वृकोदराय० वृकोदरं० १२ ओं चित्रायनमः चित्रं० १३ ओं चित्रगु
प्तायनमः चित्रगुप्तं आवाहयामिस्थापयामि१४ तत्रैव ईशान्यां । ओं अवोरेभ्योयवोरेभ्योघोर
घोरतेरेभ्यः । सर्वभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्ते अस्तुल्लक्ष्णेभ्यः १ ओं अवोरायनमः अवोरं० इत्या
वाह्य । ओं मनोज्ञतिरितिप्रतिष्ठाप्य । ओं चतुर्दशयमेभ्योनमः । ओं मृत्युंजयायनमः । इतिषोड
शोरेभ्योय०) इति मंत्रसे मृत्युंजयको

और अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, सर्प देवता, इन्द्रादि दिक्पालोंको स्थापन करै। फिर नाम मंत्र करके खुदि २
 और अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, सर्प देवता, इन्द्रादि दिक्पालोंको स्थापन करै। फिर नाम मंत्र करके खुदि २
 गय, पुष्पादिकोंसे पूजा करके अग्निस्थापन करदेवै। (अग्नि स्थापन करणकी विधिलिखतेहै) होता पचकलशोंसे
 पश्चिम, या, ईशानमें, चोकोण, चोबीस अगुल लवा, एक स्थंडिल (वेदी) बनाके दर्भसे बहारे और दर्भोंको ईशानमें
 शोपचारैः पूजयेत्। ततः तत्रैव अश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्राणि० सर्पान्० इन्द्रादिदिक्पा
 लांश्रावाह्यागंधादिभिः पूजयेत् ॥ अथग्निस्थापनम् ॥ तत्रादौ होताचतुरस्रहस्तमात्रंस्थंडिले
 कृत्वा। कुशैः परिसमुह्य। तान्कुशानैशान्यांपारित्यज्य। गोमयोदकेनोपलिप्यातन्मध्येसुवमूले
 नप्रागग्रप्रादेशमात्रं उत्तरोत्तरक्रमेणत्रिरुहिल्य। उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकाऽपुष्टाभ्यांमृदमुद्धृत्य
 ऐशान्यांक्षिप्त्वा तदैशंजलेनाभुक्ष्य। तत्रतूष्णींकांस्यपात्रस्थमग्निस्थापयेत्। ततःपंचसूक्तजपार्थं
 स्थापन करै। गोमयका लेपा देवै। फिर वेदीके बीचमें सुवके लेरके भागसे दश अगुल लबी उत्तरोत्तर दक्षिणसे लेके
 तीनोंरखा लिसे और अनामिका, अगुठेको मिलके रेखाकी रेत (मटी) उठाके ईशानको गेरै। फिर जलका छिटा देके
 मंत्र रहित कासीके दो पात्रोंसे लाई होई अग्नि स्थापन करदेवै। पश्चात् पच देवोंके सूक्त

जपनेके अर्थ ब्राह्मणोंमें वरणन करके रक्षोघ्न मंत्र आदि ऊपर लिखाहोया जपावै । फिर अग्निके दक्षिण तरफ ब्रह्मा-
 को आसन देके (चरु) सीर पकाने पर्यंत कुशा कटिका विधान वृषोत्सर्गमें लिखे मुजब करके घृतका होम करै (ओं
 पचन्नाह्नणवरणं० तेच पंचकलशेषुपंचसूक्तानिजपेयुः । तत्र प्रथमकलशे । ओं कृणुष्वपाजरि
 त्यादिपंचरक्षोघ्नमंत्राः ॥ १ ॥ द्वितीयकलशे० ओं विभ्राडि त्यनुवाकः ॥ २ ॥ तृतीये० । ओं
 आशुःशिशानो इत्याद्यप्रतिरथं० ॥३॥ चतुर्थे० । ओं नमस्तेरुद्रइत्यादिरुद्राध्यायः ॥ ४ ॥ पं
 चमकलशे ओं ऋचंवाचंपपद्ये इत्यादिअध्यायः ॥ ५ ॥ ततो दक्षिणतोब्रह्मासनादि चरुश्रप
 णांतं वृषोत्सर्गवत् कुशकंडिकाकर्मकृत्वा । अग्निपर्युक्षणान्ते आज्यहोमः । ओं प्रजापतये स्वा
 हा इदंप्रजापतयेनमम । ओं इंद्रायस्वाहा इदमिंद्रायनमम । ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नयेनमम ।
 ओं सोमायस्वाहा इदं सोमायनमम।इत्याधारावाज्यभागौहुत्वा । अक्षतान् गृहीत्वा।बलवर्द्धन
 प्रजापतये०) (ओं इंद्राय०) (ओं अग्नये०) (ओं सोमाय०) इत्यादि आधार, आज्यभाग, सद्भक्त होम करके चदन
 भक्षत पुण्यादिसे बलवर्द्धन

नाम मन्त्रिणी पूजा करे । फिर वरु आदि प्रधान देवोंके अर्थ एक एकके निमित्त, समि घ, पायस, तिल, घृत, आदि
द्रव्यो करके १०८। या. २८। या. ८ आहुति देवे (आहुति देनेका मंत्र लिखतेहैं) (ओं व्वसो पवित्र०) इस
नामानं वद्धि पूजयेत् । ततो वस्वादि प्रधान देवतानां प्रत्येकं समिच्चरितिलाज्यादि द्रव्यैर
ष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टोवाऽहृति छुंहुयात् । ततो यमादि अवोरान्तं प्रत्येकमेकैकाहृति छुंहुयात्
तत्रमन्त्राः । ओं व्वसोः पवित्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वासवितापुनातु
व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुष्वा कामघुक्षः स्वाहा इदं वसुभ्यः १०८। २८। ८। ओं व्वरु
णस्योत्तमनमसि व्वरणस्यस्कंभसर्जनीस्थो व्वरणस्यऽऽक्रतसदन्यसि व्वरणस्यऽऽक्रतसदनमसि
व्वरणस्यऽऽक्रतसदनमासीदस्वाहा इदम्वरणाय १०८। २८। ८। ओं उतनोऽहिर्बुध्न्यः
शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवीसमुद्रः । विश्वेदेवाऽऽक्रता वृधोहुवानास्तुतामन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु
पंयसे वसुदेवताके अर्थ १०८। २८। ८ आहुति. (ओं व्वरणस्योत्त०) इस्से वरणके अर्थ. १०८। २८। ८। (ओं
उतनोहिर्बुध्न्य०) इस्से

आनेवपादके अर्थे १०८ । २८ । ८ । (ओ शिवोनामासि०) इस्से अहिवुध्न्यके अर्थे १०८ । २८ । ८ । (ओ
 पूषतवव्रते०) इस मन्त्र करके पूषा देवताके अर्थे १०८ । २८ । ८ । आहुति देवै । पश्चात् (ओ यमायस्वाहा०) इत्यादि
 स्वाहा इदमैकपादाय १०८ । २८ । ८ । उेशिवोनामासि स्वधितिस्तेपितानमस्तेऽ
 अस्तुमामाहि ठं सीः । निवर्त्तयाम्यासुषे नाधाय प्रजननाय रायस्पोपाय सुप्रयजास्त्वा
 य सुवीर्यायस्वाहा । इदमहिवुध्न्याय । १०८ । २८ । ८ । ओपूषन्तवव्रते व्वयन्नरिष्येमक
 दाचन । स्तोतारस्त इहस्मासि स्वाहा । इदं पूष्णे १०८ । २८ । ८ । इतिहुत्वा । ओयमायस्वाहा
 इदंयमाय १ ओधर्मराजाय० इदं० २ ओमृत्यवे० इदं० ३ ओअंतकाय० इद० ४ ओवैवस्वताय० इदं
 ५ ओ कालाय० इदं० ६ ओ सर्वभूतक्षायाय० इदं० ७ ओ औडुंबराय० इदं० ८ ओ दन्नाय० इदं० ९ ओ
 नीलाय० इदं० १० ओ परमेष्ठिने० इदं० ११ ओ वृकोदराय० इदं० १२ ओ चित्राय० इदं० १३ ओ चि
 त्रगुप्तायस्वाहा इदं चित्रागुप्ताय १४ इतिचतुर्दशमाहुतीदद्यात् । ततोऽग्नेभ्यश्चरुहोमंकृत्वा । ओ
 १४ आहुति ओर (ओ सूर्यायस्वाहा) इत्यादि ९ ग्रहोंके अर्थे होम करके

(ओं अघोरेभ्यो०) इस मंत्रकी १०८ तिलोंकी आहुति देवै । फिर, प्रधान देवोंकी उत्तर पूजन करके पायस (खीर)
 से (ओं अघोरेभ्योऽस्विष्टकृते०) इस मंत्रसें स्विष्टकृत् होम करै । पश्च त्, घृत करके (ओं भूःस्वाहा०) (ओं भुवःस्वाहा०
 अघोरेभ्योऽथघोरेभ्य० इत्यघोरमंत्रेण अष्टोत्तरशततिलहोमः कार्यः । तत वस्वादि प्रधानदे-
 वतानां उत्तरपूजनं कृत्वा । चरुणा ओं अघ्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमघ्नये स्वाहा इदंवायवे० २
 स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् । तत आज्येन ओं भूः स्वाहा इदमघ्नये ? ओं भुवःस्वाहा इदंवायवे० २
 ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ३ ओं त्वन्नोऽअग्ने० स्मत् स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां० ४ ओं सत्वन्नो
 ऽअग्ने० एधि स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां० ५ ओं अयाश्चान्ने० भेषज ठं० स्वाहा इदमघ्नये० ६
 ओं येतेशतं० स्वर्काः स्वाहा इदंवरुणादिभ्यः० ७ ओं उदुत्तमं० अदितये स्वाहा इदं वरुणाय० ८
 ओं प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये ९ इति नवाहुतयो हुत्वा । स्थंडिलपरित इंद्रादि दिग्पाले
 (ओं स्व स्वाहा०) यहै व्याहृति होम, और (ओं त्वन्नोऽअग्ने०) (ओं सत्वन्नोऽअग्ने०) (ओं अयाश्चान्ने०) (ओं
 येतेशत०) (ओं उदुत्तम०) इत्यादि वारुणहोम, और (ओं प्रजापतये०) यहै प्रजापति होम करै । फिर इन्द्रादिक

दिग्पालकों अर्थ. माप (उडद) चावल पकाके अग्निके बाहरकर पूर्वादि दिशोंमें १० बलिदेवै । फिर होता यजमान सहित घृतसें पूगीफलादिक सहित सुवा भरके (ओं स्वाहाप्राणम्य० १ ओं दिवे स्वाहा० २) इन २ मंत्रों करके पूर्णाहुति होम करो। फिर सख प्रारान (अर्थात् प्रोक्षणीमें सुवेसें गेरा हुवा घृत, यजमानकों चटाके) आचमन करा

भ्यो मापभक्त बलीन् दद्यात् । अथपूर्णाहुतिः । ओं स्वाहाप्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाप्रये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवेस्वाहा १ दिवेस्वाहा सूर्याय स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा चंद्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा नाम्यै स्वाहा पूताय स्वाहा इति हुत्वा। संखप्रारानं० आचमनं च कृत्वा । पवित्राभ्यां जलमाणीय । तेन ओं सुमित्रियानऽआ पऽऔषधयः संत्वितिमंत्रेण शिरः संमृज्य । ओं दुर्धित्रियास्तस्मै संतु यो स्मान् द्वेष्टियंचवयं द्वि ष्म इतिप्रणितान्युब्जीकरणां। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । बहिरैशान्यां क्षेपणमाब्रह्मणे सदाक्षिणपूर्णे देवै और पवित्रीसें प्रणीताका जललेके (ओंसुमित्रियान०) इसमंत्रसें यजमानके शिरपरछिटादेवै (ओंदुर्धित्रिया०) इसकोपदके प्रणीतापात्र ऊचाकरो । पवित्री अग्निमंडालदेवै (बहिं) अग्निके बाहरकरबिछाई होई कुरा इमान-

कोणमें गौ और ब्रह्माके अर्घ्य पूर्ण पात्रदानकरै (ब्रह्मग्रंथिसोलहदेवै) छ ब्राह्मणभोजन कारणेकासंकल्पलव । १५१
होता. पंचकलशोंका जललेके यजमानके (ओंशन्नोमित्र० ओं अहानिशं० ओंशन्न इद्रापूषणा० ओंशन्नोदेवी० ओंदेव-

पात्रदानग्रंथिसोविमोकः। ततो षट्ब्राह्मणभोजनसंकल्पः। पंचकलशोदकेनयजमानस्यसप
रिवारस्याभिषेकः। तत्रमंत्राः। ओं शन्नोमित्रः० ओं अहानिशं० ओं शन्नइंद्रापूषणा० ओं श
न्नोदेवी० ओं देवस्यत्वा० ओं द्यौः शांतिः० । इति अभिषिच्य । पंचवटदानं । ओं अधासु
क० प्रेतस्य पंचक मरणोत्पन्न दुर्गति निवारणार्थं तज्जनितवंशारिष्टविनाशार्थं च इमानि पंच
घटानि स्वर्णप्रतिमावस्त्रफलयज्ञोपवीत धान्यसहितानि वस्वादि देवतानि तद्देवताः प्रीतये
नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सुजे इति संकल्प्य ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्। तत आचा
र्यादिभ्यः पयस्विनीगां १ महिषीं २ सप्त धान्यानि ३ सहिरण्यंतिलान्नं ४ सहिरण्यंधृतपात्रं च
स्यत्वा० ओंशौः शांति०) इन मंत्रोंसे अभिषेककरै और यजमान पंचघटोंकेदानका संकल्पलेके ब्राह्मणोंकादेदेवै और
आचार्य आदि सबहिकों गौः १ महिषी १ सप्तधान्य. १ सुवर्ण. १ तिल. १ घृत पात्र १

देवैः । अन्यत्रात्मणोऽंको भूयसी दक्षिणादेकं देवता अग्निका विसर्जनकरे और हाथमें जललेकं (इसपंचकशांति कर्मकरे अमुक प्रेतको पंचक मरण दुर्गतिनिवृत्तहोवो और हमारे सकल अरिष्टदूरहोवो) ऐसैकहकें पृथिवी परत्यागदेवै । फिर (ओंयस्यरमृत्या०) इसको पढके कर्मपूतिके अर्थ विष्णुका स्मरणकरे और सामग्री गहणोंकोदेके वृत्तमेंमुखदे-
 ५ दधात् । अन्येभ्योभूयसीदक्षिणादानं । ततो देवताग्निचविसृज्य । हस्तेजलमादाय । अनेन पंचकशांति कृतेन कर्मणा अमुकगोत्रस्य० प्रेतस्य पंचकजनितदुर्मरण दोषनिवृत्तिः ममगृहस कलदुरितोपशांतिरस्तु इति पठित्वा उत्सृजेत् । तत ओं यस्यसृत्या० इति पठित्वा । कर्मपूत्तिका मो विष्णुंस्मरेत् । शांत्युपकरणानि ब्राह्मणेभ्यो दत्वा । घृतेसुखावलोकनंकृत्वा स्नायात् । इति पंच कशांति प्रयोगः समाप्तः । इति श्रीवीकानेर राज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगर निवासिना पंडितगौ डश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धति खंडेप्रेतकल्पे अत्येष्टिकर्मपद्धतिः समाप्ता । सके स्नानकरे ॥ इति पंचकशांतिप्रकारः ॥ इति श्रीवीकानेर राज्यान्तर्गत श्रीरत्नगढनगरनिवासिना गौड पंडित वैधवर श्री- चतुर्थीलालशर्मणा विरचिते श्राद्धप्रकाशे पद्धति खंडे प्रेत कल्पे अत्येष्टिके कर्मपद्धति भाषाटीका सहितासमाप्ता ।

अथ अन्त्येष्टि श्राद्धप्रकाशस्थविषयाणां अनुक्रमणिका ।

विषयाः	पृष्ठः	विषयाः	पृष्ठः	विषयाः	पृष्ठः
आसन्नमरणेकृत्यं	१	विश्रामे भूतनाम्ना	६	आश्रिदानमन्त्राः	८
विष्णुपूजनपूर्वकप्रायश्चित्तम्	१	मृतद्विजशूद्रानोनयेयुर्नस्पृशेयुश्च	६	अजलिदानप्रकारः	९
दशदानानि	२	द्विजानां श्रिधृतादिशूद्रादिदानाय	६	अजलिदानऋजुकुशाएवर्नद्विगुणाः	१०
वैतरणीधेनुदानविधिः	२	ननिषिद्धं	६	इतिहासः	११
महाष्टौदानानि	३	स्वगृहेमृतेविप्रादीनांनगरद्वार	६	ज्ञातिनियमाः	१२
प्राणोत्क्रमणसमयकृत्य	४	विचारः	७	क्षीरोदकदानं	१२
प्राणोत्क्रमणानंतरकर्म	४	चितास्थाने वायुनाम्नापिंडः	७	प्रथमदिनमारम्यदशाहंतंकर्म	१२
पट्टपिंडाः तत्प्रयोगश्च	५	चितायोग्यभूमिशोधनप्रकारः	७	अस्थिसंचयनकालाः	१२
मृत्युम्यानशेवनाम्ना पिंडदानं	५	ऋग्यादाऽश्रिस्थापनम्	८	अस्थिसंचयनेनिर्नापद्धतिधिवाराः	१३
द्वारदेशे पांथनिमित्तकं	६	आज्यहोमः	८	अस्थिसंचयनिमित्तकैकोद्दिष्ट	१४
चत्वरं क्षेत्रनिमित्तकं	६	शवहस्तेसाधकनाम्नापिंडदानं	८	इदमेकोद्दिष्टमत्र संकार्य	

विषयाः	पृष्ठ	विषयाः	पृष्ठ	विषयाः	पृष्ठ
स्मशानवासिदेवानां वलिदानं	१६	धेनुदानम्	३३	ऊनमासिकसान्नोदकुंभदानम्	७५
अस्त्रिसंनयकरणप्रकारः	१७	एकादशाहश्राद्धम्	३५	वृद्धिप्राप्तौ एकस्मिन्नेव दिने पंचद	
चिताभ्यानेपिंडाद्ययःकुंभाश्च	१७	आद्यादिपिंडशश्राद्धपद्धतिः	३५	शसान्नोदकुंभदान प्रकारः	७६
गंगायामस्त्रिक्षेपणप्रकारः	१८	शय्यादानम्	४५	ऊनमासिकादिश्राद्धेवर्ज्यकालाः	७६
दशगात्रश्राद्धप्रयोगः	१९	पटदानम्	४७	ऊनमासिकादिपंचदशश्राद्धनिमि	
द्वितीयादिदिनेषु विशेषता	२१	पष्टुत्तरशतत्रयपिंडदानम्	४७	चैकोदिष्टपद्धतिः	७७
आशौचोत्पद्यदिनरूपं	२३	पष्टुत्तरशतत्रयांजलिदानम्	५०	सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धपद्धतिः	८६
एकादशाहदिनकृत्यं	२४	सपिंडनश्राद्धपद्धतिः	५०	पंचकमरणविधानम्	९६
वृषोत्सर्गपद्धतिः	२४	अर्घ्यपात्रमेलनप्रकारः	५७	पंचकशौंतिपद्धतिः	९६
कुराकंडिका	२४	पिंडमेलनप्रकारः	६६		
होमः	२५	मातृपिंडमेलने विशेषः	६७		
चृपांकनप्रकारः	३१	गोदानपद्धतिः	७२		

ग्रंथ समाप्तिः

नित्यकर्म प्रयोगमाला तैयारहै किं० ६ आना

निवेदन.

महाशय पाठकवृंद इस पुस्तकमें ६२ विषय नीचे लिखे मुजबहै सो आपको लेनेसे नित्यनैमादिक करनेमें अनेक पुस्तक सग्रह न करके यह एकही उपयोगमे आवेगी. आप लोगोंके सुगतार्थही पंडितजी श्रीचतुर्थीलालजीने बनाई है. और इनमहाशयने कुछ लाभकेवास्ते ऐसा ऊबोग न कियाहै इनका यही मनोर्थ है कि ब्रह्मकुलमें धर्मकी वृद्धि होवे. मंगलाचरणम्, ब्राह्म्यमुहूर्तकथनम्, अत्रस्वापेप्रायश्चित्तं, प्रातःस्मरणम्, धर्मचिंतनम्, पुण्यजनस्मरणम्, प्रातदर्शनार्हाःपदार्थाः, विष्णुत्रोत्सर्गविधिः, आचमनम्, दन्तधावनविधिः, कातीयस्नानप्रयोगः, तीर्थप्रार्थना, स्नानांगतर्पणम्, धौतवस्त्रधारणम्, भस्मधारणंच, संध्याप्रयोगः, ब्रह्मयज्ञः, विभ्राद्सूक्तम्, पुरुषसूक्तम्, शिवसंकल्पाऽध्यायः, मण्डलब्राह्मणसूक्तम्, कातीपतर्पणप्रयोगः, पंचदेवपूजाप्रयोगः, वैश्वदेवप्रयोगः, वैश्वदेवमण्डलम्, नित्यश्राद्धम्, भोजनविधिः, शयनप्रकारः, दारोपगमनम्, एषामकरणेदोषः, पार्थिवपूजनम्, पञ्चायतनआरतिनिरांज. महापुरुषविद्यास्तोत्रम्, रुद्राऽभिषेकविधिः, रुद्रपंचमोऽध्याय, गायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः, ३६ बाकीके २६ विषय स्थाना भावसे लिखे गये नहीं.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-पंडित श्रीधर शिवलाल "ज्ञानसागर" छापखाना-मुंबई.

इति अन्त्येष्टि श्राद्ध प्रकाशः

भाषाटीका सहितः